हिंदी दैनिक

कलम की पहल

PRGI NO. UAHIN/25/A1323

वर्ष : 02 अंक : 153 पृष्ठ : 08 मूल्य : 1 रूपए नैनीताल, शनिवार, 21 नवंबर, 2026

E-mail: kalamkipahaluk@gmail.com Website: kalamkipahal.com

इस्तीफा देने के बाद पद से हटाना असंवैधानिक: जस्टिस वर्मा

नई दिल्ली। न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा ने कहा है कि उच्च न्यायालय के न्यायाधीश पद से इस्तीफा देने के बाद उन्हें पद से हटाने की प्रक्रिया जारी नहीं रखी जा सकती। उनका तर्क है कि इस्तीफा देने के साथ ही वह इस पद पर नहीं रहे और अब उन्हें हटाने की कोई भी कोशिश संवैधानिक आधार से परे होगी।



लोकसभा के महासचिव उत्पल कुमार सिंह को 10 सितंबर को लिखे पत्र में वर्मा ने अपने आधिकारिक आवास से जले हुए नोटों की गड्डियां मिलने से जुड़े आरोपों में खुद को निर्दोष बताया। उन्होंने कहा कि 9 अप्रैल को दिया गया उनका इस्तीफा किसी गलत काम या उनके खिलाफ लगाए गए आरोपों की स्वीकारोक्ति नहीं है। वर्मा ने यह पत्र लोकसभा सचिवालय की ओर से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला द्वारा गठित जांच समिति के निष्कर्षों की जानकारी देने के जवाब में लिखा है। उन्होंने जांच रिपोर्ट पर टिप्पणी करने और आगे की किसी भी कार्यवाही में हिस्सा लेने से साफ इंकार किया।

वर्मा ने अनुरोध किया कि उनका पत्र और उसके साथ संलग्न दस्तावेज संसद के दोनों सदनों के सदस्यों के सामने रखे जाएं और मामले को बंद किया जाए। संविधान के अनुच्छेद 217(1)(ए) और उच्च न्यायालय की 1978 की संविधान पीठ के एक फैसले का हवाला देकर उन्होंने तर्क दिया कि किसी न्यायाधीश का इस्तीफा अपने आप प्रभावी हो जाता है, जिसके लिए राष्ट्रपति या किसी अन्य प्राधिकारी की मंजूरी जरूरी नहीं होती। उनका कहना है कि न्यायाधीशों को पद से हटाने से जुड़े संवैधानिक प्रावधान केवल उन न्यायाधीशों पर लागू होते हैं, जो अभी पद पर कार्यरत हैं।

तीन सदस्यीय जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट में वर्मा के खिलाफ लगाए गए तीनों आरोपों को सही पाया था। यह रिपोर्ट 12 अगस्त को संसद में पेश की गई थी। वर्मा पर सरकारी आवास पर मिली नकदी का स्रोत और मालिक न बता पाने, साक्ष्यों को सुरक्षित रखने में नाकामी और जांच के दौरान टालमटोल भरे जवाब देने के आरोप थे। यह विवाद 14 मार्च, 2025 को उनके आधिकारिक आवास पर आग लगने के बाद जले हुए नोटों की गड्डियां मिलने से शुरू हुआ था। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट की एक आंतरिक समिति ने कदाचार का निष्कर्ष निकाला था, जिसके बाद तत्कालीन प्रधान न्यायाधीश ने उन्हें पद से हटाने की सिफारिश की थी। कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि भले ही वर्मा का इस्तीफा अभी औपचारिक रूप से अधिसूचित नहीं किया गया है, वे न्यायाधीश के पद पर नहीं रहे हैं और संसद अब उन्हें पद से हटाने की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ा सकती।

सुप्रीम कोर्ट का अहम फैसला

साइबर धोखाधड़ी में आरोपी तय नहीं कर सकता एफआईआर का स्थान

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने अहम फैसला सुनाकर स्पष्ट किया कि साइबर धोखाधड़ी जैसे संगठित अपराधों के मामलों में कोई भी आरोपी यह तय नहीं कर सकता कि पीड़ित उसके खिलाफ किस स्थान पर प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज कराएं। शीर्ष अदालत ने वर्चुअल क्लाउड स्पेस की बिक्री से जुड़े कथित निवेश धोखाधड़ी मामले में आरोपी भूमि पटेल द्वारा विभिन्न राज्यों में दर्ज प्राथमिकियों को एक साथ जोड़ने की मांग वाली याचिका को खारिज किया। प्रधान न्यायाधीश सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ ने गुजरात के गांधीनगर और हरियाणा के फरीदाबाद में दर्ज आपराधिक मामलों को एक साथ नत्थी करने से इंकार किया। सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने तर्क दिया कि जांच में समानताएं होने को आरोपी को लाभ पहुंचाने का आधार नहीं बनाया जा सकता। न्यायमूर्ति बागची ने सुनवाई के दौरान कहा कि कोई आरोपी विभिन्न राज्यों की पुलिस को उनके अधिकार क्षेत्र में आने वाले कथित अपराधों की जांच करने से नहीं रोक सकता। शीर्ष अदालत ने सख्त लहजे में कहा कि संगठित साइबर अपराधों से निपटने के मामलों में कानून को यथासंभव सख्ती से लागू होना चाहिए। पीठ ने आरोपी को किसी भी तरह की रियायत देने के पक्ष में न होने की बात स्पष्ट कर कहा, कोई रियायत नहीं। याचिकाकर्ता भूमि उत्पलभाई पटेल ने आत्मसमर्पण कर दिया था और वह पांच महीने से अधिक समय से अहमदाबाद केंद्रीय जेल में न्यायिक हिरासत में है।

जीटीए-6 के जरिए बीजेपी ने दिखाया देश का विकास, यूपीए सरकार पर साधा निशाना

पीएम मोदी ने पोस्ट कर लिखा- भारत अब एक बिल्कुल नया खेल खेल रहा

नई दिल्ली। बीजेपी ने वीडियो गेम 'ग्रैंड थेफ्ट ऑटो 6' (जीटीए 6) के लॉन्च की लोकप्रियता का फायदा उठाते हुए इसकी तस्वीरों और प्रतीकों का इस्तेमाल अपनी सरकार के कार्यकाल में हुए विकास कार्यों को दिखाने और कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार पर निशाना साधने के लिए किया है। पीएम मोदी ने एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा- भारत अब एक बिल्कुल नया खेल खेल रहा है। इसके साथ ही उन्होंने 10 चित्र साझा किए, जिनका शीर्षक था- 'जीटीए 5 और 6 के बीच भारत ने इस तरह प्रगति की। पीएम मोदी ने इन चित्रों के जरिए वीडियो गेम के दोनों संस्करणों के बीच तुलना करते हुए भारत में विकास के कई पैमानों में आए बदलावों का उल्लेख किया। जीटीए एक लोकप्रिय वीडियो गेम शृंखला है। इसके पांचवें और छठे संस्करण को क्रमशः 'जीटीए 5' और 'जीटीए 6' कहा जाता है। बीजपी की राष्ट्रीय महासचिव स्मृति ईरानी ने भी पीएम मोदी की पोस्ट साझा



करते हुए लिखा, ''जब पूरी दुनिया जीटीए 6 का इंतजार कर रही थी, तब 'टीम इंडिया' ने बड़ी छलांग लगाई। उसने हर बड़े सपने को हकीकत में बदलकर लक्ष्य हासिल किया। जीटीएः संप्रग का दौर!' शीर्षक से एक वीडियो पोस्ट किया गया। इसमें 'यूपीए का घोटाला युग' और '2004-14' जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया गया। वीडियो के कैप्शन में लिखा था, ''खेल की दुनिया वही, लेकिन लूट अलग। 2004 से 2014 के बीच घोटाले कोई गेम मिशन नहीं, बल्कि घोषणापत्र थे।'' पोस्ट के अंत में लिखा गया, ''बड़े पैमाने पर घोटालों के लिए एम रेटिंग।'' बीजेपी की गोवा इकाई ने भी जीटीए की थीम पर एक वीडियो साझा किया।

इसके कैप्शन में लिखा, ''जहां जीटीए 6 आभासी रोमांच का वादा करता है, वहीं गोवा में राजनीतिक विपक्ष की अपनी अलग ही पैसे वाली कहानी नजर आती है। बीजेपी के राज्यसभा सदस्य विनोद तावड़े ने एक्स पर लिखा कि जीटीए 6 ने कथित तौर पर सिर्फ 'प्री-ऑर्डर' से 1.5 अरब डॉलर से ज्यादा की कमाई की है।

यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ की मां सावित्री देवी का निधन, पौड़ी के पैतृक गांव पंचुर में ली अंतिम सांस

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मां सावित्री देवी का 91 साल की उम्र में निधन हो गया है. जानकारी के मुताबिक, उन्होंने उत्तराखंड के पौड़ी स्थित पैतृक गांव पंचुर स्थित आवास पर अंतिम सांस ली.उनके निधन की जानकारी पौड़ी के एसएसपी सर्वेश कुमार के हवाले से सामने आई है. रिपोर्ट्स के मुताबिक, सीएम योगी अपनी मां के अंतिम दर्शन के लिए पौड़ी पहुंच सकते हैं. योगी आदित्यनाथ को जिस समय उनकी मां के निधन की सूचना दी गई, वह गोरखपुर में एक कार्यक्रम में मौजूद थे. इस कार्यक्रम में 50 हजार छात्रों को टेबलेट वितरण का कार्यक्रम चल रहा था. मां के



निधन की जानकारी मिलने के बाद भी उन्होंने अपना कार्यक्रम जारी रखा. पौड़ी एसएसपी के मुताबिक, सीएम योगी की मां बीमार थीं. डॉक्टर को भी उनके घर बुलाया गया था. उनका निधन गांव में ही हुआ है. सावित्री देवी के निधन की पुष्टि पौड़ी के जिला सूचना अधिकारी योगेश पोखरियाल ने की है. जानकारी के मुताबिक, सीएम योगी की मां सावित्री देवी लंबे समय से बीमार चल रही थीं.वह पौड़ी जिले के पंचुर गांव में रहती थीं. उनका अंतिम संस्कार शनिवार को किया जा सकता है. हालांकि इसे लेकर कोई आधिकारिक जानकारी अभी सामने नहीं आई है.सीएम योगी कई मौकों पर अपनी मां से मुलाकात कर चुके हैं. दो साल पहले जब वह एम्स ऋषिकेष में भर्ती थीं तब भी सीएम योगी ने वउनसे मिलकर हालचाल जाना था.

बता दें कि सीएम योगी के पिता आनंद सिंह बिष्ट का निधन 20 अप्रैल 2020 को 89 साल की उम्र में मल्टीपल ऑर्गन फेलियर के दिल्ली के एम्स (AIIMS) अस्पताल में हुआ था.उस समय कोरोना लॉकडाउन के प्रतिबंधों के चलते वह पिता के अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो पाए थे.

बता दें कि सीएम योगी सात भाई-बहन हैं. वह पांचवें नंबर के हैं. उनका पूरा परिवार पौड़ी गढ़वाल जिले के पंचुर गांव में ही रहता है.

राजस्थान पंचायत समिति चुनाव में कांग्रेस का दबदबा; 37 में से 30 जिलों में फतेह

जयपुर। राजस्थान के पंचायतीराज चुनाव में पंचायत समिति के नतीजों में कांग्रेस ने शानदार प्रदर्शन करते हुए भाजपा को पीछे छोड़ दिया है। प्रदेश की 37 जिला इकाइयों में पंचायत समिति सदस्यों के कुल 7543 निर्वाचन क्षेत्रों के आंकड़ों में कांग्रेस सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। कांग्रेस ने 3558 सीटों पर जीत दर्ज की है, जबकि भाजपा 2122 सीटों के साथ दूसरे स्थान पर है। दोनों प्रमुख दलों के बीच 1436 सीटों का अंतर है। वहीं, निर्दलीय उम्मीदवारों ने भी 612 सीटें जीतकर अपनी मजबूत मौजूदगी दर्ज कराई है। जिलेवार आंकड़ों पर नजर डालें तो कांग्रेस ने 37 में



से 30 जिलों में सबसे ज्यादा सीटें हासिल की हैं। भाजपा चार जिलों में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। वहीं, बांसवाड़ा, डूंगरपुर और सलूम्बर जैसे आदिवासी बहुल इलाकों में भारतीय आदिवासी पार्टी (BAP) ने भी अपनी मौजूदगी दर्ज कराई है। डूंगरपुर में BAP सबसे ज्यादा सीटें जीतने वाली पार्टी रही है। डीग में निर्दलीय उम्मीदवारों और नागौर में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (RLP) ने सबसे ज्यादा सीटें हासिल की हैं। राजधानी जयपुर में कांग्रेस ने भाजपा के मुकाबले बड़ी बढ़त बनाई है। जिले के 386 वार्डों में से कांग्रेस ने 216 सीटों पर जीत दर्ज की है, जबकि भाजपा को 87 सीटें मिली हैं। निर्दलीय उम्मीदवारों ने 20 और RLP ने 60 सीटों पर जीत हासिल की है। जयपुर में कांग्रेस और भाजपा के बीच 129 सीटों का अंतर रहा। जोधपुर में भी कांग्रेस ने भाजपा को पीछे छोड़ दिया। यहां 351 सीटों में से कांग्रेस को 195, भाजपा को 81 और RLP को 62 सीटें मिली हैं। सीकर में कांग्रेस ने 304 में से 178 सीटें जीतकर अपना दबदबा कायम किया। भाजपा को यहां 87 सीटें मिलीं। झुंझुनूं में कांग्रेस ने 130 और भाजपा ने 73 सीटों पर जीत दर्ज की। चूरू में मुकाबला काफी करीबी रहा। यहां भाजपा को 84 और कांग्रेस को 83 सीटें मिलीं।

सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में केसीपी से जुड़ा एक उग्रवादी ढेर, कई गिरफ्तार

मणिपुर की जातीय हिंसा में अब तक कम से कम 306 की जा चुकी है जान

इंफाल। मणिपुर के इंफाल वेस्ट जिले में शुक्रवार सुबह सुरक्षा बलों ने एनकाउंटर में एक उग्रवादी को ढेर कर दिया। अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षा बल पटसोई पुलिस स्टेशन इलाके के अंतर्गत युरेम्बाम में तलाशी अभियान चला रहे थे, तभी गोलीबारी शुरू हो गई। इसके बाद जवाबी कार्रवाई में एक उग्रवादी मारा गया। एक अधिकारी ने बताया कि फायरिंग में प्रतिबंधित संगठन कांगलेइपाक कम्युनिस्ट पार्टी के गुट से जुड़ा एक उग्रवादी मारा गया। एक अन्य अधिकारी ने बताया कि सुरक्षा



बलों ने प्रतिबंधित संगठन के कई उग्रवादियों को अरेस्ट भी किया है। ऐसे तत्वों के खिलाफ लंबे समय से कार्रवाई की जा रही है। इससे पहले हाल में दिल्ली में प्रतिबंधित पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का वांटेड उग्रवादी पकड़ा गया था। बाद में उसे मणिपुर पुलिस को सौंप दिया गया था। बता दें मणिपुर के संवेदनशील क्षेत्रों में मई, 2023 में घाटी में रहने वाले मैती और पहाड़ी इलाकों में रहने वाले कुकी समुदायों के बीच जातीय संघर्ष शुरू होने के बाद से सर्च ऑपरेशन चलाए जा रहे हैं। मणिपुर की इस जातीय हिंसा में अब तक कम से कम 306 लोगों की जान जा चुकी है, जबकि 49 लोग अब भी लापता हैं। हजारों लोग बेघर हो गए हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक नॉर्थ-ईस्ट के मणिपुर में रहने वाले मैतेई जोकि गैर-जनजातीय बहुसंख्यक समुदाय है और मुख्य रूप से इंफाल घाटी में रहता है, के साथ कुकी जोकि अनुसूचित जनजाति समुदाय और प्रमुख रूप से पहाड़ी क्षेत्रों में बसा है, के बीच जमीन पर अधिकार, रिजर्वेशन और पहचान से जुड़ा जातीय संघर्ष है। यह मई 2023 में बड़े पैमाने पर हिंसा में बदल गया था। मैतेई समुदाय के लोग लंबे वक्त से खुद को अनुसूचित जनजाति की सूची में शामिल करने की मांग कर रहे हैं, लेकिन कुकी समुदाय के लोग इसका विरोध करते हैं, क्योंकि उन्हें डर है कि इससे सरकारी नौकरियों, रिजर्वेशन और संसाधनों में उसका भाग प्रभावित हो सकता है।

चंडीगढ़ नगर निगम चुनाव की तारीखों का ऐलान, 26 नवंबर से नामांकन, 23 दिसंबर को होगा मतदान

चंडीगढ़ । चंडीगढ़ नगर निगम चुनाव के लिए तारीखों का ऐलान हो चुका है. चुनाव आयोग के मुताबिक 26 नवंबर से 3 दिसंबर तक नामांकन होंगे. 23 दिसंबर को नगर निगम चुनाव के लिए मतदान होगा. 26 दिसंबर को मतगणना होगी. राज्य चुनाव आयुक्त विजय देव ने कहा कि 'चंडीगढ़ नगर निगम के पिछले चुनाव 2021 में हुए थे. हम आगामी चुनाव की तैयारी लंबे समय से कर रहे हैं. राज्य चुनाव आयोग अब चुनाव के लिए पूरी तरह तैयार है. चंडीगढ़ में आचार



संहिता लागू हो गई है.'

चंडीगढ़ नगर निगम चुनाव का शेड्यूल, 23 दिसंबर को वोटिंगः राज्य चुनाव आयुक्त डॉक्टर विजय देव ने चुनाव कार्यक्रम का ऐलान किया. चुनाव कार्यक्रम घोषित होते ही चंडीगढ़ में आदर्श आचार संहिता लागू हो गई है.

चंडीगढ़ नगर निगम चुनाव का पूरा शेड्यूलः

26 नवंबर से शुरू होंगे नामांकन

3 दिसंबर नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख

4 दिसंबर को होगी नामांकन पत्रों की जांच

7 दिसंबर तक वापस ले सकेंगे नामांकन

23 दिसंबर को होगा मतदान

26 दिसंबर को होगी मतगणना

31 दिसंबर तक पूरी होगी चुनाव प्रक्रिया

बांग्लादेश में मंत्री के घर में लगा दी आग, शेख हसीना की अवामी लीग के लगाए 'लॉकडाउन' से हाहाकार

ढांका। पिछले कुछ सालों से भारत में रह रहीं बांग्लादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की वतन वापसी से पहले पड़ोसी देश में हाहाकार मचा हुआ है। प्रतिबंधित हसीना की पार्टी अवामी लीग ने देश में बंद बुलाते हुए 'लॉकडाउन' लगा दिया, जिसकी वजह से कई शहरों में जमकर हिंसा, आगजनी की घटनाएं सामने आईं। बांग्लादेश के मंत्री हुमायूं कबीर के मकान को भी आग लगा दी गई। इससे पड़ोसी देश में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर हाहाकार मच गया है। बांग्लादेश के सिलहट के दरियापारा इलाके में विदेश राज्य मंत्री-1 हुमायूं कबीर के घर के मुख्य द्वार पर तड़के सुबह आग लगाई गई। हालांकि, राहतभरी बात



यह रही कि इस घटना में कोई भी घायल नहीं हुआ। पुलिस अधिकारियों ने साफ किया कि गेट पर कोई पेट्रोल बम से हमला नहीं किया गया, बल्कि बदमाशों ने पॉलीथीन जलाकर आग लगाने की कोशिश की। मंत्री के आवास पर जहां आग लगाई गई थी, वहां सुबह गेट के लोहे पर जलने के निशान दिखाई दिए। जमीन पर राख और पॉलीथीन जली हुई पाई गई। इस घटना के बारे में जानकारी देते हुए, सिलहट मेट्रोपॉलिटन पुलिस के डिप्टी कमिश्नर (ट्रब्लस्क्क) अफजल हुसैन ने बताया, ''किसी ने सुबह पॉलीथीन का इस्तेमाल करके मेन गेट में आग लगाने की कोशिश की थी।

पाकिस्तान से बातचीत तभी संभव जब वह आतंकवाद को बढ़ावा देना बंद करेगा

शिकागो में राहुल गांधी ने भारत-पाक के बीच द्विपक्षीय बातचीत को लेकर रखा अपना रुख

शिकागो । लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय बातचीत को लेकर अपना रुख स्पष्ट करते हुए कहा है कि इस्लामाबाद के साथ संवाद तभी संभव है, जब वह भारत में आतंकवाद को समर्थन देना और बढ़ावा देना पूरी तरह बंद कर दे। अमेरिका के प्रतिष्ठित शिकागो विश्वविद्यालय में आयोजित संवाद कार्यक्रम में एक पाकिस्तानी छात्र के सवाल का जवाब देते हुए राहुल ने भारत की विदेश नीति, वैश्विक भू-राजनीति और देश की चुनावी प्रक्रिया पर विस्तार से अपने विचार रखे।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक राहुल गांधी ने कहा कि गुंजाइश तो



है, लेकिन एक बड़ी समस्या है और वह यह है कि पाकिस्तान हमारे देश के अंदर आतंकवाद का समर्थन करता है और उसे बढ़ावा देता है। यह बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं है। हमारे लिए ऐसी स्थिति को स्वीकार करना असंभव है, जहां हमारे निर्दोष लोग मारे जा रहे हों और हम पाकिस्तान के साथ बातचीत कर रहे हों। इसलिए, जिस पल यह बंद हो जाएगा, तब बातचीत शुरू होने की संभावना बन सकती है।

उन्होंने कहा कि वह इज़राइल के साथ भारत के मजबूत संबंधों का समर्थन करते हैं, लेकिन गाजा में इज़राइल के सैन्य अभियान की निंदा करते हैं। राहुल गांधी ने कहा कि हमारे कुछ रणनीतिक हित हैं, जिसमें हमारी सशस्त्र सेनाओं के लिए बेहतरीन हथियार खरीदना भी शामिल है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम गाजा पर चुप रहें। मैं 7 अक्टूबर के हमलों और निर्दोष लोगों की हत्या की निंदा करता हूं। मैं इज़राइल द्वारा गाजा में जो किया गया है, उसकी भी कड़े शब्दों में निंदा करता हूं। एक गलत काम दूसरे गलत काम को सही नहीं ठहरा सकता। भारत 1.5 अरब लोगों का देश हैं। किसी भी देश– चाहे वह इज़राइल हो, अमेरिका, रूस या चीन को हमें वैश्विक मंच पर अपनी सही भूमिका निभाने से नहीं रोकना चाहिए। भारत को उसी बात के लिए खड़ा होना चाहिए, जिसमें वह विश्वास करता है।

अमेरिका-ईरान के बीच चल रहे तनाव पर गांधी ने कहा कि ऐसे भू-राजनीतिक तनावों पर भारत की अपनी आवाज और अपना नज़रिया होना चाहिए, जो उन्हें लगता है कि अभी नदारद है। उन्होंने कहा कि मुझे हैरानी है कि पाकिस्तान ईरानियों और अमेरिकियों के साथ बातचीत करने में व्यस्त है, जबकि भारत बस तमाशा देख रहा है। आज़ादी के समय से ही भारत की भू-राजनीतिक समझ हमेशा से बहुत गहरी रही है। हमारी अपनी स्वतंत्र सोच थी।

दुग्ध संघ ने की आंदोलन टालने की अपील, पशुपालकों ने दिया दो दिन का अल्टीमेटम

कोट भैंसक में बैठक, दूध के दाम बढ़ाने, पशु आहार पर सब्सिडी और सचिवों का मानदेय बढ़ाने पर बनी सहमति

संघ भेज रहा शासन को पत्र, कार्रवाई न हुई तो 25 नवंबर को जिलाव्यापी आंदोलन की चेतावनी



के.के.पी संवाददाता

देवीधुरा। दूध के दाम और अन्य मांगों को लेकर पशुपालकों के प्रस्तावित आंदोलन से पहले आंचल दुग्ध संघ चम्पावत ने बातचीत की पहल की है। गुरुवार को कोट भैंसक दुग्ध समिति देवीधुरा में हुई बैठक में दुग्ध संघ के अधिकारियों ने पशुपालकों से 25 नवंबर को प्रस्तावित जिलाव्यापी आंदोलन न करने का अनुरोध किया। बैठक में आंचल दुग्ध संघ के जिला प्रबंधक हरीश बोरा, पूर्व प्रबंधक जी.एस. राणा, बृजेश बगोली, सुरेश जोशी सहित संघ के अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे। सचिव संगठन की ओर से रघुबर मुरारी, दीपक सुतेड़ी, मदन उपाध्याय, मोहन चौबे, राजेश बिष्ट, भास्कर बिष्ट और सोबन चमियाल आदि ने भाग लिया। बैठक में सर्वसम्मति से दूध के मूल्य में तत्काल वृद्धि करने, पशु आहार पर सब्सिडी देने और दुग्ध समिति सचिवों का मानदेय बढ़ाने का निर्णय लिया गया। इन मांगों को लेकर दुग्ध संघ की ओर से मुख्य सचिव, दुग्ध/डेयरी और पशुपालन सचिव, मुख्यमंत्री और पशुपालन मंत्री को पत्र भेजा जा रहा है। भैंसक दुग्ध समिति और सचिव संगठन ने कहा कि पशुपालक दिन-रात मेहनत करते हैं, लेकिन पशु आहार महंगा और दूध सस्ता होने से उन्हें मेहनत का सही दाम नहीं मिल रहा। उन्होंने कहा कि अधिकारियों के आग्रह का सम्मान करते हुए फिलहाल रुख नरम किया गया है, लेकिन यदि अगले दो दिन में बैठक के निर्णयों पर ठोस कार्रवाई नहीं हुई, तो 25 नवंबर को जिलाव्यापी बड़ा आंदोलन होगा, जिसकी पूरी जिम्मेदारी शासन-प्रशासन और दुग्ध संघ की होगी।

मुक्तेश्वर में 'मधुमक्खी संरक्षण एवं परागण वृद्धि' पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन, 80 काश्तकारों ने किया प्रतिभाग

के.के.पी संवाददाता

अल्मोड़ा। पर्वतीय क्षेत्रों में उद्यानिकी को बढ़ावा देने और परागण वृद्धि के माध्यम से बेहतर फसल उत्पादन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मुक्तेश्वर (कसियालेख क्षेत्र) में एक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। सोसाइटी फॉर पीपुल्स एक्शन एंड रूरल डेवलपमेंट इन हिमालयन एरिया (स्पर्धा), अल्मोड़ा के तत्वावधान में तथा उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद देहरादून के वित्तीय सहयोग से आयोजित इस कार्यशाला में कुमाऊँ क्षेत्र के कुल 80 काश्तकारों एवं प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।



कार्यशाला का शुभारंभ और मुख्य संबोधन कार्यशाला के पहले दिन कसियालेख क्षेत्र के मौन पालकों और काश्तकारों के साथ विशेष गोष्ठी एवं मौन पालन पर व्यावहारिक स्थलीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें डॉ. गिरीश नेगी, डॉ. रवींद्र जोशी, डॉ. प्रदीप सिंह, इंजीनियर दीप चंद्र बिष्ट और स्पर्धा के कैलाश रौतेला ने किसानों का मार्गदर्शन किया दूसरे दिन के कार्यक्रम की शुरुआत स्पर्धा अल्मोड़ा के कैलाश रौतेला और मानसखण्ड विज्ञान केन्द्र अल्मोड़ा की शोधार्थी सुश्री नीमा बिष्ट द्वारा प्रतिभागियों के स्वागत एवं पंजीकरण के साथ हुई। इस कार्यशाला का सफल संचालन एवं विषय की भूमिका का प्रस्तुतीकरण मानसखण्ड विज्ञान केन्द्र अल्मोड़ा के एमेरिटस वैज्ञानिक डॉ. गिरीश नेगी (डॉ. जी.सी.एस. नेगी) द्वारा किया गया। उन्होंने अपने स्वागत एवं मुख्य संबोधन में कार्यक्रम के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए मानव जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र में मधुमक्खियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर विस्तृत जानकारी दी तथा वर्तमान समय में मधुमक्खियों की स्थिति (करेंट स्टेटस) और उनके संरक्षण की आवश्यकता पर विशेष प्रकाश डाला।वसुन्धरा संस्था अल्मोड़ा एवं पर्यावरण संस्थान के पूर्व परियोजना सलाहकार डॉ. रवींद्र जोशी ने कीट परागणकर्ताओं की विविधता, परागण संकट और फसल उत्पादन की चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि प्रकृति में 15 लाख जीव प्रजातियों में से मात्र 10 लाख कीटों की ही पहचान हो पाई है। विश्व की 20,000 परागण प्रजातियों में से 80 प्रतिशत योगदान अकेले मधुमक्खियों का है (भारत में इनकी 5,000 प्रजातियां हैं)।

एक नजर

बंजरखेत-मंडलसेरा क्षेत्र में 21 नवंबर को चलेगा विशेष स्वच्छता अभियान, युवाओं की रहेगी भागीदारी

के.के.पी संवाददाता। जिलाधिकारी अपूर्वा पाण्डे के निर्देशों के क्रम में जनपद में प्रत्येक शनिवार को आयोजित किए जा रहे विशेष स्वच्छता अभियान के तहत कल 21 नवम्बर को बंजरखेत मंडलसेरा क्षेत्र में व्यापक स्वच्छता अभियान संचालित किया जाएगा।

अभियान के लिए जिला पंचायत राज अधिकारी, बागेश्वर को नोडल अधिकारी नामित किया गया है। अभियान के अंतर्गत संबंधित क्षेत्रों में स्वच्छता, कूड़ा निस्तारण एवं साफ-सफाई के कार्य किए जाएंगे।

जिलाधिकारी ने संबंधित अधिकारियों को नगर पालिका परिषद बागेश्वर के साथ समन्वय स्थापित करते हुए अभियान को प्रभावी ढंग से संचालित करने तथा इसमें नेहरू युवा केंद्र, युवा कल्याण विभाग, एनसीसी कैडेट्स सहित अन्य संगठनों एवं युवाओं की सहभागिता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। जिलाधिकारी ने कहा कि स्वच्छता अभियान को जनसहभागिता से जोड़ते हुए संचालित किया जाए, ताकि जनपद को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने के साथ आमजन में स्वच्छता के प्रति जागरूकता विकसित की जा सके।

जनपद में स्कूली बच्चों की सुरक्षा के दृष्टिगत पुलिस ने चलाया सघन चेकिंग अभियान, चालकों को दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

के.के.पी संवाददाता। पुलिस अधीक्षक बागेश्वर जितेन्द्र मेहरा (IPS) के निर्देशन एवं क्षेत्राधिकारी बागेश्वर/कपकोट के पर्यवेक्षण में जनपद में छात्र-छात्राओं के सुरक्षित आवागमन और यातायात व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से दिनांक 17.11.2026 को जनपद पुलिस द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्रों में स्कूली वाहनों पर सघन चेकिंग अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान पुलिस टीमों ने विभिन्न मार्गों पर संचालित हो रहे स्कूली वाहनों, वैन और बसों को रोककर उनकी गहनता से जांच की। इस दौरान पुलिस द्वारा वाहन चालकों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए: वाहनों में निर्धारित क्षमता से अधिक बच्चों को न बैठाने की सख्त हिदायत दी गई। निर्धारित गति सीमा में वाहन चलाने, सीट बेल्ट का प्रयोग करने और यातायात के सभी नियमों का पूर्णतः पालन करने के निर्देश दिए गए। वाहन के सभी आवश्यक कागजात जैसे परमिट, फिटनेस प्रमाण पत्र, बीमा, प्रदूषण प्रमाण पत्र और ड्राइविंग लाइसेंस को सदैव अद्यतन रखने हेतु निर्देशित किया गया। वाहनों में फर्स्ट-एड बॉक्स, अग्निशमन यंत्र और अन्य सुरक्षा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करने को कहा गया। वाहन चैकिंग के दौरान यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले 41 वाहन चालकों के विरुद्ध मोटर वाहन अधिनियम के तहत कार्रवाई की गई। जिसमें 01 वाहन का माननीय न्यायालय का चालान किया गया।

जनपद पुलिस द्वारा चालकों को चेतावनी दी गई कि बच्चों की सुरक्षा के साथ किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी तथा नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध सख्त वैधानिक कार्यवाही अमल में लाई जाएगी।

बांग्लादेश में हिंसा के बीच शेख हसीना चाहती हैं लौटना, रहमान सरकार अपना रही सख्त रुख

ढाका। बांग्लादेश में शेख हसीना ने ढाका लौटने का ऐलान के बाद देश में कोहराम मच गया। जगह-जगह बम धमाकों की खबर है। सड़कों पर उत्पात शुरू हो गया है। यहां कुछ रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि आगजनी और तोड़फोड़ में हसीना की पार्टी आवामी लीग का हाथ है, वहीं दूसरी तरफ यह खबरें भी सामने आई हैं कि आवामी लीग के नेताओं पर भी हमले हुए हैं। इन सब के बीच भी हसीना बांग्लादेश लौटना चाहती हैं। बता दें शेख हसीना देश में शुरू हुए हिंसक छात्र आंदोलन के बाद भारत आ गई थीं। तब से वह भारत में रह रही हैं। इस बीच बांग्लादेश की तारिक रहमान सरकार लगातार भारत से उनके प्रत्यर्पण की मांग कर रही है। हालांकि भारत ने साफ किया है कि वह सभी कानूनी प्रक्रियाओं को देखते हुए ही उचित कदम उठाएगा। इन सब के बीच से हसीना को बांग्लादेश में फांसी की सजा या मृत्युदंड दिया जा चुका है। उन्हें छात्र आंदोलन के दौरान छात्रों पर हिंसक कार्रवाई करने के आदेश देने के आरोप में मानवता के खिलाफ अपराध का दोषी ठहराया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक बांग्लादेश की सरकार ने कई बार कहा कि शेख हसीना के लौटते ही उन्हें सजा देने की प्रक्रिया शुरू हो जाएगी। इसके बावजूद हसीना ने कहा है कि वे अपने वतन जरूर लौटेंगी। बीते दिनों उन्होंने दोहराया है कि वे किसी भी हाल ही में दिसंबर में ढाका लौटेंगी। इसे लेकर अब हसीना बांग्लादेश सरकार से पासपोर्ट की मांग कर रही हैं। रिपोर्ट के मुताबिक ब्रिटेन स्थित हसीना की कानूनी टीम ने नई दिल्ली स्थित बांग्लादेश उच्चायोग को इस सिलसिले में दूसरी बार पत्र लिखा है। बता दें भले ही शेख हसीना ने देश लौटने का ऐलान किया है, लेकिन तारिक रहमान सरकार बेहद सख्त रुख अपना रही है। बांग्लादेश की विदेश राज्य मंत्री शमा ओबैद इस्लाम ने दो टूक कहा कि बांग्लादेश का नागरिक होने से यह तय नहीं होता कि आपको बांग्लादेशी पासपोर्ट मिल ही जाएगा। अगर आप एक अपराधी हैं, तो बांग्लादेश सरकार किसी को भी पासपोर्ट जारी करने के लिए बाध्य नहीं है। इससे यह साफ है कि बांग्लादेश हसीना को एक अपराधी की तरह की देख रहा है और इसीलिए चाहता है कि भारत उन्हें प्रत्यर्पित कर दे।

इधर बांग्लादेश फिर सुलग रहा है। पुलिस और मीडिया की खबरों के मुताबिक गोपालगंज से सटे फरीदपुर के भांगा इलाके में पुलिस और हसीना की पार्टी अवामी लीग के समर्थकों के बीच झड़प में बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी की किसान शाखा के स्थानीय नेता राजू मोल्ला की मौत हो गई। गोपालगंज में यह हिंद अवामी लीग के कई संदिग्ध समर्थकों की गिरफ्तारी के बाद शुरू हुई।

कैबिनेट मंत्री राम सिंह कैड़ा ने भटेलिया में साइकिल यात्रा का किया शुभारंभ, पर्यटन को बढ़ावा देने का दिया संदेश

के.के.पी संवाददाता

भीमताल। कैबिनेट मंत्री राम सिंह कैड़ा ने भीमताल विधानसभा क्षेत्र के धारी विकासखंड अंतर्गत भटेलिया में आयोजित साइकिल यात्रा का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए साइकिल यात्रा को क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने तथा उत्तराखंड की प्राकृतिक सुंदरता को देश-दुनिया तक पहुँचाने की दिशा में एक सराहनीय पहल बताया।



मंत्री श्री कैड़ा ने कहा कि भीमताल विधानसभा क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य, नैसर्गिक वातावरण और पर्यटन की अपार संभावनाओं से समृद्ध है। इस प्रकार के आयोजनों से क्षेत्र की पहचान राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूत होगी तथा स्थानीय युवाओं को पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार और स्वरोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के कुशल नेतृत्व में प्रदेश सरकार उत्तराखंड में पर्यटन विकास, साहसिक पर्यटन को प्रोत्साहन देने और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित करने के लिए निरंतर कार्य कर रही है। सरकार का प्रयास है कि प्रदेश के प्रत्येक पर्यटन स्थल को नई पहचान मिले और पर्यटन गतिविधियों का लाभ स्थानीय लोगों तक पहुँचे। मंत्री श्री कैड़ा ने कहा कि साइकिल यात्रा जैसे आयोजन न केवल पर्यटन को बढ़ावा देते हैं, बल्कि युवाओं में स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के प्रति जागरूकता का संदेश भी प्रसारित करते हैं। उन्होंने आयोजन से जुड़े सभी आयोजकों एवं प्रतिभागियों को शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि सामूहिक प्रयासों से भीमताल विधानसभा क्षेत्र सहित पूरे उत्तराखंड को पर्यटन और विकास की नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया जा सकता है। इस दौरान जिला अध्यक्ष प्रताप बिष्ट, राज्य मंत्री देवेन्द्र ढेला मण्डल अध्यक्ष कृष्ण चंद्र नितिन राणा सहित आदि लोग मौजूद रहे!

पीसीएस प्रारंभिक परीक्षा : चम्पावत के तीन केंद्रों के 200 मीटर दायरे में निषेधाज्ञा लागू

के.के.पी संवाददाता

चम्पावत। उत्तराखंड लोक सेवा आयोग हरिद्वार की ओर से 29 नवंबर (रविवार) को होने वाली उत्तराखंड सम्मिलित राज्य सिविल/प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारंभिक परीक्षा-2026 को शांतिपूर्ण और पारदर्शी ढंग से कराने के लिए जिले के परीक्षा केंद्रों के आसपास निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है। परीक्षा का पहला सत्र सुबह 10 से दोपहर 12 बजे तक और दूसरा सत्र दोपहर 2 से शाम 4 बजे तक होगा।



जिलाधिकारी के निर्देश पर परगना मजिस्ट्रेट चम्पावत विपिन चन्द्र पन्त ने भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 163 के तहत प्रतिबंधात्मक आदेश जारी किए हैं। यह आदेश परगना चम्पावत के तीन परीक्षा केंद्रों – पीएम श्री राजकीय बालिका इंटर कॉलेज (जिला पंचायत के पास), पीएम श्री अटल उत्कृष्ट शहीद राहुल रैंसवाल राजकीय इंटर कॉलेज (वार्ड कनलगांव) और विवेकानंद विद्या मंदिर इंटर कॉलेज (जूप) – के 200 मीटर दायरे में लागू रहेगा।

आदेश के अनुसार परीक्षा केंद्रों के आसपास शांति भंग करने के उद्देश्य से पांच या उससे अधिक लोग एक जगह एकत्र नहीं हो सकेंगे। केंद्रों के आसपास लाउडस्पीकर, ढोल-नगाड़े और अन्य वाद्य यंत्रों के प्रयोग पर भी रोक रहेगी।

देवउठनी एकादशी व श्याम बाबा के जन्मदिन पर पीरूमदारा में प्रसाद वितरण कार्यक्रम, भक्तों ने लगाए बाबा श्याम के जयकारे

के.के.पी संवाददाता

पीरूमदारा(रामनगर)। देवउठनी एकादशी के पावन एवं शुभ अवसर पर पीरूमदारा में श्री शिव मंदिर समिति एवं खाटू श्याम समिति पीरूमदारा के संयुक्त तत्वावधान में भव्य प्रसाद वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



कार्यक्रम का शुभारंभ बाबा खाटू श्याम की विधिवत पूजा-अर्चना एवं भव्य आरती के साथ किया गया। इसके पश्चात बाबा श्याम के जन्मदिन के शुभ अवसर पर मावे का विशेष केक काटकर बाबा को भोग लगाया गया तथा श्रद्धालुओं को केक प्रसाद के रूप में वितरित किया गया। इसके बाद भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया।

कार्यक्रम में शिव मंदिर समिति के विधिक सलाहकार एवं रामनगर टैक्स बार के महासचिव एडवोकेट डॉ. मनु अग्रवाल, राहुल अग्रवाल, अवनीत अग्रवाल, विशाल तनेजा, विकास पाल, मनोज रावत, भगत सैनी एवं हिमांशु रावत सहित अनेक श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की तथा प्रसाद वितरण में अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु एवं भक्तजन कार्यक्रम में शामिल हुए और श्रद्धापूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। प्रसाद वितरण के दौरान पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। भक्तजनों ने बाबा खाटू श्याम के जयकारे लगाकर माहौल को भक्तिरस से सराबोर कर दिया।

इस अवसर पर दोनों मंदिर समितियों के सदस्यों एवं श्रद्धालुओं ने धार्मिक आस्था, सामाजिक सद्भाव और आपसी भाईचारे का संदेश दिया। आयोजन को लेकर भक्तजनों में विशेष उत्साह देखने को मिला।

मुक्तेश्वर में 'मधुमक्खी संरक्षण एवं परागण वृद्धि' पर दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन, 80 काश्तकारों ने किया प्रतिभाग

के.के.पी संवाददाता

अल्मोड़ा। पर्वतीय क्षेत्रों में उद्यानिकी को बढ़ावा देने और परागण वृद्धि के माध्यम से बेहतर फसल उत्पादन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से मुक्तेश्वर (कसियालेख क्षेत्र) में एक दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। सोसाइटी फॉर पीपुल्स एक्शन एंड रूरल डेवलपमेंट इन हिमालयन एरिया (स्पर्धा), अल्मोड़ा के तत्वावधान में तथा उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद देहरादून के वित्तीय सहयोग से आयोजित इस कार्यशाला में कुमाऊँ क्षेत्र के कुल 80 काश्तकारों एवं प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया।



कार्यशाला का शुभारंभ और मुख्य संबोधन कार्यशाला के पहले दिन कसियालेख क्षेत्र के मौन पालकों और काश्तकारों के साथ विशेष गोष्ठी एवं मौन पालन पर व्यावहारिक स्थलीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इसमें डॉ. गिरीश नेगी, डॉ. रवींद्र जोशी, डॉ. प्रदीप सिंह, इंजीनियर दीप चंद्र बिष्ट और स्पर्धा के कैलाश रौतेला ने किसानों का मार्गदर्शन किया दूसरे दिन के कार्यक्रम की शुरुआत स्पर्धा अल्मोड़ा के कैलाश रौतेला और मानसखण्ड विज्ञान केन्द्र अल्मोड़ा की शोधार्थी सुश्री नीमा बिष्ट द्वारा प्रतिभागियों के स्वागत एवं पंजीकरण के साथ हुई। इस कार्यशाला का सफल संचालन एवं विषय की भूमिका का प्रस्तुतीकरण मानसखण्ड विज्ञान केन्द्र अल्मोड़ा के एमेरिटस वैज्ञानिक डॉ. गिरीश नेगी (डॉ. जी.सी.एस. नेगी) द्वारा किया गया। उन्होंने अपने स्वागत एवं मुख्य संबोधन में कार्यक्रम के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए मानव जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र में मधुमक्खियों की महत्वपूर्ण भूमिका पर विस्तृत जानकारी दी तथा वर्तमान समय में मधुमक्खियों की स्थिति (करेंट स्टेटस) और उनके संरक्षण की आवश्यकता पर विशेष प्रकाश डाला।वसुन्धरा संस्था अल्मोड़ा एवं पर्यावरण संस्थान के पूर्व परियोजना सलाहकार डॉ. रवींद्र जोशी ने कीट परागणकर्ताओं की विविधता, परागण संकट और फसल उत्पादन की चुनौतियों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बताया कि प्रकृति में 15 लाख जीव प्रजातियों में से मात्र 10 लाख कीटों की ही पहचान हो पाई है। विश्व की 20,000 परागण प्रजातियों में से 80 प्रतिशत योगदान अकेले मधुमक्खियों का है (भारत में इनकी 5,000 प्रजातियां हैं)। क्षेत्र की 10,000 हेक्टेयर फल पट्टी में 1 टन से अधिक फलों के उत्पादन – विशेषकर सेब के लिए सेवानिवृत्त जिला खादी एवं ग्रामोद्योग अधिकारी (उत्तराखण्ड) डॉ. बी.सी. बुधानी (भुवन चंद्र बुधानी) ने मधुमक्खी पालन के वैज्ञानिक पहलुओं, कीट एवं रोग नियंत्रण, कृत्रिम परागण तकनीक तथा मधुमक्खियों के प्राकृतिक शत्रुओं से बचाव के उपायों पर विस्तृत जानकारी दी। सत्र में यूरोपीय (इटालियन) मधुमक्खी की अनुशासित कार्यशैली, प्रतिदिन 3-4 किमी के दायरे में पराग व मकरंद एकत्र करने की क्षमता तथा नोबेल पुरस्कार से सम्मानित 'वैगल डांस' की वैज्ञानिक प्रक्रिया को भी समझाया गया।मानसखण्ड विज्ञान केन्द्र, अल्मोड़ा के डॉ. प्रदीप सिंह ने मधुमक्खियों के चारे हेतु पुष्पीय प्राकृतिक जंगली वनस्पतियों और फूलों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने विशेष रूप से समझाया कि मधुमक्खियों के जीवन चक्र और शहद उत्पादन के लिए पौधों की 'फिनोलॉजी' (पुष्पण का समय और ऋतु चक्र) कितनी महत्वपूर्ण है, ताकि मधुमक्खियां वर्ष भर जंगलों से निरंतर मकरंद (नेक्टर) एकत्र कर सकें।

उत्तराखण्ड विधानसभा चुनाव 2027: कांग्रेस गठबंधन में 30 सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती है सपा, 15 सीटें प्राथमिकता पर

के.के.पी संवाददाता

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड समाजवादी पाटी ने विधान सभा चुनाव में कांग्रेस के गठबंधन में 30 सीटों पर चुनाव लड़ने का फ़ैसला लिया है।



समाजवादी पार्टी उत्तराखण्ड के प्रदेश अध्यक्ष अब्दुल मतीन सिद्दीक़ी ने प्रेस को जारी एक बयान में कहा कि उत्तराखण्ड समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेतागणों ने विधान सभा चुनाव 2027 के लिए गठबंधन में चुनाव लड़ने के लिए 30 सीटें चिह्नित की हैं और इस की सूचि सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय अखिलेश यादव जी को भेजी गई हैं। जिसमे 15 सीटें प्राथमिकता पर रखी गई हैं।श्री सिद्दीकी ने कहा कि उत्तराखण्ड संगठन ने जो 30 सीटो की सूची माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष जी को भेजी है उस पर विचार विमर्श करने के उपरान्त राष्ट्रीय अध्यक्ष जी का जो भी आदेश होगा वह स्वीकार किया जाएगा।श्री सिद्दीकी ने कहा कि इस समय देश के जो हालात हैं।वह सम्पूर्ण विपक्ष को एकजुट होकर भाजपा से मुक़ाबला करने का है। न कि अलग अलग हो कर अकेले लड़ने के श्री सिद्दीकी ने कहा कि बुजुर्गों की कहावत है कि एक जुट होकर लड़ोगे तो विजय निश्चित है और यदि अलग अलग लड़े तो नुक़सान सबका है।श्री सिद्दीक़ी ने स्पष्ट शब्दों मे कहा कि यदि भाजपा को उखाड़ना है तो समस्त विपक्ष को एकजुट होना पड़ेगा ।साथ ही उन्होंने कहा कि गठबंधन में जो भी सीटें सपा के हिस्से में आएगी उन्हें मजबूती से लड़ा जाएगा और गठबंधन के अन्य सहयोगियों की सीटों को भी मजबूती से लड़ाया जाएगा और यदि किसी कारण वंश गठबंधन नहीं होता है तो समाजवादी पार्टी उत्तराखण्ड में 70 की 70 विधानसभा सीटों पर मजबूती से चुनाव लड़ेगी।

मतदाता सूची की गहन जांच के लिए 20 से 27 नवंबर तक विशेष अभियान, घर-घर पहुंचेंगे बीएलओ

दो जगह दर्ज नाम और त्रुटियां होंगी दुरुस्त, 11 दिसंबर तक दे सकते हैं दावे-आपत्तियां

मुख्य निर्वाचन अधिकारी की अपील — अपना और परिवार का नाम जरूर जांचें, अफवाहों पर ध्यान न दें

के.के.पी संवाददाता

देहरादून। मुख्य निर्वाचन अधिकारी डॉ. बी.वी.आर.सी. पुरुषोत्तम ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देश पर उत्तराखंड में 1 जनवरी 2027 की अर्हता तिथि के आधार पर विधानसभा निर्वाचक नामावली का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण (एसएसआर) चल रहा है। मतदाता सूची को त्रुटिरहित और अद्यतन बनाने के लिए 20 से 27 नवंबर 2026 तक एक सप्ताह का विशेष अभियान चलाया जाएगा।

अभियान के दौरान हर बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ) अपने बूथ की मतदाता सूची की गहनता से जांच करेंगे और उसमें पाई जाने वाली त्रुटियों को चिह्नित कर संबंधित मतदाताओं के माध्यम से सुधार कराएंगे। एक ही बूथ पर या एक से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों में दर्ज एक ही व्यक्ति के नामों को चिह्नित कर फार्म-7 के



जरिए नियमानुसार हटाया जाएगा। डॉ. पुरुषोत्तम ने स्पष्ट किया कि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 की धारा 17 और 18 के अनुसार कोई भी व्यक्ति एक से अधिक जगह या एक से अधिक बार मतदाता के रूप में पंजीकृत नहीं हो सकता। उन्होंने बताया कि मतदाता सूची में नाम जुड़वाने, विवरण में सुधार या अपात्र नाम हटवाने के लिए 12 नवंबर से 11 दिसंबर 2026 तक दावे और आपत्तियां दी जा सकती हैं। नाम जोड़ने के लिए फार्म-6, नाम हटाने के लिए फार्म-7 और विवरण में संशोधन के लिए फार्म-8 भरना होगा। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने सभी मतदाताओं से अपील की कि वे वर्तमान मतदाता सूची में अपना और परिवार के सभी पात्र सदस्यों का नाम, पता, आयु और अन्य विवरण अच्छी तरह जांच लें। त्रुटि मिलने पर तय समय में फार्म-8 भरकर बीएलओ के पास जमा करें। उन्होंने लोगों से सोशल मीडिया पर फैल रही अफवाहों पर ध्यान न देने और केवल आधिकारिक स्रोतों से जानकारी लेने को कहा। उन्होंने बताया कि 12 नवंबर को प्रकाशित ड्राफ्ट मतदाता सूची सभी जिला निर्वाचन कार्यालयों, एसडीएम व तहसील कार्यालयों और बीएलओ के पास उपलब्ध है। मतदाता voters.eci.gov.in और ceo.uk.gov.in पर ऑनलाइन भी अपना नाम देख सकते हैं।

एनआईओएस और उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के बीच शीघ्र होगा एमओयू, कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने की अध्यक्ष प्रो. अखिलेश मिश्रा से मुलाकात

के.के.पी संवाददाता

हल्द्वानी। उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी के माननीय कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने आज राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) के मुख्यालय में संस्थान के अध्यक्ष प्रो. अखिलेश मिश्रा से मुलाकात की। इस अवसर पर दोनों के बीच एनआईओएस एवं उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियों, उपलब्धियों और भावी योजनाओं को लेकर विस्तृत चर्चा हुई।



बैठक में दोनों संस्थानों के बीच शैक्षणिक एवं संस्थागत सहयोग को मजबूत बनाने, अनुभवों और संसाधनों के आदान-प्रदान तथा मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में नई संभावनाओं को विकसित करने पर विचार-विमर्श किया गया।

कुलपति प्रो. नवीन चन्द्र लोहनी ने उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों एवं उपलब्धियों से एनआईओएस अध्यक्ष को अवगत कराया। वहीं, प्रो. अखिलेश मिश्रा ने भी अपने संस्थान की गतिविधियों एवं कार्ययोजनाओं की जानकारी साझा की।

बैठक में दोनों संस्थानों के बीच शीघ्र ही समझौता ज्ञापन (एमओयू) किए जाने तथा आपसी सहयोग से आगे की कार्ययोजना तैयार करने पर सहमति बनी। इस पहल से दोनों संस्थानों को शैक्षणिक गुणवत्ता, नवाचार एवं मुक्त शिक्षा के विस्तार की दिशा में परस्पर लाभ मिलेगा।

सोशल मीडिया आगामी विधानसभा चुनाव में संगठन की ताकत और सरकार की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने का प्रमुख माध्यम बनेगा: सोमेश पांडे

भाजपा अल्मोड़ा की जिला स्तरीय सोशल मीडिया बैठक में कार्यकर्ताओं को दिया गया मार्गदर्शन, प्रभावी कंटेंट और जनसंवाद पर जोर

के.के.पी संवाददाता

अल्मोड़ा। भारतीय जनता पार्टी जिला अल्मोड़ा की सोशल मीडिया की जिला स्तरीय बैठक शुक्रवार को भाजपा जिला कार्यालय, पातालदेवी में आयोजित हुई। बैठक में विधानसभा चुनाव प्रदेश सह प्रभारी सोशल मीडिया सोमेश पांडे मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने कार्यकर्ताओं को सोशल मीडिया की ताकत पहचानने, संगठन की विचारधारा, सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं विकास कार्यों को प्रभावी ढंग से जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं वंदे मातरम् के गायन के साथ हुआ। मंच पर मुख्य वक्ता सोमेश पांडे, प्रदेश



मीडिया सह संयोजक गांधार अग्रवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष महेश नयाल, सोशल मीडिया जिला संयोजक कृपाल बिष्ट, सह संयोजक मदन सिंह बिष्ट एवं आईटी संयोजक गोविंद मठपाल उपस्थित रहे। जिलाध्यक्ष महेश नयाल ने सभी अतिथियों का पुष्पगुच्छ एवं पटका पहनाकर स्वागत और अभिनंदन किया।

प्रदेश मीडिया सह संयोजक गांधार अग्रवाल ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की लोककल्याणकारी सरकार की नीतियों, योजनाओं एवं जनहित में किए गए कार्यों को जन-जन तक पहुंचाना प्रत्येक कार्यकर्ता की जिम्मेदारी है। सोशल मीडिया आज सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दों को प्रभावी ढंग से जनता के सामने रखने का सशक्त माध्यम बन चुका है। कार्यकर्ताओं को सकारात्मक, तथ्यपरक एवं प्रभावशाली सामग्री के माध्यम से संगठन की विचारधारा और सरकार के कार्यों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने के लिए सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

मुख्य वक्ता सोमेश पांडे ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि सोशल मीडिया की ताकत को पहचानते हुए इसका अधिकतम उपयोग संगठन को मजबूत बनाने और सरकार के कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने में करना होगा। उत्तराखंड में हुए विकास एवं सकारात्मक बदलावों की जानकारी जनता तक पहुंचाने में सोशल मीडिया एक प्रमुख हथियार बन सकता है। उन्होंने कहा कि 'चरैवेति-चरैवेति, चलते रहो, चलते रहो' हमारा मंत्र है। निरंतर सक्रियता, परिश्रम और संगठन के प्रति समर्पण ही कार्यकर्ताओं की पहचान है।

2027 चुनाव को लेकर कांग्रेस ने कसी कमर, जागेश्वर विधानसभा के बूथों की समीक्षा

के.के.पी संवाददाता

अल्मोड़ा। अल्मोड़ा जिले की जागेश्वर विधानसभा में 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। इसी क्रम में शुक्रवार को चायखान स्थित वन विश्राम भवन में कांग्रेस जागेश्वर विधानसभा प्रभारी गोपाल सिंह बिष्ट के नेतृत्व में संगठनात्मक बैठक आयोजित की गई। बैठक में लमगड़ा और जैंती ब्लॉक के सभी बूथों की समीक्षा कर आगामी विधानसभा चुनाव की रणनीति पर चर्चा की गई।बैठक में पूर्व विधानसभा अध्यक्ष एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता गोविन्द सिंह कुंजवाल सहित पार्टी के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने प्रतिभाग किया। इस दौरान बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत करने, कार्यकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने तथा आगामी चुनाव के लिए जमीनी स्तर पर तैयारी करने को लेकर विचार-विमर्श किया गया।



कांग्रेस विधानसभा प्रभारी गोपाल सिंह बिष्ट ने कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए संगठन को गांव-गांव और बूथ स्तर तक मजबूत करना प्राथमिकता है। इसके लिए सभी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को एकजुट होकर जिम्मेदारी के साथ काम करना होगा। पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गोविन्द सिंह कुंजवाल ने कहा कि चुनाव में बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होती है। पार्टी की मजबूती के लिए सभी कार्यकर्ताओं को आपसी समन्वय के साथ जनता के बीच जाकर कांग्रेस की नीतियों और विचारधारा को पहुंचाना होगा। बैठक में लमगड़ा ब्लॉक अध्यक्ष मनोज रावत, एससी जिला अध्यक्ष नवीन कोहली, पूर्व ब्लॉक प्रमुख महेंद्र सिंह मेर, जैंती ब्लॉक अध्यक्ष नाथ सिंह धानक, जिला पंचायत प्रतिनिधि दीपक फर्त्याल, जिला महामंत्री दीवान सतवाल, जिला सचिव भुवन गहरवाल, गोपाल चौहान, रमेश बिष्ट, पान सिंह बर्गली, प्रताप राम, कुंदन कुंजवाल, किशोर कुंजवाल, चन्दन सिंह बोरा, मदन कुंजवाल, शिवराम आर्या, गोपाल महरा, कमल बिष्ट, बची सिंह, गोकुल बोरा, सुंदर फर्त्याल, धन सिंह फर्त्याल, जीवन चंद्र, गिरीश चंद्र, रमेश बोरा, हरीश सिजवाली, नरेंद्र प्रसाद, अमर सिंह बोरा, शेर सिंह बोरा, मोहन सिंह नयाल, नवीन चंद्र, हरीश गहतोड़ी, नारायण सिंह रजवार, भीम सिंह, किशन सिंह बोरा, प्रेम सिंह कन्याल, मोहित जोशी, राहुल बिष्ट, लक्ष्मी दत्त, पूरन सिंह, शिवराज सिंह नागकोटी, करन बिष्ट, हेम आर्या, विजय चिलवाल, मोहन नगरकोटी, पुष्कर सिंह, कृष्ण कुमार, महेंद्र नयाल, शिव लाल, रोहित कुमार, मोहन कुंजवाल, गोपाल बनोली, सुरेश चंद तिवारी, महेश चंद्र तिवारी सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता एवं स्थानीय ग्रामीण मौजूद रहे।

17 दिन तक छकाता रहा गुलदार, आखिरकार वन विभाग के शिकंजे में आया

13 वर्षीय मासूम की जान लेने वाले गुलदार को आईटीबीपी कैंप के पास किया ट्रेंकुलाइज, डीएनए जांच से खुलेगा नरभक्षी का राज; 17 दिन जंगलों में डटी रही वन विभाग की टीम।

के.के.पी संवाददाता

लोहाघाट। सुई गांव में 13 वर्षीय मासूम की जान लेने के बाद दहशत का पर्याय बना गुलदार आखिरकार वन विभाग के शिकंजे में आ गया। 17 दिनों तक जंगलों में वनकर्मियों को छकाने और लगातार ठिकाने बदलने वाले गुलदार को शुक्रवार सुबह आईटीबीपी कैंप के पास ट्रेंकुलाइज कर लिया गया। गुलदार के पकड़े जाने के साथ ही गांव में पसरा खौफ कुछ कम हुआ है। हालांकि, अभी यह साफ नहीं है कि पकड़ा गया गुलदार ही बच्चे का हत्यारा है। डीएनए जांच के बाद ही इसकी पुष्टि होगी।

शुक्रवार सुबह करीब पांच बजे आईटीबीपी कैंप के पास गुलदार की लोकेशन मिलने के बाद वन विभाग में हलचल मच गई। एसडीओ सुनील कुमार के नेतृत्व में वन विभाग की टीम तत्काल मौके पर पहुंची। नैनीताल



जू से बुलाए गए वरिष्ठ पशु चिकित्सक एवं ट्रेंकुलाइज विशेषज्ञ डॉ. हिमांशु पांगती ने मोर्चा संभाला और गुलदार को ट्रेंकुलाइज कर लिया। पकड़े गए गुलदार को अल्मोड़ा जू भेजा जा रहा है। डीएफओ धेनु पुरुषोत्तम के मुताबिक पकड़ा गया गुलदार नर और पूरी तरह वयस्क है। उसका विचरण क्षेत्र मायावती के जंगलों से लेकर बनगांव, झील क्षेत्र और झूमाधुरी के जंगलों तक फैला हुआ था। गुलदार की तलाश में वन विभाग ने सुई गांव और आसपास के जंगलों में कैमरे लगाए थे। वनकर्मी रातभर निगरानी कर रहे थे। कड़ाके की ठंड के बीच 17 दिनों तक चले इस अभियान ने वनकर्मियों की भी परीक्षा ली। चार नवंबर को 13 वर्षीय बच्चे की मौत के बाद से सुई गांव में दहशत का माहौल था। गुलदार के खौफ ने बच्चों की स्कूल आवाजाही तक रोक दी थी। दीपावली के पटाखों के शोर के बीच गुलदार लगातार अपनी लोकेशन बदलता रहा और वन विभाग की टीम को खूब छकाया। बाद में सामाजिक कार्यकर्ता सचिन जोशी ने बच्चों को घर से स्कूल लाने और वापस पहुंचाने की व्यवस्था की, ताकि उनकी पढ़ाई प्रभावित न हो। प्रशासन ने गांव में सोलर लाइटें भी लगवाई थीं। डीएफओ ने कहा कि पकड़े गए गुलदार के नरभक्षी होने की पुष्टि अभी नहीं हुई है। डीएनए जांच के बाद ही स्थिति साफ होगी। तब तक क्षेत्र में लगाए गए पिंजरे नहीं हटाए जाएंगे। जिलाधिकारी मनीष कुमार अवकाश के दौरान भी लगातार पूरे अभियान की जानकारी लेते रहे। उन्होंने वन विभाग की टीम और ग्रामीणों के सहयोग की सराहना की। इधर, चिड़ियाडूंगा गांव में भी पिछले तीन-चार दिनों से गुलदार दिखाई देने और उसकी आवाज सुनाई देने की सूचना है। हालांकि, वहां दिखा गुलदार कौन है, इसकी पुष्टि नहीं हुई है।

17 दिन परिवार से दूर रहे वनकर्मी, अब मनाएंगे बूढ़ी दीपावली

गुलदार को पकड़ने के लिए एसडीओ सुनील कुमार के नेतृत्व में करीब 15 वनकर्मी लगातार 17 दिनों तक मोर्चे पर डटे रहे। दिन-रात जंगलों में गश्त और निगरानी के चलते कर्मचारी अपने परिवारों के साथ दीपावली तक नहीं मना सके। अब गुलदार के पकड़े जाने के बाद टीम ने राहत की सांस ली है। वनकर्मियों का कहना है कि अब वे परिवार के साथ बूढ़ी दीपावली मनाएंगे।

तीन-चार दिन में मिलता है पानी, 2027 के अंत तक लोहाघाट की प्यास बुझाने की तैयारी

84.45 करोड़ की सरयू लिफ्ट पेयजल योजना का काम तेज, अब तक बिछी तीन किमी वितरण लाइन; वन विभाग की एनओसी का इंतजार

के.के.पी संवाददाता

लोहाघाट। तीन से चार दिन के अंतराल में पेयजल आपूर्ति और पानी के लिए जूझते लोगों को जल्द राहत मिलने की उम्मीद जगी है। सब कुछ योजना के मुताबिक रहा तो वर्ष 2027 के अंत तक लोहाघाट नगरवासियों को सरयू लिफ्ट पेयजल योजना से नियमित पानी मिलने लगेगा। लंबे समय से पेयजल संकट झेल रहे नगर के लोगों, खासकर महिलाओं के लिए यह योजना बड़ी राहत साबित हो सकती है।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने लोहाघाट की पेयजल समस्या को देखते हुए सरयू लिफ्ट पेयजल योजना की सौगात दी थी। इसके लिए 84.45 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गई है, जिसमें से 10.50 करोड़ रुपये अवमुक्त हो चुके हैं। वर्तमान में नगर क्षेत्र में वितरण लाइन बिछाने का काम तेजी से चल रहा है। अब तक करीब तीन किलोमीटर पाइपलाइन बिछाई जा चुकी है। जल निगम के अधिशासी अभियंता अशोक स्वरूप के अनुसार विभाग ने पूरी वितरण लाइन के पाइपों की व्यवस्था कर ली है। इसके अलावा चार किलोमीटर लंबी सप्लाई मेन लाइन के पाइप भी पहुंच चुके हैं। वन विभाग की आपत्तियों के चलते निर्माण कार्य में अड़चन आई है। संबंधित प्रस्ताव भारत सरकार को भेजे गए थे। कुछ अतिरिक्त जानकारियां मांगी गई थीं, जिन्हें पूरा कर दोबारा भेज दिया गया है। उम्मीद है कि एक माह के भीतर आपत्ति दूर हो जाएगी और निर्माण कार्य में तेजी आएगी। उन्होंने बताया कि सरयू नदी से करीब 1600 मीटर की ऊंचाई तक पानी पहुंचाने के लिए चार स्टेज बनाई जाएंगी। इसके बाद मरोड़खान से लोहाघाट तक पानी की सप्लाई की जाएगी। योजना के तहत 29 किलोमीटर वितरण लाइन, 16 किलोमीटर राइजिंग मेन और 5.30 किलोमीटर सप्लाई मेन लाइन बिछाई जानी है। इधर, जिलाधिकारी मनीष कुमार भी योजना की लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं। उनका प्रयास है कि सभी विभागीय अड़चनों को दूर कर निर्माण कार्य में तेजी लाई जाए। वन विभाग से जल्द एनओसी मिलने की उम्मीद है।

पानी के इंतजार में नगरवासी

लोहाघाट में तीन-चार दिन बाद होने वाली पेयजल आपूर्ति ने लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी को मुश्किल बना दिया है। पानी की किल्लत का असर नगर के विकास और यहां रहने वाले लोगों पर भी पड़ रहा है। ऐसे में 2027 के अंत तक योजना से जलापूर्ति शुरू होने का लक्ष्य नगरवासियों के लिए बड़ी उम्मीद है।

किसान महासभा की तालाबंदी की चेतावनी का दिखा असर, बागजाला में सड़क की मरम्मत और डामरीकरण का काम शुरू

यह जनता के संघर्ष की जीत, किसान महासभा

एकताबद्ध संघर्ष से ही मालिकाना अधिकार और राजस्व गांव के अधिकार को भी जीता जायेगा

के.के.पी संवाददाता

हल्द्वानी। अखिल भारतीय किसान महासभा बागजाला कमेटी द्वारा जनता के साथ मिलकर चलाये गये लंबे संघर्ष के बाद आखिरकार बागजाला में सड़क की मरम्मत का काम शुरू हो गया है. गौरतलब है कि 28 अक्टूबर को लोक निर्माण विभाग, हल्द्वानी के अधिशासी अभियंता कार्यालय पहुंचकर किसान महासभा प्रतिनिधिमंडल ने बागजाला (गौलापार) में सड़क की मरम्मत का बजट आवंटित होने और काम का बार बार आश्वासन देने के बाद भी कार्य नहीं किये जाने पर ग्रामीणों



के रोष का प्रकटीकरण करते हुए दीपावली के बाद भी कार्य शुरू नहीं होने की स्थिति में आंदोलन और विभाग में तालाबंदी करने की चेतावनी दी थी. इस जनदबाव में बागजाला में सड़क की मरम्मत का काम शुरू हो गया है. जो कि किसान महासभा के नेतृत्व में चले आंदोलन और जनता की एकता और संघर्ष की जीत है.

उल्लेखनीय है कि किसान महासभा के द्वारा मार्च से लेकर अब तक कई दौर की वार्ताओं में बागजाला में विभाग द्वारा सड़क की मरम्मत तत्काल प्रभाव से किये जाने का आश्वासन दिया गया था. साथ इसके लिए बजट 13.31 लाख रुपये भी लोक निर्माण विभाग के खाते में आ गया था. लेकिन कई माह बीत जाने के बाद भी बागजाला (गौलापार) में सड़क की मरम्मत के काम में एक भी इंच की प्रगति नहीं हुई थी. अब अनिश्चितकालीन तालाबंदी की चेतावनी के बाद सड़कों की मरम्मत का कार्य शुरू हुआ है.

भाकपा माले नैनीताल जिला सचिव डॉ कैलाश पाण्डेय ने कहा कि, जिस तरह बागजाला की जनता के धैर्यपूर्वक किये गये एकताबद्ध संघर्ष से सड़क के डामरीकरण का कार्य शुरू हुआ है उसी तरह एकता और आंदोलन के बल पर बागजाला गांव में जल जीवन मिशन की रुकी हुई योजना, निर्माण कार्यों पर लगी रोक भी हटेगी और भूमि के मालिकाना अधिकार को हासिल कर राजस्व गांव के अधिकार को भी जीता जायेगा. इस अवसर पर डॉ कैलाश पाण्डेय, डॉ उर्मिला रैस्वाल, वेद प्रकाश, विमला देवी, हेमा आर्य, दीवान सिंह बर्गली, मीना भट्ट, दौलत सिंह कुंजवाल, महेन्द्र आर्य, हेमा देवी, दिनेश चंद्र, गोपाल सिंह बिष्ट, चन्द्रप्रकाश, प्रेम सिंह नयाल, यशपाल, चंदन सिंह मटियाली, हीरा देवी, दीपा देवी, उमा, हरक सिंह बिष्ट आदि मौजूद रहे.

नन्हीं परी कशिश को न्याय की मांग के लिए जनता में उबाल, सड़कों पर उतरे लोग

के.के.पी संवाददाता

हल्द्वानी। नन्हीं परी कशिश हत्याकांड के 12 वर्ष बीत जाने के बाद एक बार फिर लोग सड़कों पर आने लगे हैं। मांग है कि अगर नन्हीं परी हत्याकांड के मुख्य आरोपियों को सुप्रीम कोर्ट ने बरी कर दिया, तो आखिर नन्हीं परी का कातिल कौन है?

2014 में हुई इस घटना पर 2016 में निचली अदालत ने और 2018 में हाईकोर्ट ने मुख्य आरोपियों अख्तर अली और प्रेमपाल को फांसी की सजा सुनाई थी। 10 सितंबर 2025 को सुप्रीम कोर्ट ने मुख्य आरोपियों को बरी कर दिया। इसके बाद उत्तराखंड की सड़कों पर आंदोलन शुरू हो गए। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने परिजनों से वादा किया था कि सरकार सुप्रीम कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दायर



करेगी। एक वर्ष बीतने के बाद भी पुनर्विचार याचिका का कोई पता नहीं है, इसलिए एक बार फिर उत्तराखंड की जनता सड़कों पर आने लगी है। जनता में आक्रोश है। बुध पार्क में पहाड़ी आर्मी के नेतृत्व में कई संगठनों ने इस आंदोलन में प्रतिभाग किया।

पहाड़ी आर्मी के अध्यक्ष हरीश रावत ने कहा कि मुख्यमंत्री को पुनर्विचार याचिका का स्टेटस जनता के बीच सार्वजनिक करना चाहिए। यदि पूरी जानकारी नहीं दी गई तो उत्तराखंड की माताओं-बहनों से माफी मांगनी होगी। उन्होंने मांग की कि जिस तरह जैन प्रकरण में जांच खुल सकती है, उसी तरह नन्हीं परी के केस में भी सीबीआई जांच की मांग की जाए।

उत्तराखंड परिवर्तन पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष प्रभात ध्यानी और समाजिक कार्यकर्ता संतोष नेगी ने कहा कि राज्य में महिला सुरक्षा और महिला शोषण की बढ़ती घटनाएं चिंताजनक हैं। नन्हीं परी हत्याकांड के दोषियों को तुरंत फांसी देनी होगी।

प्रेमा मेर, दीपा पांडे और नीमा भट्ट ने कहा कि राज्य में महिला शोषण की घटनाओं को देखकर दुख होता है और नन्हीं परी हत्याकांड सबसे दर्दनाक और जघन्य अपराध है। इसमें अपराधी को फांसी नहीं दी गई तो उत्तराखंड की महिलाएं स्वयं हथियार उठाने के लिए मजबूर होंगी।

स्वर्ण शक्ति समाज संगठन के भुवन भट्ट और तेज कार्की ने कहा कि राज्य की हालत बद से बदतर है। समय रहते नीतियां और समाधान नहीं किए गए तो आने वाला समय और भयानक होगा।

संपादकीय

रोहिंग्या नरसंहार पर आईसीजे का ऐतिहासिक फैसला

अत्याचार दुनियां के किसी भी हिस्से में क्यों न हो, उससे मानवता शर्मसार होती ही है। वर्तमान में यहां बात हम म्यांमार में हुए नरसंहार की कर रहे हैं, जिसे लेकर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने अहम फैसला सुनाया है। दरअसल म्यांमार में रोहिंग्या अल्पसंख्यक समुदाय के खिलाफ हुए नरसंहार पर अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) का फैसला केवल एक देश के अपराधों पर न्यायिक टिप्पणी नहीं है, बल्कि यह पूरी दुनिया के लिए मानवाधिकारों और अंतर्राष्ट्रीय कानून के प्रति अपनी प्रतिबद्धता साबित करने की चुनौती भी है। हेग स्थित अदालत ने 9-6 के बहुमत से म्यांमार को 2017 में राखाइन प्रांत में रोहिंग्या समुदाय के खिलाफ नरसंहार का जिम्मेदार ठहराया है। अदालत के इतिहास में यह पहला अवसर है, जब उसने किसी देश को नरसंहार करने का जिम्मेदार पाया है। इस फैसले ने उन लाखों लोगों की पीड़ा को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कानूनी मान्यता दी है, जिन्हें अपनी जमीन, घर और पहचान छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। अदालत ने अपने फैसले में स्पष्ट किया कि म्यांमार की सुरक्षा बलों की कार्रवाई को केवल उग्रवाद के खिलाफ अभियान बताकर उचित नहीं ठहराया जा सकता। सुनवाई के दौरान सामने आए साक्ष्यों के आधार पर अदालत ने माना कि रोहिंग्या नागरिकों की हत्या, महिलाओं के साथ व्यापक यौन हिंसा, बच्चों पर अत्याचार और गांवों को योजनाबद्ध तरीके से नष्ट करने की घटनाएं एक बड़े उद्देश्य का हिस्सा थीं। अदालत के अनुसार, उपलब्ध साक्ष्यों से यही निष्कर्ष निकलता है कि म्यांमार का इरादा उत्तरी राखाइन में रोहिंग्या आबादी के एक बड़े हिस्से को समाप्त करना था। फैसले में करीब 10 हजार लोगों की हत्या के साक्ष्यों का उल्लेख किया गया है।

इस मामले की शुरुआत नवंबर 2019 में हुई थी, जब अफ्रीकी देश गाम्बिया ने 1948 के संयुक्त राष्ट्र नरसंहार रोकथाम और दंड संबंधी समझौते के तहत म्यांमार के खिलाफ मुकदमा दायर किया। उसे इस्लामिक सहयोग संगठन के 57 देशों का समर्थन मिला। जनवरी 2020 में अदालत ने म्यांमार को रोहिंग्या समुदाय की सुरक्षा और नरसंहार से जुड़े साक्ष्यों को सुरक्षित रखने के अंतरिम निर्देश भी दिए गए थे। लंबी कानूनी प्रक्रिया के बाद आया मौजूदा फैसला इस बात का प्रमाण है कि छोटे देश भी अंतर्राष्ट्रीय कानून के सहारे शक्तिशाली देशों को जवाबदेह ठहराने की पहल कर सकते हैं। इस फैसले का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है कि रोहिंग्या संकट अब केवल म्यांमार का आंतरिक मामला नहीं रह गया है। 2017 की सैन्य कार्रवाई के बाद सात लाख से अधिक रोहिंग्या बांग्लादेश भागने को मजबूर हुए। आज भी बड़ी संख्या में शरणार्थी कॉक्स बाजार के शिविरों में कठिन परिस्थितियों में रह रहे हैं। उनके सामने भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और सुरक्षा जैसी गंभीर समस्याएं हैं। बांग्लादेश पर भी इन शरणार्थियों की मेजबानी का आर्थिक और सामाजिक दबाव बना हुआ है। ऐसे में अदालत का सुरक्षित, स्वैच्छिक और सम्मानजनक वापसी का निर्देश महत्वपूर्ण है, लेकिन वापसी तभी संभव होगी जब म्यांमार में उनकी नागरिकता, पहचान, संपत्ति और सुरक्षा के अधिकार सुनिश्चित हों। अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रमों के संदर्भ में भी यह फैसला दूरगामी महत्व रखता है। गाजा में इजराइल के सैन्य अभियान को लेकर दक्षिण अफ्रीका ने अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में नरसंहार समझौते के उल्लंघन का मामला दायर किया है। इसी तरह रूस-यूक्रेन युद्ध से जुड़ा विवाद भी नरसंहार समझौते के दायरे में अदालत के सामने है। म्यांमार के मामले में अदालत ने नरसंहार के इरादे को साबित करने के लिए जिस तरह परिस्थितिजन्य साक्ष्यों और घटनाओं के व्यापक स्वरूप का मूल्यांकन किया है, उस पर दूसरे मामलों में भी चर्चा होगी।

बुद्धू बक्से से लाइव दुनिया तक : एक स्क्रीन में सिमटी दुनिया

योगेश कुमार गोयल

वर्ष 1925 में टेलीविजन का आविष्कार स्कॉटिश इंजीनियर तथा अन्वेषक जॉन लॉगी बेयर्ड द्वारा किया गया था। वे दुनिया के प्रथम वैज्ञानिक थे, जिन्होंने 26 जनवरी 1926 को ब्रिटेन के लंदन शहर में स्थित रॉयल इंस्टीट्यूशन से लंदन के पश्चिम में स्थित 'सोहो' नामक स्थान पर टेलीविजन संदेशों का सफल प्रसारण करके दिखाया था। उनके द्वारा बनाए गए मैकेनिकल टेलीविजन के बाद 1927 में फिलो फॉर्न्सवर्थ द्वारा इलैक्ट्रॉनिक टेलीविजन का आविष्कार किया गया, जिसका 3 सितम्बर 1928 को उनके द्वारा सार्वजनिक प्रदर्शन किया गया। कुछ असफलताओं के बाद सदी के महान् आविष्कार टेलीविजन को पूरी तरह इलैक्ट्रॉनिक रूप देने में सफलता मिली वर्ष 1934 में। बिजली से चलने वाले उस अद्भुत इलैक्ट्रॉनिक उपकरण की ही बदौलत आगामी वर्षों में कई आधुनिक टीवी स्टेशन खोले दिए? जिसके बाद लोग बड़ी संख्या में टीवी खरीदने लगे और टेलीविजन धीरे-धीरे मनोरंजन एवं समाचार का महत्वपूर्ण माध्यम बनता गया।

इलैक्ट्रॉनिक टेलीविजन ने अपने आविष्कार के करीब 32 साल बाद भारत में पहला कदम रखा। भारत में टीवी का पहला प्रसारण प्रायोगिक तौर पर दिल्ली में दूरदर्शन केन्द्र की स्थापना के साथ 15 सितम्बर 1959 को शुरू किया गया। उस समय टीवी पर सप्ताह में केवल तीन दिन ही मात्र तीस-तीस मिनट के कार्यक्रम आते थे लेकिन इतने कम समय के बेहद सीमित कार्यक्रमों के बावजूद भी टीवी के प्रति लोगों का लगाव बढ़ता गया और यह बहुत जल्द लोगों की आदत का अहम हिस्सा बन गया। दूरदर्शन का व्यापक प्रसार हुआ वर्ष 1982 में दिल्ली में हुए एशियाई खेलों के आयोजन के प्रसारण के बाद। दूरदर्शन द्वारा अपना दूसरा चैनल 26 जनवरी 1993 को शुरू किया गया और उसी के बाद दूरदर्शन का पहला चैनल डीडी-1 और दूसरा नया चैनल डीडी-2 के नाम से लोकप्रिय हो गया, जिसे बाद में 'डीडी मैट्रो' नाम दिया गया। भले ही टीवी के आविष्कार के इन दशकों में इसका स्वरूप और तकनीक पूरी तरह बदल चुकी है लेकिन इसके कार्य करने का मूलभूत सिद्धांत अभी भी पहले जैसा ही है।

'ब्लैक एंड व्हाइट' बुद्धू बक्सा अपने सहज प्रस्तुतिकरण के दौर से गुजरते हुए कब आधुनिकता के साथ कदमताल करते हुए सूचना क्रांति का सबसे बड़ा हथियार और हर घर की अहम जरूरत बन गया, पता ही नहीं चला। यह दुनिया जहान की खबरें देने और राजनीतिक गतिविधियों की सूचनाएं उपलब्ध कराने के अलावा मनोरंजन, शिक्षा तथा समाज से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाओं को उपलब्ध कराने, प्रमुख आर्थिक और सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए समूचे विश्व के ज्ञान में वृद्धि करने में मदद करने वाला एक सशक्त जनसंचार माध्यम है। यह संस्कृतियों और रीति-रिवाजों के आदान-प्रदान के रूप में मनोरंजन का सबसे सस्ता साधन है, जो तमाम महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए पूरी दुनिया के ज्ञान में असीम वृद्धि करने में मददगार साबित हो रहा है। मानव जीवन में टीवी की बढ़ती भूमिका तथा इसके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं पर चर्चा करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 21 नवम्बर को 'विश्व टेलीविजन दिवस' मनाया जाता है।

संचार और वैश्वीकरण में टेलीविजन की बेहद महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए इसके महत्वों को रेखांकित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा 'विश्व टेलीविजन दिवस' मनाने की जरूरत महसूस की गई और आम जिंदगी में टीवी के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए आखिरकार टीवी के आविष्कार के करीब सात दशक बाद वर्ष 1996 में 'विश्व टेलीविजन दिवस' मनाने की घोषणा कर दी गई। दरअसल टीवी के आविष्कार को सूचना के क्षेत्र में एक ऐसी क्रांति का आविष्कार माना गया है, जिसके जरिये समस्त दुनिया हमारे करीब रह सकती है और हम अब घर बैठे ही दुनिया के किसी भी कोने में होने वाली घटनाओं को लाइव देख सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा पहली बार 21 तथा 22 नवम्बर 1996 को विश्व टेलीविजन मंच का आयोजन करते हुए टीवी के महत्व पर चर्चा करने के लिए मीडिया को प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराया गया था। उस दौरान विश्व को परिवर्तित करने में टीवी के योगदान और टीवी के विश्व पर पड़ने वाले प्रभावों के संदर्भ में व्यापक चर्चा की गई थी। उसी के बाद संयुक्त राष्ट्र महासभा में 17 दिसम्बर 1996 को एक प्रस्ताव पारित करते हुए प्रतिवर्ष 21 नवम्बर को विश्व टेलीविजन दिवस मनाने का निर्णय लिया गया और तभी से प्रतिवर्ष 21 नवम्बर को ही यह दिवस मनाया जाता रहा है। हालांकि किसी भी वस्तु के अच्छे और बुरे दो अलग-अलग पहलू भी हो सकते हैं। कुछ ऐसा ही सूचना एवं संचार क्रांति के अहम माध्यम टीवी के मामले में भी है। एक ओर जहां यह मनोरंजन और ज्ञान का सबसे बड़ा स्रोत बन चुका है और नवीनतम सूचनाएं प्रदान करते हुए समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालता है, वहीं इसके नकारात्मक प्रभाव भी सामने आते रहे हैं। टेलीविजन की ही वजह से ज्ञान, विज्ञान, मनोरंजन, शिक्षा, चिकित्सा इत्यादि तमाम क्षेत्रों में बच्चों से लेकर बड़ों तक की सभी जिज्ञासाएं शांत होती हैं। अगर नकारात्मक पहलुओं की बात करें तो टीवी के बढ़ते प्रचलन के साथ-साथ इस पर प्रदर्शित होते अश्लील, हिंसात्मक, अंधविश्वासों का बीजारोपण करने तथा भय पैदा करने वाले कार्यक्रमों के कारण हमारी संस्कृति, आस्था और नैतिक मूल्य बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। टीवी पर विभिन्न कार्यक्रमों में लगातार हत्या और बलात्कार जैसे दृश्य दिखाने से बच्चों का मानसिक विकास प्रभावित होता है। मौजूदा समय में टीवी मीडिया की सबसे प्रमुख ताकत के रूप में उभर रहा है और मीडिया का हमारे जीवन में इस कदर हस्तक्षेप बढ़ गया है कि टीवी के वास्तविक महत्व के बारे में अब लोगों को पर्याप्त जानकारी ही नहीं मिल पाती।

देश में जहां दूरदर्शन की शुरूआत के बाद दशकों तक दूरदर्शन के ही चैनल प्रसारित होते रहे, वहीं 1990 के दशक में निजी चैनल शुरू होने की इजाजत मिलने के साथ एक नई सूचना क्रांति का आगाज हुआ। इन तीन दशकों में निजी चैनलों को लगातार मिलते लाइसेंस के चलते अब देशभर में टीवी पर करीब एक हजार चैनल प्रसारित होते हैं। इससे दूरदर्शन जैसे माध्यम कमजोर हो गए हैं और अब हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं, जहां सूचना व संचार माध्यमों ने हमें इस कदर अपना गुलाम बना लिया है कि इनके अभाव में जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकते। हालांकि ढ़ेर सारे टीवी चैनलों की बदौलत जहां ज्ञान, विज्ञान, शिक्षा, सूचना आदि के स्रोत बढ़े हैं, वहीं चिंताजनक स्थिति यह है कि टीआरपी की बढ़ती होड़ में बहुत से निजी टीवी चैनल जिस प्रकार गलाकाट प्रतिद्वंद्विता के चलते समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों की अनदेखी करते हुए दर्शकों के समक्ष कुछ भी परोसने को तैयार रहते हैं, उससे युवा पीढ़ी दिशाहीन हो रही है और जनमानस में गलत संदेशों का बीजारोपण होता है। इसीलिए मांग उठने लगी है कि दिशाहीन टीवी कार्यक्रमों के नकारात्मक प्रभावों पर अंकुश लगाने और अपसंस्कृति के प्रसार को रोकने के लिए इन पर कुछ कड़े कानूनी प्रतिबंधों का प्रावधान होना चाहिए।

(लेखक 36 वर्षों से पत्रकारिता में सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार और 'सागर से अंतरिक्ष तकः भारत की रक्षा क्रांति' सहित कई पुस्तकों के लेखक हैं)

बुद्धू बक्से से स्मार्ट मंच तक : टेलीविजन का बदलता सफर

सुनील कुमार महला

आज इंटरनेट और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) का युग है। कभी बुद्धू बक्सा कहा जाने वाला टेलीविजन आज इंटरनेट और आधुनिक तकनीक की मदद से एक स्मार्ट और संवादात्मक मंच बन चुका है। टेलीविजन सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का ऐसा सशक्त माध्यम रहा है, जिसने समाज को जोड़ने, लोगों को जागरूक करने और जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तकनीक के बदलते दौर में भी इसकी उपयोगिता और महत्त्व कम नहीं हुआ है।प्रत्येक वर्ष 21 नवंबर को विश्व टेलीविजन दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने की घोषणा संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 17 दिसंबर 1996 को प्रस्ताव संख्या 51/205 के माध्यम से की थी। दरअसल, 21 और 22 नवंबर 1996 को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में प्रथम विश्व टेलीविजन मंच आयोजित किया गया था। इसी आयोजन की स्मृति में संयुक्त राष्ट्र ने 21 नवंबर को विश्व टेलीविजन दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। उस समय टेलीविजन परिवार के सदस्यों के साथ बैठकर दुनिया को देखने और समझने का एक साझा माध्यम हुआ करता था।आज इंटरनेट, डिजिटल मीडिया और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के दौर में टेलीविजन का स्वरूप भले ही बदल गया हो, लेकिन यह न तो समाप्त हुआ है और न ही अप्रासंगिक हुआ है। बल्कि इसने समय और तकनीक के साथ स्वयं को विकसित किया है।

विश्व टेलीविजन दिवस मनाने के प्रमुख उद्देश्य

इस दिवस को मनाने के पीछे कई महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं। इनमें जनसंचार को बढ़ावा देना प्रमुख है, ताकि सूचनाओं और विचारों का अधिक से अधिक आदान-प्रदान हो सके। इसके साथ ही शिक्षा का प्रसार करना तथा ज्ञान, विज्ञान, तकनीक और सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा देना भी इसका उद्देश्य है। यह दिवस विभिन्न देशों, संस्कृतियों और समाजों के बीच आपसी समझ, सहयोग और सद्भाव विकसित करने का संदेश देता है। इसके माध्यम से स्वास्थ्य, पर्यावरण, महिला सशक्तीकरण, बाल अधिकार और सामाजिक समस्याओं जैसे विषयों के प्रति लोगों को जागरूक करने पर भी जोर दिया जाता है।इसके अलावा स्वतंत्र, निष्पक्ष और जिम्मेदार पत्रकारिता को प्रोत्साहित करना, विश्वसनीय एवं तथ्यपरक सूचनाओं का प्रसारण सुनिश्चित करना तथा विभिन्न भाषाओं, परंपराओं, कलाओं और सांस्कृतिक विरासत को व्यापक मंच प्रदान करना भी इसके प्रमुख उद्देश्यों में शामिल है।

टेलीविजन का बदलता स्वरूप और आज का दौर

डिजिटल क्रांति, इंटरनेट और सोशल मीडिया के इस दौर में टेलीविजन केवल समाचार और मनोरंजन तक सीमित नहीं रह गया है। आज यह शिक्षा, ज्ञान, व्यापार, खेल, विज्ञान और वैश्विक संवाद का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। घर बैठे देश-दुनिया की घटनाओं को देखना, ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ना, खेल प्रतियोगिताओं का सीधा प्रसारण देखना और विभिन्न विषयों की जानकारी प्राप्त करना अब आसान हो गया है। टेलीविजन के तकनीकी सफर पर नजर डालें तो इसकी शुरुआत ब्लैक एंड व्हाइट यानी श्वेत-श्याम प्रसारण से हुई थी। इसके बाद रंगीन टेलीविजन का दौर आया। फिर एलसीडी, एलईडी और स्मार्ट टीवी ने इसकी दुनिया बदल दी। आज इंटरनेट आधारित स्मार्ट टीवी और ओटीटी प्लेटफॉर्म के माध्यम से दर्शक अपनी पसंद के कार्यक्रम किसी भी समय देख सकते हैं। इस तरह टेलीविजन अब केवल देखने का माध्यम नहीं, बल्कि दर्शकों की पसंद के अनुसार सामग्री उपलब्ध कराने वाला एक संवादात्मक मंच बन गया है।

टेलीविजन शब्द का अर्थ और कुछ रोचक तथ्य

टेलीविजन शब्द दो अलग-अलग भाषाओं के मूल शब्दों से मिलकर बना है। इसमें टेली ग्रीक भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ है दूर और विजन लैटिन मूल का शब्द है, जिसका अर्थ है देखना। इस प्रकार टेलीविजन का अर्थ हुआ दूर बैठे किसी दृश्य को देखना। भारत में टेलीविजन प्रसारण का इतिहास भी काफी रोचक है। देश में 15 सितंबर 1959 को दिल्ली में प्रायोगिक टेलीविजन प्रसारण की शुरुआत हुई थी। यह प्रयोग यूनेस्को की सहायता से किया गया था। प्रारंभ में इसका उद्देश्य शिक्षा और विकास से जुड़ी जानकारी लोगों तक पहुंचाना था। वर्ष 1965 में यह नियमित टेलीविजन सेवा बन गया। वर्ष 1976 में दूरदर्शन को आकाशवाणी से अलग करके स्वतंत्र विभाग बनाया गया। इसके बाद 15 अगस्त 1982 को भारत में रंगीन टेलीविजन प्रसारण की शुरुआत हुई। उस वर्ष आयोजित एशियाई खेलों के प्रसारण ने रंगीन टेलीविजन को देशभर में लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।टेलीविजन के इतिहास की एक और यादगार घटना 20 जुलाई 1969 की है। इसी दिन अपोलो-11 मिशन के दौरान अंतरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग ने पहली बार चंद्रमा की सतह पर कदम रखा था। इस ऐतिहासिक घटना का टेलीविजन पर सीधा प्रसारण किया गया था। दुनिया के करोड़ों लोगों ने घर बैठे मानव इतिहास की इस बड़ी उपलब्धि को देखा था।बहुत कम लोग जानते होंगे कि दूरदर्शन का प्रसिद्ध आंखों जैसा प्रतीक चिह्न 1970 के दशक में विकसित किया गया था। समय के साथ यह भारतीय टेलीविजन की एक विशिष्ट पहचान बन गया।इसी तरह वर्ष 1975-76 में सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट (एसआईटीई) के तहत नासा और इसरो के सहयोग से छह राज्यों के लगभग 2,400 गांवों तक शैक्षिक कार्यक्रम पहुंचाए गए थे। इस प्रयोग का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, कृषि, स्वास्थ्य और विकास से जुड़ी जानकारियों का प्रसार करना था।वहीं, 1990 के दशक में केबल और सैटेलाइट चैनलों के आगमन ने भारतीय टेलीविजन की दुनिया में बड़ा बदलाव ला दिया। दर्शकों को पहली बार अनेक निजी और विदेशी चैनलों के विकल्प मिलने लगे। इससे समाचार, मनोरंजन, खेल और अन्य कार्यक्रमों के प्रसारण में विविधता आई तथा टेलीविजन का विस्तार तेजी से हुआ।

बदलते दौर में टेलीविजन के समक्ष चुनौतियां

आज के बदलते समय में टेलीविजन के सामने कई चुनौतियां भी हैं। डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया की बढ़ती लोकप्रियता के बीच अपनी प्रासंगिकता बनाए रखना इसकी सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। आज दर्शकों के पास मोबाइल फोन और इंटरनेट के माध्यम से सूचनाएं प्राप्त करने के अनेक विकल्प हैं। ऐसे में टेलीविजन को अपनी सामग्री और प्रस्तुति में निरंतर सुधार करना होगा।दूसरी ओर, टीआरपी की अंधी दौड़ में पत्रकारिता के मूल्यों, निष्पक्षता और विश्वसनीयता को बनाए रखना भी बेहद जरूरी है। फर्जी खबरों, भ्रामक सूचनाओं और अफवाहों के प्रसार पर अंकुश लगाना समय की मांग है। समाचारों को सनसनीखेज बनाने के बजाय तथ्यपरक और जनहितकारी सामग्री को प्राथमिकता देनी होगी।इसके साथ ही, मनोरंजन के नाम पर परोसी जा रही अश्लीलता, हिंसा और नकारात्मकता से बचना आवश्यक है।

हिंदी साहित्य में पुरुष विमर्श

विवेक रंजन श्रीवास्तव

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श ने सदियों से मौन रखी गई आधी आबादी को स्वर दिया है। उसने सामाजिक रूढ़ियों, लैंगिक असमानता, शोषण और पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर सार्थक प्रश्न उठाए हैं। यह साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लेकिन इसी विमर्श के समानांतर एक प्रश्न अब अधिक प्रासंगिक हो रहा है। क्या पुरुष अपने भीतर के संघर्षों, भावनात्मक वंचनाओं और सामाजिक अपेक्षाओं पर खुलकर बात कर पा रहा है? क्या पुरुष केवल सत्ता और विशेषाधिकार का प्रतिनिधि है, अथवा वह भी कुछ अदृश्य बेड़ियों में बंधा है, जिन्हें समाज ने मर्दानगी का नाम देकर उसके गले में डाल रखा है? यही प्रश्न हिंदी साहित्य में पुरुष विमर्श की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

पुरुष विमर्श का आशय स्त्री विमर्श का विरोध या उसके समानांतर कोई प्रतिद्वंद्वी आंदोलन खड़ा करना नहीं है। इसका उद्देश्य पुरुष होने की सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक संरचना को समझना है। जिस प्रकार स्त्री से त्याग, सहनशीलता, मर्यादा और समर्पण की अपेक्षा की गई, उसी प्रकार पुरुष से साहस, कठोरता, कमाऊपन और हर परिस्थिति में मजबूत बने रहने की अपेक्षा की गई। स्त्री रोए तो संवेदनशील, पुरुष रोए तो कमजोर! स्त्री घर संभाले तो कर्तव्यनिष्ठ, पुरुष घर संभाले तो पत्नी के अधीन! ये सामाजिक धारणाएं दोनों के व्यक्तित्व को सीमित करती हैं।

बचपन से ही लड़के को सिखाया जाता है कि लड़के रोते नहीं। उसे बहादुर बनना है, डरना नहीं है और परिवार की जिम्मेदारी उठानी है। बड़ा होकर वह पिता बनता है तो परिवार की आर्थिक सुरक्षा उसका दायित्व बन जाती है। नौकरी में असफलता हो, व्यवसाय में घाटा हो, संतान की अपेक्षाएं पूरी न कर पाने की विवशता हो या वृद्धावस्था में उपयोगिता खोने का अहसास, उससे अपेक्षा यही रहती है कि वह मजबूत बना रहे। उसके आंसुओं, आशंकाओं और असुरक्षाओं के लिए समाज ने कोई सहज जगह नहीं बनाई। इस तरह पुरुष की सामाजिक छवि कई बार उसके भीतर के मनुष्य पर भारी पड़ जाती है।

हिंदी साहित्य में पुरुष पात्रों की पड़ताल करें तो यह संघर्ष अनेक रूपों में दिखाई देता है। प्रेमचंद के गोदान का होरी केवल एक किसान नहीं, बल्कि परिवार, परंपरा, कर्ज, सामाजिक प्रतिष्ठा और नैतिकता के बीच पिसता हुआ भारतीय पुरुष है। वह परिवार को बचाने और सामाजिक मर्यादा निभाने की कोशिश में स्वयं टूटता जाता है। उसकी त्रासदी में आर्थिक शोषण के साथ उस पुरुष की विवशता भी है, जो अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त नहीं हो सकता। नई कहानी आंदोलन में मध्यवर्गीय पुरुष का अकेलापन, संबंधों की विफलता, मानसिक कुंठा और अस्तित्वगत संकट उभरकर सामने आए। मोहन राकेश के नाटकों में संबंधों की जटिलता और पुरुष मन की बेचैनी दिखाई देती है, वहीं निर्मल वर्मा के कथा संसार में अकेलापन, स्मृति और आत्मसंघर्ष के अनेक सूक्ष्म रंग मिलते हैं। इन रचनाकारों को किसी एक विमर्श तक सीमित करना उचित नहीं, लेकिन उनकी रचनाएं पुरुष मन को समझने के महत्वपूर्ण संदर्भ उपलब्ध कराती हैं।

आज पुरुष विमर्श की जमीन और विस्तृत हुई है। स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता, बदलती पारिवारिक संरचना, एकल परिवार, प्रवास और डिजिटल जीवन ने पुरुष की पारंपरिक भूमिका को बदल दिया है। अब पति और पत्नी दोनों कमाते हैं, निर्णय लेते हैं और बच्चों की परवरिश में भागीदारी निभाते हैं। यह परिवर्तन स्वागतयोग्य है। लेकिन मानसिकता में बदलाव उतनी तेजी से नहीं आया है।

दुनियाँ की तीन महाशक्तियों का शेनझेन में इतिहास का सबसे बड़ा कूटनीतिक महा-मिलन !

एडवोकेट किशन सनमुख़दास भावनानी

ट्रंप-पुतिन- जिनपिंग ने रची नई विश्व व्यवस्था की पटकथा? परमाणु से अर्थव्यवस्था तक, युद्ध से व्यापार तक 2040 की वैश्विक रणनीति पर महामंथन !क़्या जन्म लेगा नया याल्टा 2.0? भारत के लिए क्या हैं इसके मायने? भारत की बढ़ेगी ताकत या बढ़ेंगी चुनौतियां? -समग्र अंतरराष्ट्रीय महा-विश्लेषण

ट्रंप-पुतिन-जिनपिंग की ऐतिहासिक महात्रिमूर्ति! शेनझेन में 'याल्टा 2.0' का आगाज,परमाणु हथियारों से यूक्रेन युद्ध तक दुनिया की नई व्यवस्था बनाने का महा-मंथन?

तीन महाशक्तियां,एक मेज और पूरी दुनिया का भविष्य! शेनझेन में ट्रंप-पुतिन- जिनपिंग का ऐतिहासिक महा -मिलन-क़्या यूक्रेन युद्ध पर विराम, परमाणु हथियारों पर लगाम और अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध का निकलेगा समाधान? क़्या बदलने जा रहा है दुनियाँ का शक्ति संतुलन?

वैश्विक स्तपर दुनियाँ की राजनीति में 19 नवंबर 2026 का दिन एक ऐतिहासिक कूटनीतिक घटनाक्रम के रूप में दर्ज हो सकता है।चीन के शेनझेन शहर में आयोजित 33 वें एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) शिखर सम्मेलन के अवसर पर अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की पहली औपचारिक त्रिपक्षीय बैठक ने पूरी दुनियाँ का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। दुनियाँ की तीन प्रमुख परमाणु शक्तियों के सर्वोच्च नेताओं का एक ही मेज पर बैठना केवल एकसामान्य कूटनीतिक मुलाकात नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन,अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा,आर्थिक प्रतिस्पर्धा और भविष्य की विश्व व्यवस्था के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाक्रम है। इस बैठक को अंतरराष्ट्रीय विश्लेषकों के बीच 'याल्टा 2.0' की संज्ञा भी दी जा रही है।हालांकि, अभी इसे 1945 के याल्टा सम्मेलन जैसी निर्णायक विश्व-व्यवस्था बनाने वाली बैठक मान लेना जल्दबाजी होगी। मैं एडवोकेट किशन ससनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र जय मानता हूं कि असली महत्व इस बात का होगा कि नेताओं के वक्तव्यों को कितने ठोस समझौतों और व्यावहारिक परिणामों में बदला जाता है।

साथियों बात अगर हम शेनझेन में तीनों नेताओं की आमने-सामने बातचीत,क्या इतिहास दोहराने की तैयारी?को समझने की करें तो,इस ऐतिहासिक बैठक का आयोजन शेनझेन स्थित काइलिन विला में एपीईसी सम्मेलन के इतर हुआ।इससे पहले 18 नवंबर को तीनों नेता स्वागत समारोह में एक साथ दिखाई दिए थे।चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप का हवाई अड्डे पर स्वयं पहुंचकर स्वागत किया,जिसे चीन- अमेरिका संबंधों में विशेष कूटनीतिक महत्व के संकेत के रूप में देखा गया।19 नवंबर को ट्रंप ने पहले पुतिन के साथ अलग बातचीत की और उसके बाद जिनपिंग के साथ द्विपक्षीय बैठक की।फिर तीनों नेता त्रिपक्षीय वार्ता के लिए एक ही मेज पर बैठे।इस बैठक में ट्रंप ने कहा कि तीनों देश दुनिया के सबसे बड़े देशों में शामिल हैं और पूरी मानवता को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर उनके बीच खुला, सम्मानजनक और सकारात्मक संवाद होना विशेष जिम्मेदारी है।उन्होंने इसे इतिहास बनाने वाला अवसर बताया। जिनपिंग ने कहा कि इतिहास बताता है कि जब बड़ी शक्तियां सद्भाव से रहती हैं तो दुनिया में शांति रहती है, लेकिन उनके बीच टकराव से वैश्विक अस्थिरता पैदा होती है। पुतिन ने भी कहा कि तीनों देशों के बीच क्षेत्रीय संघर्षों के समाधान में अनेक साझा हित मौजूद हैं। इस प्रकार शुरुआती वक्तव्यों में तीनों नेताओं ने अपने- अपने दृष्टिकोण से वैश्विक शांति, स्थिरता और सहयोग का संदेश दिया।

साथियों बात अगर हम परमाणु हथियारों पर सबसे बड़ा मंथन,क्या दुनिया को मिलेगा परमाणु युद्ध के खतरे से छुटकारा? को समझने की करें तो,इस बैठक का सबसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील विषय परमाणु हथियारों पर नियंत्रण रहा। अमेरिका, रूस और चीन दुनिया की तीन प्रमुख परमाणु शक्तियां हैं और इनके बीच किसी भी प्रकार का समझौता वैश्विक सुरक्षा के लिए दूरगामी परिणाम पैदा कर सकता है। ट्रंप ने स्पष्ट कहा कि तीनों देशों के पास परमाणु हथियारों के भंडार हैं और वे दुनिया में परमाणु हथियारों की संख्या घटाने तथा इनके इस्तेमाल के जोखिम को कम करने पर चर्चा करने की विशिष्ट स्थिति में हैं। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि किसी देश के राष्ट्रपति के लिए परमाणु हथियारों को छोड़ना आसान निर्णय नहीं होता। दूसरी तरफ जिनपिंग ने परमाणु हथियारों पर व्यापक प्रतिबंध लगाने और उन्हें पूरी तरह समाप्त करने की अपील की। उनका कहना था कि परमाणु युद्ध न तो जीता जा सकता है और न ही उसे लड़ा जाना चाहिए।उन्होंने परमाणु हथियार मुक्त विश्व की परिकल्पना पर जोर दिया। यहां एक महत्वपूर्ण अंतर समझना आवश्यक है कि परमाणु निरस्त्रीकरण की राजनीतिक अपील और वास्तविक हथियार नियंत्रण संधि दो अलग-अलग चीजें हैं। फरवरी 2026 में अमेरिका और रूस के बीच न्यू स्टार्ट संधि की समाप्ति के बाद नए नियंत्रण ढांचे की आवश्यकता और बढ़ गई है। चीन का परंपरागत रुख रहा है कि अमेरिका और रूस पहले अपने बड़े परमाणु भंडार घटाएं, उसके बाद चीन को व्यापक वार्ता में शामिल करने की बात हो। इसलिए शेनझेन की बैठक ने संवाद का दरवाजा जरूर खोला है, लेकिन अभी किसी बाध्यकारी परमाणु निरस्त्रीकरण समझौते की घोषणा सामने नहीं आई है। साथियों बात अगर हम रूस- यूक्रेन युद्ध,पुतिन के लिए कूटनीतिक जीत या शांति की नई उम्मीद? को समझने की करें तो, रूस-यूक्रेन युद्ध इस बैठक का एक और अत्यंत महत्वपूर्ण पहलू रहा। ट्रंप पहले से ही युद्ध समाप्त कराने की इच्छा व्यक्त करते रहे हैं। बैठक के दौरान उन्होंने रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष को लेकर चीन के सहयोग की संभावनाओं पर सकारात्मक रुख दिखाया। पुतिन ने भी कहा कि रूस, अमेरिका और चीन के बीच क्षेत्रीय संघर्षों के समाधान में अनेक साझा हित हैं और इनमें यूक्रेन संघर्ष भी शामिल है। उन्होंने वैश्विक शांति और सुरक्षा बनाए रखने की जिम्मेदारी का उल्लेख किया। इससे पहले ट्रंप और पुतिन के बीच अलग से लगभग 35 से 40 मिनट की मुलाकात भी हुई। यह औपचारिक द्विपक्षीय शिखर बैठक के बजाय सम्मेलन के इतर हुई संक्षिप्त बातचीत थी। इसमें यूक्रेन युद्ध प्रमुख विषय रहा और क्रेमलिन के विदेश नीति सलाहकार यूरी उशाकोव ने इसे त्रिपक्षीय बैठक की तैयारी के संदर्भ में महत्वपूर्ण बताया।

पुतिन ने बातचीत के बाद सकारात्मक प्रतिक्रिया दी। उनके लिए इ



कब रखा जाएगा देवोत्थान एकादशी का व्रत? सही तारीख, पारण का मुहूर्त और महत्व

देवोत्थान एकादशी का व्रत 20 नवंबर को रखें या 21 नवंबर को? इस बार एकादशी तिथि दो दिन पड़ने से श्रद्धालुओं के मन में यह सवाल है. आखिर पंचांग के अनुसार व्रत की सही तारीख क्या है? भगवान विष्णु की पूजा किस शुभ मुहूर्त में करनी चाहिए और क्यों खास मानी जाती है यह एकादशी?

कब से कब तक है कार्तिक शुक्ल एकादशी

पंचांग के अनुसार, कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि 20 नवंबर 2026, शुक्रवार को सुबह 7 बजकर 15 मिनट से शुरू होगी. जबकि, एकादशी तिथि 21 नवंबर, शनिवार को सुबह 6 बजकर 31 मिनट पर समाप्त होगी.

देवोत्थान एकादशी का व्रत कब रखें

स्मार्त परंपरा के गृहस्थ देवोत्थान एकादशी का व्रत 20 नवंबर 2026, शुक्रवार को रखेंगे. जबकि, वैष्णव परंपरा को मानने वाले श्रद्धालु 21 नवंबर 2026, शनिवार को एकादशी का व्रत रखेंगे.

एकादशी पारण मुहूर्त

स्मार्त परंपरा को पालन करने वाले गृहस्थ 21 नवंबर 2026, शनिवार को एकादशी व्रत का पारण करेंगे. इसके लिए शुभ मुहूर्त दोपहर 12 बजकर 37 मिनट से 2 बजकर 46 मिनट तक रहेगा. पारण के दिन हरि वासर समाप्त होने का समय 12:07 बजे है. वैष्णव परंपरा में आस्था रखने वाले श्रद्धालु 22 नवंबर 2026, रविवार को देवउत्थान एकादशी का पारण करेंगे. इस दिन पारण करने का शुभ मुहूर्त सुबह 6 बजकर 10 मिनट से 8 बजकर 19 मिनट तक रहेगा. इस दिन द्वादशी तिथि सूर्योदय से पहले समाप्त हो जाएगी.

सनातन धर्म में देवोत्थान एकादशी का खास महत्व है. इस दिन भगवान विष्णु चार महीने की योगनिद्रा से जागते हैं. साथ ही इस दिन चातुर्मास समाप्त हो जाता है और विवाह, गृह प्रवेश जैसे मांगलिक कार्यों की शुरुआत होती है.

मान्यता है कि देवोत्थान एकादशी के दिन भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा करने से जीवन में सुख-समृद्धि आती है. इस दिन व्रत रखने और विधि-विधान से पूजा करने से पापों से मुक्ति मिलती है और भगवान विष्णु का आशीर्वाद प्राप्त होता है. इस एकादशी को देवउठनी एकादशी और प्रबोधिनी एकादशी के नाम से भी जाना जाता है. इसी दिन से कई स्थानों पर तुलसी विवाह की परंपरा भी शुरू होती है.



प्रबोधिनी एकादशी श्री हरि को कैसे जगाएं

कार्तिक माह में कई बड़े त्योहार मनाए जाते हैं. कार्तिक माह में दिवाली, गोवर्धन पूजा, भाई दूज, चित्रगुप्त पूजा जैसे कई बड़े त्योहार मनाए जाते हैं. कार्तिक माह में शुक्ल पक्ष की ग्यारस के दिन देवउठनी ग्यारस होती है. हिंदू परंपरा के अनुसार इस दिन से सभी शुभ कार्य, शादी, मुंडन, नामकरण संस्कार जैसे कार्य करना बेहद शुभ होता है. इस एकादशी को प्रबोधनी ग्यारस भी कहा जाता है. ये एकादशी दिवाली के 11 दिन बाद आती है.

कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी, देवोत्थान एकादशी, देवउठनी ग्यारस, प्रबोधिनी एकादशी आदि नामों से जाना जाता है। इस दिन श्रीहरि विष्णु निद्रा से जागते हैं।

कैसे करें व्रत

- देवउठनी एकादशी के दिन व्रत करने वाली महिलाएं प्रातःकाल में स्नानादि से निवृत्त होकर आंगन में चौक बनाएं।
- पश्चात भगवान विष्णु के चरणों को कलात्मक रूप से अंकित करें।
- फिर दिन की तेज धूप में विष्णु के चरणों को ढंक दें।
- देवउठनी एकादशी को रात्रि के समय सुभाषित स्त्रोत पाठ, भगवत कथा और पुराणादि का श्रवण और भजन आदि का गायन करें।
- घंटा, शंख, मृदंग, नगाड़े और वीणा बजाएं।
- विविध प्रकार के खेल-कूद, लीला और नाच आदि के साथ इस मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवान को जगाएं :

'उत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पतये।
त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत सुप्तं भवेदिदम'
'उत्थिते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव।
गतामेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मलादिशः'
'शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव।'

इसके बाद विधिवत पूजा करें।

कैसे करें पूजन

- पूजन के लिए भगवान का मन्दिर अथवा सिंहासन को विभिन्न प्रकार के लता पत्र, फल, पुष्प और वंदनबार आदि से सजाएं।
- आंगन में देवोत्थान का चित्र बनाएं, तत्पश्चात फल, पकवान, सिंघाड़े, गन्ने आदि चढ़ाकर डलिया से ढंक दें तथा दीपक जलाएं।
- विष्णु पूजा या पंचदेव पूजा विधान अथवा रामार्चनचन्द्रिका आदि के अनुसार श्रद्धापूर्वक पूजन तथा दीपक, कपूर आदि से आरती करें।
- इसके बाद इस मंत्र से पुष्पांजलि अर्पित करें :

'यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि
धर्माणि प्रथमान्यासन।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र
पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः'

देवउठनी एकादशी पर पढ़ें यह कथा, प्रसन्न होंगे भगवान विष्णु

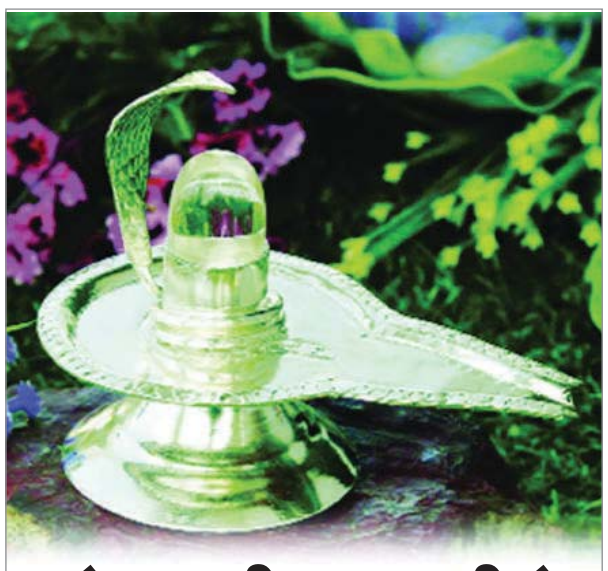
चतुर्मास खत्म हो रहा है। इसके साथ ही आज से देशभर में शुभ और मांगलिक कार्य शुरू हो जाएंगे। मान्यता है कि देवउठनी एकादशी के दिन ही चार महीने बाद भगवान विष्णु योग निद्रा से जागते हैं और फिर से सृष्टि का कार्यभार फिर से संभाल लेते हैं। आज के दिन जगत के पालनहार भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूरे विधि-विधान से खास पूजा-अर्चना की जाती है।

देवउठनी एकादशी व्रत कथा

पौराणिक मान्यता और कथाओं के मुताबिक, एक राज्य था, जहां के सभी लोग एकादशी का व्रत रखते थे। इस दिन नगर के किसी भी व्यक्ति या पशु पक्षी को अन्न नहीं दिया जाता था। एक समय ऐसा हुआ जब किसी दूसरी जगह का एक व्यक्ति राजा के दरबार में पहुंचा और नौकरी देने की प्रार्थना करने लगा। तब राजा ने उस व्यक्ति से कहा कि नौकरी तो ठीक है, लेकिन शर्त यह है कि माह में दो दिन एकादशी व्रत के दिन अन्न नहीं मिलेगा। उस व्यक्ति ने राजा की शर्त मांग ली और उसे नौकरी पर रख लिया गया। अगले



महीने एकादशी व्रत था। उस दिन उसे अन्न नहीं मिला। उसे फलाहार की सामग्री दी गई। वह राजदरबार में पहुंचा और राजा से कहने लगा कि फलाहार से उसका पेट नहीं भरेगा। उसे अन्न चाहिए। यदि अन्न नहीं खाएगा तो उसके प्राण निकल जाएंगे। वह राजा के सामने गिड़गिड़ाने लगा। राजा ने उस व्यक्ति को नौकरी की शर्त याद दिलाई। फिर भी वह राजा से अन्न की मांग करता रहा। उसकी स्थिति को देखकर राजा ने उसे अन्न देने का आदेश दे दिया। उसे आटा, चावल और दाल मिल गया। वह पास स्थित एक नदी के तट पर पहुंचा और सबसे पहले स्नान किया। फिर भोजन तैयार करने लगा। जब खाना बन गया तो उसने भगवान से प्रार्थना की कि भोजन तैयार है, आप भोजन ग्रहण करें। उसकी प्रार्थना सुनकर भगवान विष्णु अपने चतुर्भुज स्वरूप में पीले वस्त्र धारण किए प्रकट हुए। उसने प्रभु के लिए भोजन परोसा। भगवान विष्णु अपने उस भक्त के साथ भोजन करने लगे। भोजन के बाद भगवान अपने लोक वापस और वह व्यक्ति अपने काम पर चला गया। जब अगली एकादशी आई तो उसने राजा से कहा कि उसे दोगुना अन्न दिया जाए। पहली एकादशी पर वह भूखा ही रहा क्योंकि उस दिन साथ में भगवान ने भी भोजन किया। उतने अन्न में दोनों भोजन ठीक से नहीं कर पाते हैं।



देवउठनी एकादशी के दिन शिवलिंग पर चढ़ाएं ये खास चीजें, जीवन के सभी दुख होंगे दूर

वैदिक पंचांग के अनुसार, कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी कहा जाता है। यह तिथि सभी एकादशियों में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि इसी दिन भगवान विष्णु योगनिद्रा से जागृत होते हैं और शुभ व मांगलिक कार्यों की शुरुआत होती है।

वैदिक पंचांग के अनुसार, कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी कहा जाता है। यह तिथि सभी एकादशियों में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि इसी दिन भगवान विष्णु योगनिद्रा से जागृत होते हैं और शुभ व मांगलिक कार्यों की शुरुआत होती है।इस दिन भगवान विष्णु और मां लक्ष्मी की पूजा के साथ-साथ शिवलिंग का अभिषेक करना भी बेहद शुभ माना गया है। धार्मिक मान्यता है कि देवउठनी एकादशी के दिन सच्चे मन से व्रत और श्रीहरि की आराधना करने से पापों से मुक्ति मिलती है और जीवन में सुख-शांति आती है। वहीं, शिवलिंग पर विशेष वस्तुएं अर्पित करने से भगवान शंकर प्रसन्न होते हैं और सभी कष्ट दूर हो जाते हैं। आइए जानते हैं कि देवउठनी एकादशी के दिन शिवलिंग पर क्या चढ़ाना चाहिए और इसके क्या लाभ होते हैं-

आर्थिक तंगी होगी दूर

यदि आप धन की कमी या आर्थिक संकट का सामना कर रहे हैं, तो देवउठनी एकादशी के दिन सुबह स्नान कर पूजा करें। इसके बाद शिवलिंग पर चावल अर्पित करें और शिव मंत्रों का जप करें। मान्यता है कि ऐसा करने से महादेव प्रसन्न होकर आर्थिक समस्याओं से मुक्ति दिलाते हैं।

मानसिक तनाव से मिलेगा आराम

शिवलिंग पर गंगाजल और दूध से अभिषेक करना बेहद शुभ माना जाता है। ऐसा करने से मानसिक तनाव और नकारात्मकता दूर होती है। साथ ही जीवन में शांति और स्थिरता बनी रहती है।

पूरी होंगी सभी मनोकामनाएं

देवउठनी एकादशी के दिन शिवलिंग पर दही और शहद चढ़ाना भी अत्यंत फलदायी माना गया है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, इससे भगवान शिव प्रसन्न होते हैं और भक्त की हर इच्छा पूर्ण करते हैं।

मिलेगा मनचाहा वरदान

यदि आप किसी खास वरदान की इच्छा रखते हैं, तो इस दिन शमी के फूल शिवलिंग पर अर्पित करें। ऐसा करने से जीवन में शुभ फल मिलते हैं और सुख-समृद्धि में वृद्धि होती है।





देवउठनी एकादशी पर तुलसी के साथ शालिग्राम का विवाह

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी, श्री हरि प्रबोधिनी एकादशी और देवोत्थान एकादशी भी कहा जाता है। इस दिन तुलसीजी का शालिग्राम के साथ विवाह करने की परंपरा भी प्रचलित है। शालिग्राम एक पत्थर होता है जो कि नेपाल के मुक्तिनाथ, काली गंडकी नदी के तट पर ही पाया जाता है।

- हर साल कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को भगवान विष्णु के शालिग्राम स्वरूप और माता तुलसी का विवाह किया जाता है। तुलसी विवाह के साथ ही विवाह के शुभ मुहूर्त भी शुरू हो जाते हैं। इस दिन से शुभ या मांगलिक कार्य प्रारंभ हो जाते हैं।
- प्रचलित मान्यताओं के अनुसार, भगवान श्रीहरि योग निद्रा से जागने के बाद सर्वप्रथम माता तुलसी की पुकार ही सुनते हैं। शालिग्राम के साथ तुलसी का आध्यात्मिक विवाह देव उठनी एकादशी को होता है। इस दिन तुलसी की पूजा का महत्व है।
- तुलसी दल अकाल मृत्यु से बचाता है तो शालीग्राम और तुलसी की पूजा से पितृदोष का शमन होता है।
- प्रचलित मान्यताओं के अनुसार, विधि-विधान के साथ तुलसी विवाह कराने वालों पर भगवान विष्णु की विशेष कृपा बनी रहती है।
- कहते हैं कि शालिग्राम के साथ तुलसी विवाह से कन्यादान जितना पुण्य कार्य माना जाता है।
- भगवान शालिग्राम और माता तुलसी का विवाह कराने से वैवाहिक जीवन सुखमय व्यतीत होता है।
- महिलाएं सुख-समृद्धि की प्राप्ति के लिए इस दिन व्रत और पूजन करती हैं।
- इस दिन देवउठनी एकादशी की पौराणिक कथा का श्रावण या वाचन करना चाहिए। कथा सुनने या कहने से पुण्य की प्राप्ति होती है।
- कहते हैं कि देवोत्थान एकादशी का व्रत करने से हजार अश्वमेघ एवं सौ राजसूय यज्ञ का फल मिलता है।
- देवउठनी या प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करने से भाग्य जाग्रत होता है। इस दिन भगवान विष्णु या अपने इष्ट-देव की उपासना करना चाहिए। इस दिन ''ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नमः ''मंत्र का जाप करने से लाभ मिलता है।

देवउठनी एकादशी का महत्व

देवउठनी एकादशी के दिन भगवान विष्णु 4 माह की योग निंद्रा से बाहर आते हैं. उसके बाद वे फिर से सृष्टि के संचालन का दायित्व भगवान शिव से प्राप्त करते हैं. कहा जाता है कि देवउठनी एकादशी को भगवान पाताल लोक को छोड़कर वापस अपने वैकुंठ धाम वापस आ जाते हैं. असुरराज बलि को दिए वचन के अनुसार, भगवान विष्णु देवशयनी एकादशी से लेकर देवउठनी एकादशी तक पाताल लोक में रहते हैं.

देवउठनी एकादशी पर चातुर्मास का समापन

देवउठनी एकादशी के दिन चातुर्मास का समापन हो जाता है क्योंकि भगवान विष्णु योग निद्रा से बाहर आ जाते हैं. उस दिन से विवाह, मुंडन, सगाई, गृह प्रवेश जैसे शुभ कार्य प्रारंभ हो जाते हैं. उस दिन से इनके लिए शुभ मुहूर्त देखे जाने लगते हैं.

पाकिस्तान का जल संकट: भारत पर दोष मढ़ने के बजाय अपने ही गिरेबां में झाँके

कराची। पाकिस्तान में जल संकट लगातार बढ़ता जा रहा है, और इसके लिए भारत को जिम्मेदार ठहराने की इस्लामाबाद की दलीलों पर अब खुद पाकिस्तानी विशेषज्ञ ही सवाल उठा रहे हैं। देश के पूर्व मंत्रियों, जल विशेषज्ञों, पूर्व राजनयिकों और सेना के रिटायर्ड अधिकारियों तक ने इस पर बयान दिए हैं। उनका स्पष्ट मत है कि देश में पानी की समस्या भारत की वजह से नहीं, बल्कि अपनी बदहाल व्यवस्था, पानी की भीषण बर्बादी और प्रांतों के बीच मौजूदा विवादों के कारण पैदा हुई है। दरअसल, भारत ने 23 अप्रैल 2025 को सिंधु जल संधि में अपनी भागीदारी अस्थायी रूप से स्थगित कर दी थी, जिसके बाद से पाकिस्तान लगातार आरोप लगा रहा है कि भारत उसका पानी रोक रहा है। पाकिस्तान में पानी की सबसे ज्यादा खपत कृषि क्षेत्र में होती है। जल विशेषज्ञ डॉ. इमरान अजीज टूनियो के मुताबिक, देश के ताजे पानी का 90 फीसदी से भी अधिक हिस्सा खेती में उपयोग होता है, जबकि सिंचाई व्यवस्था की क्षमता 40 फीसदी से भी कम है, जो अक्षमता का स्पष्ट प्रमाण है। पंजाब के पूर्व सिंचाई मंत्री मोहसिन लेघारी ने बताया कि नहरों से छोड़े गए पानी का करीब आधा हिस्सा रिसाव के कारण खेतों तक पहुंचने से पहले ही बर्बाद होता है। पाकिस्तानी लेखक नसीर मेमन ने प्रमुख अखबार में लिखा कि नहरों के मुहाने पर उपलब्ध 143 अरब घन मीटर पानी में से केवल 55 अरब घन मीटर का ही फसलों के लिए सही इस्तेमाल होता है। पाकिस्तान में चावल, गेहूं, गन्ना और कपास जैसी चार प्रमुख फसलें देश के कुल पानी का 80 फीसदी से ज्यादा इस्तेमाल करती हैं। जल व्यवस्था में सरकारी लापरवाही भी एक बड़ी समस्या है। लेघारी के अनुसार, जनवरी 2018 से देश में सिंधु जल आयुक्त का पूर्णकालिक पद खाली है। इसके अतिरिक्त, जल संसाधन मंत्रालय में समर्पित संघीय सचिव की कमी है और राष्ट्रीय जल परिषद की अक्टूबर 2018 के बाद से कोई बैठक नहीं हुई है। लेघारी ने तीखी टिप्पणी की कि पाकिस्तान अपने यहां पारदर्शिता की कमी को नजरअंदाज करके दूसरे देशों से पारदर्शिता की मांग नहीं कर सकता। पानी के बंटवारे को लेकर पंजाब और सिंध के बीच के पुराने विवाद भी संकट को और विकट बना रहे हैं। उदाहरण के लिए, सिंध के कोटरी बैराज से नीचे की ओर पानी का बहाव शून्य था, जबकि तरबेला बांध में पानी जमा किया जा रहा था और लिंक नहरों से पानी दूसरी जगहों पर भेजा जा रहा था। कुछ विशेषज्ञ पाकिस्तान में पानी की वास्तविक कमी के दावे पर सवाल उठाते हैं। जल विशेषज्ञ डॉ. हसन अब्बास ने 2018 में लिखा था कि पाकिस्तान को घरेलू जरूरतों, उद्योगों और खाद्य उत्पादन के लिए सालाना 7.7 करोड़ एकड़ फीट से कम पानी की आवश्यकता है, जबकि उसकी नदियों में करीब 14.5 करोड़ एकड़ फीट पानी आता है। उन्होंने स्पष्ट किया था कि पाकिस्तान न पानी की कमी वाला देश है और न ही वहां पानी की उपलब्धता इतनी कम है कि संकट के लिए सिर्फ जल अभाव को जिम्मेदार ठहराया जाए, बल्कि मूल समस्या कुप्रबंधन की है।

केएसयू प्रमुख की चेतावनी: भाजपा से लौटे दलबदलुओं को विशेष तरजीह न दे कांग्रेस

पद्मजा वेणुगोपाल और पद्मिनी थॉमस के लिए कांग्रेस में उठे विरोध के सुर

तिरुवंतनमपुरम। केरल छात्र संघ (केएसयू) के अध्यक्ष अलोशियस जेवियर ने कांग्रेस नेतृत्व को आगाह किया है कि भाजपा छोड़कर पार्टी में लौट रहीं पद्मजा वेणुगोपाल और पद्मिनी थॉमस जैसे नेताओं को जमीनी स्तर पर काम कराए बिना कोई बड़ा पद या विशेष तरजीह न दें। कांग्रेस के छात्र संगठन केएसयू के प्रमुख जेवियर ने शुक्रवार को पोस्ट के माध्यम से यह बात कही।



उन्होंने कहा कि कांग्रेस में लौटने वालों को बूथ स्तर से काम करने के मौका दिया जाना चाहिए, जबकि वर्षों से पार्टी के लिए समर्पित भाव से काम कर रहे आम कार्यकर्ताओं को संगठन के विभिन्न स्तरों पर पद और जिम्मेदारियां देने में प्राथमिकता मिलनी चाहिए। केएसयू के प्रमुख जेवियर ने स्वीकार किया कि कांग्रेस इस समय घर वापसी के दौर से गुजर रही है और समाज के सभी वर्गों के लोगों का पार्टी में स्वागत है, लेकिन साथ ही चिंता जाहिर की हैं कि कहीं लौटने वालों के लिए रेड कार्पेट बिछाकर स्वागत करने और विशेष तरजीह देने की परंपरा न शुरू हो जाए। पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के दिग्गज नेता के. करुणाकरण की बेटी पद्मजा का विशेष रूप से जिक्र कर केएसयू के प्रमुख जेवियर ने याद दिलाया कि उन्होंने उस समय में कांग्रेस छोड़ी थी, जब पार्टी अपने सबसे बुरे दौर में से एक से गुजर रही थी। उन्होंने भाजपा में शामिल होकर पार्टी की धर्मनिरपेक्ष छवि को चुनौती दी थी। जेवियर ने मांग की कि अगर पद्मजा कांग्रेस की प्राथमिक सदस्य के रूप में लौटना चाहती हैं, तब उन्हें पार्टी छोड़ते समय दिए अपने दो विवादास्पद बयानों कि उनके पिता करुणाकरण जीवित होते, तब भाजपा में शामिल हो जाते, और कांग्रेस में रहते हुए वे स्वतंत्र रूप से चंदन का तिलक नहीं लगा पाती थीं को सुधारना चाहिए और कांग्रेस तथा उसके कार्यकर्ताओं से माफी मांगनी चाहिए। जेवियर ने भावुक होकर कहा, कांग्रेस के हजारों कार्यकर्ताओं ने सड़कों पर नारे लगाए हैं, वैचारिक लड़ाइयां लड़ी हैं और पार्टी के लिए संघर्ष किया है। यह सब उन पद्मजाओं के लिए नहीं किया, जो अवसरवाद या सत्ता की लालसा में राजनीतिक दल बदलती रहती हैं। उन्होंने पूर्व भारतीय एथलीट पद्मिनी थॉमस के कांग्रेस में लौटने के फैसले का भी उल्लेख कर दोनों नेताओं को बूथ स्तर पर काम करने की सलाह दी, जबकि कड़ी मेहनत करने वाले आम पार्टी कार्यकर्ताओं को विभिन्न क्षेत्रों में मौका देने के लिए प्राथमिकता मिलनी चाहिए। इस बीच, केरल प्रदेश कांग्रेस के प्रवक्ता जिंटो जॉन ने पद्मजा की पार्टी में वापसी का कड़ा विरोध कर कहा था कि कांग्रेस में उन लोगों के लिए जगह नहीं है, जो पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हो जाते हैं और बाद में वापस लौटना चाहते हैं।

वैश्विक मंच पर पुतिन का अपमान, पीएम मोदी ने भारतीय उद्योगों को किया आगाह

बीजिंग। बीजिंग में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच हालिया मुलाकात ने वैश्विक कूटनीति में नया अध्याय जोड़ दिया है। इस दौरान रूसी राष्ट्रपति व्लादमीर पुतिन को अपमान का कड़वा घूंट पीना पड़ा, क्योंकि उन्हें कथित तौर पर इन दोनों नेताओं ने अलग-थलग छोड़ दिया। ट्रंप और जिनपिंग ने एक-दूसरे का हाथ थामा और साथ में डिनर किया, जबकि पुतिन को अकेले छोड़ दिया गया। यह घटनाक्रम इस धारणा को बल देता है कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में आर्थिक ताकत ही अंतिम सत्य है। कहा जाता है कि चीन और अमेरिका एक-दूसरे के आर्थिक हित साधने के लिए करीब आए



हैं, जहां अमेरिका चीन के उत्पादन का बड़ा बाजार है और चीन अमेरिकी बाजार के लिए एक बड़ा उत्पादक। दोनों देशों ने रूस की अर्थव्यवस्था की कमजोर स्थिति को नजरअंदाज कर दिया, जो युद्ध के कारण प्रभावित हुई है और अब एक लाभदायक सौदा नहीं है। इस स्थिति को दूर बैठकर देख रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसे भारत के लिए एक महत्वपूर्ण सबक बताया। पीएम मोदी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि वैश्विक मंच पर सम्मान तभी मिलता है जब देश आर्थिक रूप से मजबूत हो।

नेपाली पीएम बालेंद्र शाह का पहला भारत दौरा: द्विपक्षीय संबंधों पर होगी अहम चर्चा

काठमांडू (ईएमएस)। नेपाली प्रधानमंत्री बालेंद्र शाह 22 नवंबर को अपने पहले भारत दौरे पर नई दिल्ली पहुंच रहे है। इस महत्वपूर्ण राजकीय यात्रा के दौरान, वे सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से व्यापक द्विपक्षीय वार्ता करने वाले है। मार्च में प्रधानमंत्री पद संभालने के बाद शाह की यह पहली विदेश यात्रा होगी, जो दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने की दिशा में एक अहम कदम मानी जा रही है।



भारतीय विदेश मंत्रालय ने बताया कि इस दौरे पर दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों के सभी पहलुओं की गहन समीक्षा होगी। साथ ही, क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान भी होगा। यह यात्रा भारत की पड़ोसी प्रथम नीति के तहत नेपाल के साथ संबंधों को दिए जाने वाले महत्व को दर्शाती है और दोनों देशों के बीच नियमित उच्च-स्तरीय आदान-प्रदान की परंपरा को भी आगे बढ़ाती है। मंत्रालय का मानना है कि इस यात्रा से द्विपक्षीय साझेदारी को और मजबूत करने तथा पारस्परिक लाभ वाले सहयोग को बढ़ावा देने का अवसर मिलेगा, क्योंकि क्षेत्र में भारत के व्यापक रणनीतिक हितों के लिहाज से नेपाल एक महत्वपूर्ण भागीदार है। भारत और नेपाल के बीच सदियों पुराने ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और रोटी-बेटी के संबंध हैं। चारों तरफ से जमीनी क्षेत्र से घिरा देश होने के कारण, नेपाल वस्तुओं और सेवाओं के परिवहन के लिए काफी हद तक भारत पर निर्भर करता है और समुद्र तक उसकी पहुंच भी भारत के रास्ते ही है। दोनों देशों के बीच व्यापार, विकास साझेदारी, ऊर्जा, जल संसाधन, तथा भौतिक और डिजिटल कनेक्टिविटी जैसे विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग में निरंतर प्रगति हुई है।

कोई भी सीट दोनों में से उसी पार्टी को दी जाएगी, जो जीतने की स्थिति में होगी

यूपी में सीट बंटवारे पर 23-24 नवंबर को कांग्रेस-सपा के बीच होगी बातचीत

नई दिल्ली। यूपी विधानसभा चुनाव 2027 में सपा, कांग्रेस के साथ मिलकर चुनाव लड़ने की संभावनाएं लगातार तलाशी जा रही है। इस बीच, समाजवादी पार्टी ने कांग्रेस से सीट बंटवारे पर बातचीत के लिए कमेटी का गठन कर दिया है। बता दें सपा के 5 नेता कांग्रेस से गठबंधन और सीट बंटवारे पर बातचीत करेंगे। आगामी 23-24 नवंबर को कांग्रेस से सपा की बातचीत होगी। इसमें सीट बंटवारे पर बातचीत आगे बढ़ने की संभावना है। इससे पहले, हाल ही में एक इंटरव्यू में सपा प्रमुख अखिलेश यादव कह चुके हैं कि कांग्रेस ने उनके पास 181 सीटों की लिस्ट भेजी है। हालांकि, अखिलेश का कहना है कि कोई भी सीट दोनों में उसी



पार्टी को दी जाएगी, जो संबंधित विधानसभा क्षेत्र में जीतने की मजबूत स्थिति में होगी।

इस बीच, कांग्रेस ने विधानसभा चुनावों के लिए अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और कांग्रेस चीफ मल्लिकार्जुन खड़गे ने बीते सोमवार को नई दिल्ली में कांग्रेस के सीनियर नेताओं के साथ एक बैठक की थी। इसमें पार्टी की तैयारियों की समीक्षा की गई और विधानसभा चुनावों के लिए स्ट्रैटेजी पर चर्चा हुई थी। इस बैइक में कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल, प्रियंका गांधी, राजेंद्र पाल गौतम, आराधना मिश्रा, इमरान मसूद और यूपी में कांग्रेस विधायक दल के नेता वीरेंद्र चौधरी शामिल रहे थे।

इस बैठक के बाद खड़गे ने कहा था कि चर्चा मुख्य तौर पर यूपी के मौजूदा सियासी हालात और आगामी विधानसभा चुनावों पर केंद्रित रही। उन्होंने भरोसा जताया था कि ये विधानसभा चुनाव भारत की सियासत को एक नई दिशा देने में अहम रोल निभाएंगे। यूपी के लोग परिवर्तन चाहते हैं और वे सामाजिक न्याय, समान अवसर व हाशिए पर मौजूद समुदायों के अधिकारों को मजबूत होते देखना चाहते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी लखनऊ में 52 मेधावी आईटीआई प्रशिक्षुओं को करेंगे सम्मानित

लखनऊ। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को लखनऊ में आयोजित होने वाले पांचवें कौशल दीक्षांत समारोह-2026 में देशभर के 52 मेधावी आईटीआई प्रशिक्षुओं को सम्मानित करने वाले है। ये सभी प्रशिक्षु अखिल भारतीय व्यवसाय परीक्षा (एआईटीटी) 2026 में राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले हैं। यह समारोह गोमती नगर स्थित इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित होगा, जिसका उद्देश्य कौशल विकास के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को पहचान देना है। सम्मानित होने वाले प्रशिक्षुओं में शिल्पकार प्रशिक्षण योजना के 37 (18 पुरुष और 19 महिलाएं) तथा शिल्प अनुदेशक प्रशिक्षण योजना के 15 (सात पुरुष और आठ महिलाएं) शामिल हैं। उत्तर प्रदेश प्रशिक्षण



निदेशालय के अनुसार, इस मौके पर उत्तर प्रदेश के छह मेधावी प्रशिक्षुओं को भी विशेष रूप से सम्मानित किया जाएगा। प्रधानमंत्री मोदी स्वयं मंच पर 10 मेधावी प्रशिक्षुओं को प्रमाण-पत्र प्रदान करने वाले है। जिसमें दिव्यांग श्रेणी के प्रशिक्षु और उन तकनीकी व्यवसायों में प्रशिक्षण लेने वाली महिलाएं भी शामिल होंगी, जिसमें आमतौर पर उनकी भागीदारी कम होती है।

मंच पर सम्मानित होने वालों में उत्तर प्रदेश के शाहबाज खान (इलेक्ट्रॉनिक्स मैकेनिक, राजकीय आईटीओटी, अलीगंज, लखनऊ) और संध्या देवी (सूचना प्रौद्योगिकी, एनएसटीआई महिला, नोएडा) जैसे नाम प्रमुख हैं।

इनके अलावा, तमिलनाडु, जम्मू-कश्मीर, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, ओडिशा और केरल जैसे राज्यों के प्रशिक्षु भी सम्मान प्राप्त करने वाले है। यह समारोह 5,500 लोगों की क्षमता वाले जर्मन हैंगर में आयोजित होगा, जहां आईटीआई प्रशिक्षुओं की सफलता की कहानियों पर आधारित एक वीडियो भी प्रदर्शित किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में ड्रोन, रोबोटिक्स और पेंट्स उद्योग में कार्यरत आईटीआई के पूर्व प्रशिक्षुओं को आमंत्रित किया गया है। सैमसंग, यामाहा, एलजी, लावा और अशोक लीलैंड जैसी प्रमुख कंपनियां समारोह स्थल पर अपने स्टॉल लगाएंगी। टाटा आईटीआई लैब्स के स्टॉल भी लगाए जाएंगे, क्योंकि ये सभी कंपनियां बड़ी संख्या में आईटीआई प्रशिक्षित युवाओं को रोजगार प्रदान करती हैं।

गिरगिट रंग बदल सकता है, आदत नहीं, अखिलेश को खुद नहीं पता वह क्या चाहते हैं

बसपा के राष्ट्रीय समन्वयक आकाश आनंद ने अयोध्या रैली में सपा पर साधा निशाना

अयोध्या। बसपा के राष्ट्रीय समन्वयक आकाश आनंद ने अयोध्या की रैली में सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि वह अखिलेश यादव का सम्मान करते हैं, लेकिन उन्हें खुद नहीं पता कि वह करना क्या चाहते हैं। आकाश ने सपा के पीडीए फॉर्मूले पर तंज कसते हुए कहा कि कल तक पीडीए में पी का मतलब पिछड़ा था, लेकिन ब्राह्मण समाज के बसपा से जुड़ने के बाद रातोंरात पी का मतलब पंडित हो गया। उन्होंने कहा कि चुनाव आते-आते पी का मतलब फिर बदल जाएगा और डी-ए घबराए बैठे हैं कि कहीं उनका नंबर न लग जाए। अयोध्या की बीकापुर विधानसभा सीट से आकाश आनंद ने जितेन्द्र सिंह बबलू को बसपा का उम्मीदवार घोषित किया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक आकाश आनंद ने आगरा में हुए सपा के दलित सम्मेलन पर भी निशाना



साधा। उन्होंने कहा कि एक दिन के सम्मेलन से पूरी सपा दलितों की पार्टी बन गई, लेकिन गिरगिट रंग तो बदल सकता है, अपनी आदत नहीं। उन्होंने सपा के थिंक टैंक रामगोपाल यादव पर तंज कसते हुए कहा कि वे जिस भीड़ को सम्मान देने पहुंचे थे, उसी पर बरस पड़े और गुस्से में उन्हें ही मूरख कह दिया। आकाश ने अयोध्या के सोहावल में जनसभा को संबोधित करते हुए पेपर लीक और बेरोजगारी के मुद्दे पर योगी सरकार को भी घेरा। आकाश ने कहा कि पिछले 10 साल में 10 से ज्यादा भर्ती परीक्षाओं के पेपर लीक हुए हैं। हमारा बच्चा सालभर पढ़ाई करता है, लेकिन परीक्षा से पहले ही पेपर बाजार में पहुंच जाता है। इस प्रदेश में अगर कोई चीज समय से पहले पहुंचती है तो वह लीक हुआ पेपर।

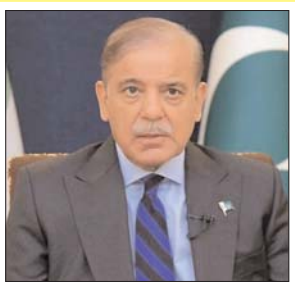
प्रदेश की कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाते हुए आकाश आनंद ने कहा कि वह जो आंकड़े जनता के सामने रख रहे हैं, वे एनसीआरबी के सरकारी आंकड़े हैं। उन्होंने दावा किया कि हत्याओं के मामले में यूपी पूरे देश में नंबर वन है और हर साल 3 हजार से ज्यादा हत्याएं होती हैं। महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामले में भी प्रदेश नंबर वन है, जहां हर साल 65 हजार से ज्यादा मामले सामने आते हैं।

आकाश ने अयोध्या की रैली में कांग्रेस और राहुल गांधी पर निशाना साधते हुए डॉ. भीमराव आंबेडकर का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि आज कांग्रेस आंबेडकर की तस्वीर हाथ में लेकर घूमती है, लेकिन उनका इतिहास छिपाती है।

कश्मीरियों को हर तरह की राजनीतिक और दूसरी मदद जारी रहेगी: पीएम शहबाज

लतीफ भट के मारे के बाद पाक पीएम ने कश्मीर के शहीदों को दी श्रद्धांजलि

इस्लामाबाद। कुलगाम में लश्कर-ए-तैयबा के कमांडर मोहम्मद लतीफ भट के मारे जाने के कुछ घंटे बाद पाकिस्तान के पीएम शहबाज शरीफ ने कश्मीर के शहीदों को श्रद्धांजलि दी। पाकिस्तान के पीएमओ ने शरीफ के भाषण को एक्स पर साझा किया। शरीफ ने कश्मीरियों को हर तरह की राजनीतिक और दूसरी मदद जारी रखने का भरोसा दिया, लेकिन मारे गए लश्कर कमांडर का नाम साफ तौर पर नहीं लिया। बता दें 18 नवंबर की सुबह कुलगाम के ज़ंगलपोरा इलाके में भारतीय सुरक्षाबलों और लश्कर के कमांडर के बीच



गोलीबारी हुई। इसमें सुरक्षाबलों ने लश्कर-ए-तैयबा के कमांडर मोहम्मद लतीफ भट को मार गिराया। लतीफ लश्कर का आखिरी सक्रिय स्थानीय कमांडर था। इस मुठभेड़ के कुछ ही घंटे बाद पाकिस्तान की तरफ से शरीफ का यह बयान सामने आया। मुजफ्फराबाद पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आता है, जिसे पीओजेके भी कहा जाता है। शहबाज शरीफ ने कश्मीर के शहीदों को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि कश्मीर की वादी उनके खून से लाल हो चुकी है। शरीफ ने वहां जेलों में बंद कश्मीरी नेताओं को भी सलाम किया. उन्होंने कहा कि उन्हें विश्वास है कि कश्मीरियों की कुर्बानियां जल्द रंग लाएंगी। शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान की जनता पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के भाई-बहनों को हर तरह की राजनीतिक और दूसरी मदद देना जारी रखेगी।

किरण बेदी को सरकार ने बनाया राष्ट्रीय मेंटर, प्रतिष्ठित हस्तियों का करेंगी मार्गदर्शन

नई दिल्ली। देश की पहली महिला आईपीएस अधिकारी और पुडुचेरी की पूर्व उपराज्यपाल डॉ किरण बेदी को सरकार ने राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद यानी एनसीटीई ने राष्ट्रीय मेंटर के रूप में शामिल किया है। किरण बेदी ने इससे पहले भी शिक्षा के क्षेत्र में अहम योगदान दिया है। किरण बेदी को यह जिम्मेदारी शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की मेंटरिंग इनिशिएटिव फॉर टीचिंग, रिसर्च एंड असेसमेंट (मित्रा) पहल के तहत सौंपी गई है। इसका उद्देश्य देशभर के शिक्षकों को



अनुभवी शिक्षाविदों, वरिष्ठ अधिकारियों और प्रतिष्ठित हस्तियों का मार्गदर्शन उपलब्ध कराना है।

जानकारी के मुताबिक इसके जरिए ऑनलाइन संवाद के जरिए शिक्षकों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन दिया जाएगा, ताकि उनके शिक्षण कौशल, व्यावसायिक दक्षता और विद्यार्थियों को सिखाने के परिणामों में सुधार किया जा सके। इस पहल से जुड़ने पर किरण बेदी ने कहा कि यह सेवानिवृत्त अधिकारियों, अनुभवी पेशेवरों और वरिष्ठ शिक्षाविदों के लिए अपने अनुभव और ज्ञान के जरिए समाज को योगदान देने का विश्वसनीय मंच है। उन्होंने शिक्षकों को केंद्र में रखकर तैयार की गई इस पहल की सराहना भी की है।

अनंत सिंह की बेटी की शादी: 10 लाख मेहमान, 50 लाख रसगुल्ले और 5 ट्रक चीनी!

पटना। बिहार के बाहुबली नेता अनंत सिंह की बेटी शिवांगी की शादी इन दिनों पटना के नदवां गांव में भव्य तैयारियों को लेकर सुर्खियों में बनी हुई है। इस शादी को यादगार बनाने के लिए खास इंतजाम किए गए है। लाखों मेहमानों के लिए खाने-पीने और सजावट के असाधारण इंतजाम हो रहे हैं। दावा है कि यह आयोजन बिहार में अब तक की सबसे भव्य शादियों में से एक होगा, जिसकी चर्चा दूर-दूर तक फैल चुकी है। इस शाही शादी में करीब 10 लाख लोगों के भोजन का इंतजाम किया जा रहा है। जहां मेहमानों के लिए 25 लाख से ज्यादा मिठाइयां तैयार की जाएंगी,



जिसमें सिर्फ 50 लाख रसगुल्ले शामिल हैं। इतनी बड़ी मात्रा में मिष्ठान बनाने के लिए करीब 1500 क्विंटल चीनी 5 ट्रकों में पहुंची है। बताया जा रहा है कि हर ट्रक में लगभग 300 क्विंटल चीनी है। भोजन की व्यवस्था के लिए गांव में दो अलग-अलग स्थानों पर करीब 10 एकड़ भूमि पर इंतजाम किया गया है, जहां 50 कारीगरों की 20 टीमें दिन-रात जुटी हुई हैं, ताकि मेहमानों को किसी तरह की कमी महसूस न हो। शादी की तैयारियों के चलते नदवां गांव का नजारा ही बदल गया है। पूरे गांव को दुल्हन की तरह सजाया जा रहा है, और मेहमानों के स्वागत के लिए गांव में करीब डेढ़ किलोमीटर तक भव्य स्वागत द्वार बनाए जा रहे हैं। इन असाधारण तैयारियों को देखने के लिए आसपास के इलाकों से भी लोगों की भीड़ जुट रही है, जो इस आयोजन के पैमाने को दर्शाता है। गांव में पहुंचने वाले मेहमानों की संख्या को देखकर व्यवस्थाओं को भी उसी हिसाब से तैयार किया जा रहा है। इन तैयारियों के बीच अनंत सिंह का देसी अंदाज भी चर्चा का विषय बना हुआ है। हाल ही में उन्हें पीली शर्ट, गले में लाल गमछा और सिर पर काली टोपी पहने घोड़ों की प्रैक्टिस देखने पहुंचे देखा गया। शादी में घोड़ों का आयोजन भी आकर्षण का केंद्र बनने जा रहा है, और अनंत सिंह का यह पारंपरिक अंदाज बेटी की शादी को खास बनाने के लिए उनके व्यक्तिगत जुड़ाव और समर्पण को दर्शाता है। कुल मिलाकर, शिवांगी की शादी केवल एक पारिवारिक आयोजन नहीं, बल्कि एक बड़े सामाजिक उत्सव का रूप ले चुकी है, जिसकी भव्यता और पैमाने को लेकर हर कोई हैरान है। नदवां गांव में फिलहाल उत्सव और उल्लास का माहौल है, जहां हर कोई इस अनोखी शादी का गवाह बनने को उत्सुक है।

एक नजर

हकीम जेफरीज का हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स का स्पीकर बनना तय! जनवरी में होंगे चुनाव

यह पद उपराष्ट्रपति के बाद राष्ट्रपति उत्तराधिकार की कतार में दूसरे स्थान रखता है

वाशिंगटन। अमेरिका में जनवरी 2027 में एक और चुनाव होने वाला है। इस बार कोई पब्लिक इलेक्शन नहीं बल्कि कांग्रेस स्पीकर का चुनाव होगा। दरअसल डेमोक्रेटिक पार्टी ने को हकीम जेफरीज को हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स के अगले स्पीकर पद के लिए उम्मीदवार के तौर जनवरी में नई कांग्रेस के गठन के बाद उनके स्पीकर चुने जाने की पूरी संभावना है। ऐसा होने पर वे इस पद तक पहुंचने वाले पहले अफ्रीकी-अमेरिकी बन जाएंगे। पार्टी के अंदर हुई गुप्त वोटिंग में जेफरीज को 251 वोट मिले, जबकि खिलाफ में केवल 11 वोट पड़े। उनके सामने कोई सीधा प्रतिद्वंद्वी नहीं था।

हालांकि फिलिस्तीन जैसे कुछ नीतिगत मुद्दों पर पार्टी के प्रगतिशील धड़े की ओर से सीमित विरोध जरूर देखने को मिला। मिडटर्म चुनाव में डेमोक्रेटिक पार्टी ने 436 सदस्यीय प्रतिनिधि सभा में अब तक 257 सीटें हासिल कर ली हैं। ऐसे में जनवरी में सदन के अंदर होने वाले औपचारिक चुनाव में जेफरीज की जीत तय मानी जा रही है। वे रिपब्लिकन नेता माइक जॉनसन की जगह लेंगे, जिन्होंने पार्टी की हार के बाद किसी भी नेतृत्वकारी भूमिका के लिए दावा नहीं किया। हालांकि अमेरिका में पहले अफ्रीकी-अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा और उपराष्ट्रपति कमला हैरिस रह चुके हैं लेकिन प्रतिनिधि सभा के स्पीकर पद पर अभी तक कोई अफ्रीकी-अमेरिकी नहीं पहुंचा है। यह पद उपराष्ट्रपति के बाद राष्ट्रपति उत्तराधिकार की कतार में दूसरे स्थान पर आता है। 56 साल के हकीम जेफरीज पेशे से वकील हैं और न्यूयॉर्क सिटी के ब्रुकलिन इलाके का प्रतिनिधित्व करते हैं। स्पीकर बनने पर उनके पास सदन का विधायी एजेंडा तय करने, बजट वार्ताओं का नेतृत्व करने और संभावित महाभियोग प्रक्रियाओं को आगे बढ़ाने जैसी अहम जिम्मेदारियां होंगी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेट्स के स्पष्ट बहुमत और 100 सदस्यीय सीनेट में 56 सीटों के साथ, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके प्रशासन को संघीय खर्च और प्रमुख विधेयकों पर हकीम जेफरीज के साथ बातचीत करनी होगी। इससे आने वाले समय में नीतिगत टकराव की संभावना भी बन सकती है, क्योंकि ट्रंप कई डेमोक्रेटिक नीतियों का विरोध करते हैं। ईरान में चल रहे संघर्ष का विरोध कर चुके जेफरीज का कहना है कि बढ़ती कीमतों से पैदा हुई महंगाई और लोगों की आर्थिक परेशानियों से निपटना उनकी सबसे बड़ी प्राथमिकता होगी। हालांकि कांग्रेस में डेमोक्रेटिक नेतृत्व और व्हाइट हाउस के बीच मतभेद भी बने हुए हैं।

पति ने पत्नी और बच्चों की हत्या की

फ्लोरिडा। अमेरिका के फ्लोरिडा में गुरुवार को एक व्यक्ति ने अपने ही परिवार को खत्म कर दिया। उसने पहले अपने तीन छोटे बच्चों को गोली मारी, फिर पत्नी की हत्या कर दी और आखिर में खुद को भी गोली मार ली। इस दौरान घर से आई 911 कॉल (इमरजेंसी कॉल) पर एक बच्चे की आवाज सुनाई दी। वह बार-बार कह रहा था पापा, मुझे गोली मत मारो...पापा, मुझे मत मारो। मारे गए बच्चों की उम्र 1, 3 और 5 साल थी। हिल्सबरो काउंटी के शेरिफ चाड क्रोनिस्टर ने बताया कि गुरुवार दोपहर पुलिस को परिवार के घर से 911 कॉल मिली थी। कॉल पर कोई बोल नहीं रहा था, लेकिन फोन खुला था। इस दौरान डिस्पैचर ने एक आदमी की आवाज सुनी, जो कह रहा था- 'सॉरी बडी।' इसके तुरंत बाद गोली चलने जैसी तेज आवाज आई।

गैंगस्टर गोल्डी बराड़ पर 1.62 करोड़ इनाम

जालंधर। सिद्धू मूसेवाला की हत्या समेत कई मामलों में भारत में वांटेड गैंगस्टर गोल्डी बराड़ पर कनाडा ने 2.5 लाख कनाडाई डॉलर (करीब 1.62 करोड़ रुपए) का इनाम घोषित किया है। यह इनाम उसे पकड़वाने में मदद करने या उसकी पुख्ता जानकारी देने वाले को मिलेगा। भारत से फरार गोल्डी कनाडा के मोस्ट वांटेड भगोड़ों की सूची में भी अब टॉप पर है। कनाडा के बीओएलओ प्रोग्राम ने उस पर इनाम का ऐलान किया। यह प्रोग्राम पुलिस के साथ मिलकर फरार अपराधियों को पकडने में मदद करता है। इनाम की घोषणा ऐसे समय हुई है, जब अमेरिकी जांच एजेंसी एफबीआई भी गोल्डी को अपनी 10 मोस्ट वांटेड भगोड़ों की सूची में शामिल कर चुकी है।

यूएन में भारत का चौंकाने वाला दांव : ईरान के पक्ष में मतदान, अमेरिका हैरान

न्यूयॉर्क। संयुक्त राष्ट्र के मंच पर भारत ने महत्वपूर्ण राजनयिक कदम उठाकर सभी को चौंका दिया। कनाडा द्वारा ईरान के मानवाधिकार रिकॉर्ड पर पेश किए एक कड़े प्रस्ताव के खिलाफ वोट कर भारत ने अपने पुराने सहयोगी तेहरान का साथ दिया, भारत के इस कदम से पश्चिम के कई देश हैरान रह गए।

दरअसल, कनाडा के प्रस्ताव में ईरान की इस्लामिक सरकार पर मानवाधिकारों के गंभीर उल्लंघन का आरोप लगाकर उसके आंतरिक रिकॉर्ड की कड़ी निंदा की गई थी। ईरान ने कनाडा के प्रस्ताव को निष्पक्ष नहीं, बल्कि राजनीतिक मकसदों से प्रेरित बताकर तीखी प्रतिक्रिया दी थी। संयुक्त राष्ट्र में ईरान के स्थायी प्रतिनिधि ने कहा कि मानवाधिकारों के नाम पर कुछ देश अपने निजी राजनीतिक एजेंडे को आगे बढ़ा रहे हैं।

जब इस पर मतदान शुरू हुआ, तब नई दिल्ली का फैसला दशकों पुरानी कूटनीतिक नीति का हिस्सा था। भारत हमेशा से इस बात का पक्षधर रहा है कि संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों का इस्तेमाल किसी विशेष देश को अलग-थलग करने या घेरने के लिए नहीं होना चाहिए।

कैबिनेट मंत्री राम सिंह कैड़ा ने अल्टीमेट उत्तराखंड हिमालयन स्क्वॉक्चैलेंज-2026 को झंडी दिखाकर किया रवाना

- 18 राज्यों तथा एयरफोर्स, आर्मी व ढ्डअ्रक्के कुल 66 प्रतिभागी कर रहे प्रतिभाग
- 80 व्यक्तियों द्वारा कराया गया था पंजीयरण, 14 व्यक्ति विभिन्न कारणों से नहीं कर रहे प्रतिभाग
- मुक्तेश्वर से शुरू हुई 658 किलोमीटर की रोमांचक साइकिल यात्रा, उत्तराखंड की संस्कृति और पर्यटन को मिलेगी नई पहचान



के.के.पी संवाददाता

मुक्तेश्वर- कैबिनेट मंत्री राम सिंह कैड़ा ने शुक्रवार को अल्टीमेट उत्तराखंड हिमालयन स्क्वॉक्चैलेंज-2026 को झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह उत्तराखंड के लिए गर्व की बात है कि प्रदेश में इस तरह के साहसिक खेलों का आयोजन हो रहा है।

उन्होंने कहा कि इस आयोजन का शुभारंभ मुक्तेश्वर से होना भी विशेष महत्व रखता है। उन्होंने कहा कि शासन में सचिव धीराज सिंह भी इस आयोजन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पूर्व में जिलाधिकारी रहते हुए धीराज सिंह गर्ब्याल ने कुमाऊं की संस्कृति एवं परंपराओं तथा पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक महत्वपूर्ण कार्य किए हैं।

कैबिनेट मंत्री ने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुख्यमंत्री प्रदेश के पर्वतीय और मैदानी क्षेत्रों को एक गुलदस्ते के रूप में जोड़कर विकास की दिशा में आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन प्रदेश के सभी क्षेत्रों को एक-दूसरे से जोड़ने के साथ ही उत्तराखंड की सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक सुंदरता और पर्यटन संभावनाओं को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

सचिव पर्यटन धीराज सिंह गर्ब्याल ने जानकारी देते हुए बताया कि अल्टीमेट उत्तराखंड हिमालयन स्क्वॉक्च चैलेंज-2026 की शुरुआत 20 नवंबर को मुक्तेश्वर से हुई है। साइकिल रेस प्रदेश के 10 जनपदों से गुजरते हुए लगभग 658 किलोमीटर का सफर तय कर 26 नवंबर को मसूरी में संपन्न होगी। उन्होंने बताया कि 18 राज्यों तथा एयरफोर्स, आर्मी व ITBP के कुल 66 व्यक्ति प्रतिभाग कर रहे हैं तथा 14 व्यक्ति विभिन्न कारणों से प्रतिभाग नहीं कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कुल 80 व्यक्तियों द्वारा पंजीयरण कराया गया था,

सचिव पर्यटन धीराज सिंह गर्ब्याल ने जानकारी देते हुए बताया कि उत्तराखंड सरकार द्वारा आयोजित अल्टीमेट उत्तराखंड हिमालयन स्क्वॉक्च चैलेंज-2026 का उद्देश्य केवल साइकिलिंग प्रतियोगिता कराना नहीं, बल्कि उत्तराखंड को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एडवेंचर टूरिज्म, माउंटेन साइक्लिंग और साहसिक खेलों के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करना है।

इस आयोजन के माध्यम से सरकार खेल, पर्यटन, स्थानीय अर्थव्यवस्था, संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण को एक साथ जोड़कर उत्तराखंड की वैश्विक पहचान मजबूत करना चाहती है।

उन्होंने अल्टीमेट उत्तराखंड हिमालयन स्क्वॉक्च चैलेंज-2026, अल्ट्रा मैराथन, एंगलिंग मीट सहित विभिन्न साहसिक खेलों के द्वारा सरकार के प्रमुख उद्देश्यों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि-

1. उत्तराखंड को अंतरराष्ट्रीय एडवेंचर टूरिज्म हब बनाना

हिमालयी क्षेत्रों को माउंटेन बाइकिंग और साहसिक खेलों के वैश्विक मानचित्र पर स्थापित करना। देश-विदेश के पेशेवर साइकिलिस्टों और पर्यटकों को उत्तराखंड की ओर आकर्षित करना। राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों को एडवेंचर स्पोर्ट्स के लिए एक विशिष्ट पहचान दिलाना।

2.शीतकालीन पर्यटन (Winter Tourism) को बढ़ावा देना

पर्यटन गतिविधियों को केवल गर्मियों और चारधाम यात्रा तक सीमित न रखना।

सर्दियों में भी पर्यटकों की आवाजाही बढ़ाना। ऑफ-सीजन में होटल, होमस्टे, रिसॉर्ट और स्थानीय पर्यटन कारोबार को प्रोत्साहित करना।

3. स्थानीय अर्थव्यवस्था एवं रोजगार को मजबूत करना

ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन आधारित रोजगार और स्वरोजगार के अवसर पैदा करना। स्थानीय युवाओं को गाइड, होमस्टे संचालक, परिवहन, खानपान और अन्य पर्यटन सेवाओं से जोड़ना।

4. उत्तराखंड की संस्कृति एवं प्राकृतिक संपदा का प्रचार

देश-दुनिया के प्रतिभागियों को उत्तराखंड की लोकसंस्कृति, लोककला, खानपान और परंपराओं से परिचित कराना। हिमालयी घाटियों, जैव विविधता और प्राकृतिक सुंदरता का प्रचार करना। 'लोकल फॉर वोकल' तथा स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहित करना।

5. प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण नए क्षेत्रों को पहचान दिलाना

प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त कम प्रसिद्ध पर्वतीय क्षेत्रों और ग्रामीण पर्यटन स्थलों को भी पर्यटन मानचित्र पर पहचान दिलाना। राज्य के विभिन्न जनपदों को पर्यटन की एक साझा श्रृंखला में जोड़ना आदि प्रमुख उद्देश्य हैं। इस दौरान प्रबंध निदेशक केएमवीएन विनीत तोमर, मुख्य विकास अधिकारी अरविंद कुमार पाण्डेय, प्रबंधक केएमवीएन मनीष सिंह, बीजेपी जिलाध्यक्ष प्रताप बिष्ट, दर्ज़ा राज्यमंत्री देवेंद्र ढेला, पर्यटन विकास परिषद सलाहकार समिति सदस्य नितिन राणा, जिला पर्यटन विकास अधिकारी कीर्ति आर्य आदि उपस्थित थे।

ओलिविया रोड्रिगो के लिए इस बार ग्रैमी अवॉर्ड्स बना बेहद खास

रॉबर्ट स्मिथ के साथ जुड़ने पर जताई खुशी

लॉस एंजेलिस। अमेरिकी गायिका और गीतकार ओलिविया रोड्रिगो के लिए इस बार ग्रैमी अवॉर्ड्स का नामांकन बेहद खास बन गया है। उन्हें सात अलग-अलग श्रेणियों में नामांकन मिला है। इस उपलब्धि से उत्साहित ओलिविया ने सोशल मीडिया पर अपनी खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि उनके एल्बम को इतने बड़े मंच पर पहचान मिलना उनके लिए बेहद सम्मान की बात है। खास बात यह है कि मशहूर ब्रिटिश गायक रॉबर्ट स्मिथ के साथ उनके गाने व्हाट्स रॉन्ग विद मी को भी दो श्रेणियों में नामांकन मिला है। ओलिविया ने इसे अपने सपने के सच होने जैसा अनुभव बताया।

ओलिविया ने इंस्टाग्राम पर अपनी प्रतिक्रिया साझा करते हुए लिखा कि सुबह उठने के बाद जब उन्हें सात नामांकनों की जानकारी मिली, तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उन्होंने कहा कि उन्हें अपना यह एल्बम बेहद पसंद है और इसे संगीत की दुनिया में इस तरह की पहचान मिलना उनके लिए बहुत बड़ा सम्मान है। रॉबर्ट स्मिथ के साथ गाने को मिली पहचान को लेकर उन्होंने विशेष उत्साह जताया। उनके मुताबिक, यह ऐसा मौका है, जिसका उन्होंने लंबे समय से सपना देखा था।

ओलिविया रोड्रिगो ने मनोरंजन की दुनिया में अपने करियर की शुरुआत बाल कलाकार के रूप में की थी। बचपन में वह कई विज्ञापनों में दिखाई दीं। साल 2015 में उन्होंने फिल्म एन अमेरिकन गर्लः ग्रेस स्टिर्स अप सक्सेस में काम किया। इसके बाद टेलीविजन की दुनिया में उनकी पहचान बढ़ी। वह बिजार्डवार्क और हाई स्कूल म्यूजिकलः द म्यूजिकलः द सीरीज जैसे कार्यक्रमों में मुख्य भूमिकाओं में नजर आईं। अभिनय में पहचान बनाने के बाद ओलिविया ने संगीत की दुनिया में कदम रखा। साल 2020 में उन्होंने गेफेन रिकॉर्ड्स के साथ समझौता किया।

हल्द्वानी में 24 नवंबर से सजेगा राष्ट्रीय स्तरीय सरस मेला-2026, 250 स्टॉलों पर दिखेगी देशभर के उत्पादों की झलक



के.के.पी संवाददाता

हल्द्वानी। मुख्य विकास अधिकारी अरविन्द कुमार पाण्डे की अध्यक्षता में राष्ट्रीय स्तरीय सरस मेला-2026 की तैयारियों को लेकर कोऑपरेटिव बैंक सभागार, हल्द्वानी में बैठक आयोजित की गई। बैठक में श्री पाण्डे ने बताया कि जनपद नैनीताल में 24 नवम्बर से 03 दिसम्बर 2026 तक एम.बी. इंटर कॉलेज मैदान, हल्द्वानी में राष्ट्रीय स्तरीय सरस मेला-2026 का आयोजन किया जाएगा। उन्होंने प्रदेश के स्वयं सहायता समूहों एवं स्थानीय उद्यमियों से मेले में बढ़-चढ़कर प्रतिभाग करने की अपील की। उन्होंने कहा कि इच्छुक स्वयं सहायता समूह एवं व्यापारी अपने स्टॉल का पंजीकरण शीघ्र कराएं, ताकि उन्हें मेले में अपनी कला, संस्कृति एवं उत्पादों के प्रदर्शन का अवसर मिल सके।

उन्होने ने बताया कि मेले में कुल 250 स्टॉल लगाए जाएंगे। स्टॉल का पंजीकरण पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर किया जाएगा। मेले में उत्तराखण्ड के साथ ही देश के अन्य राज्यों के स्वयं सहायता समूहों एवं व्यापारियों द्वारा प्रतिभाग किया जाएगा। कमर्शियल स्टॉल की दर 30 हजार रुपये प्रति स्टॉल निर्धारित की गई है। उन्होंने कहा कि यह मेला स्थानीय उत्पादों, हस्तशिल्प, लोक कला एवं महिला स्वयं सहायता समूहों को अपने उत्पादों के प्रचार-प्रसार एवं विपणन का बेहतर मंच प्रदान करेगा। उन्होंने माननीय मुख्यमंत्री जी से मेले का शुभारम्भ करने का अनुरोध भी किया। बैठक में मेले के सफल संचालन के लिए गठित विभिन्न समितियों को उनके दायित्व सौंपते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। मेला संचालन एवं नियंत्रण समिति को मेले के प्रत्येक स्तर पर निगरानी रखने तथा मेला स्थल पर संचालित गतिविधियों का नियमित निरीक्षण करने के निर्देश दिए गए। कार्यकारी एवं अनुरक्षण समिति को मेला स्थल की सुरक्षा, चिकित्सा, स्टॉल, विद्युत व्यवस्था सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने को कहा गया।

आवास एवं परिवहन समिति को स्वयं सहायता समूहों के आवागमन एवं आवास की कार्ययोजना तैयार करने तथा प्रतिभाग करने वाले कलाकारों के लिए आवश्यकतानुसार ठहरने की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। खान-पान समिति को स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के भोजन की व्यवस्था एवं टोकन प्रक्रिया निर्धारित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। मेला पंजीकरण एवं आवंटन समिति द्वारा स्वयं सहायता समूहों, स्थानीय एवं बाहरी व्यापारियों को स्टॉल आवंटित किए जाएंगे। वहीं, स्वागत समिति को मुख्य अतिथियों एवं विशिष्ट अतिथियों के स्वागत, पुष्पगुच्छ एवं उपहार की व्यवस्था करने के निर्देश दिए गए। लेखा समिति मेले के आय-व्यय का संपूर्ण विवरण रखेगी। मीडिया प्रबंधन एवं प्रचार-प्रसार नियंत्रण समिति को मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों को आमंत्रित करने, डिजिटल एवं अन्य प्रचार सामग्री तैयार करने तथा मेले के आयोजन से पूर्व व्यापक प्रचार-प्रसार सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। मेले के प्रचार-प्रसार के लिए उच्च गुणवत्ता वाली मीडिया टीजर सामग्री तैयार कर प्रसारित करने पर भी जोर दिया गया।

केयर नर्सिंग कॉलेज में मारपीट, तोड़फोड़ और आतंक का आरोप, ग्राम प्रधान विकास चौहान सहित 10 नामजद व एक दर्जन से अधिक अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज, 200 से अधिक छात्राएं दहशत में



के.के.पी संवाददाता

बहादराबाद / हरिद्वार। हरिद्वार जिले के बहादराबाद थाना क्षेत्र में स्थित केयर नर्सिंग कॉलेज, किशनपुर-रोहलकी में रविवार की रात हुई कर्मचारियों से मारपीट, गाली-गलौज, तोड़फोड़ और भय का माहौल बनाने की घटना ने पूरे क्षेत्र में सनसनी फैला दी है। इस मामले में पुलिस ने ग्राम प्रधान सहित 10 लोगों को नामजद करते हुए एक दर्जन से अधिक अज्ञात लोगों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी है। कॉलेज में रह रही 200 से अधिक छात्राओं की सुरक्षा को लेकर भी गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं और कॉलेज प्रबंधन ने पुलिस से छात्राओं की सुरक्षा व्यवस्था दुरुस्त करने की मांग की है।

केयर नर्सिंग कालेज के केयरटेकर शिकायतकर्ता राजकुमार चौहान ने बताया कि 15 नवंबर 2026, रविवार को कॉलेज में पार्किंग का काम चल रहा। रात करीब 9 बजकर 20 मिनट पर जब रैम्प का बाहरी भाग बन रहा था, तभी रोहलकी ग्राम प्रधान विकास चौहान, अभि चौहान, आर्यन, शुभम चौहान, शुभम, योगेश, संजीव डीलर, सचिन, मोहित, शानू, विशाल (सभी आरोपी निवासीगण-किशनपुर-रोहलकी)आदि अज्ञात एक दर्जन भर से ज्यादा लोग शराब के नशे में वहां आ गए। आरोप है कि इन लोगों ने आते ही शिकायतकर्ता के साथ गाली-गलौज शुरू कर दी और मजदूरों के साथ मारपीट शुरू कर दी। सभी लोग प्रधान विकास चौहान की अगुवाई में आए थे।

बताया गया कि प्रधान विकास चौहान ने फावड़ा उठाकर शिकायकर्ता पर हमला कर दिया, जिससे उन्हें काफी चोटें आईं। प्रधान विकास चौहान ने जोर-जोर से गाली-गलौज, मारपीट करते हुए तुरंत जेसीबी मशीन बुलाई और निर्माणाधीन रैम्प के साथ लगी शेटरिंग, बाहर की बाउंड्री, वाहनों की आवाजाही के लिए बने स्लैप आदि तोड़ दी। आरोपियों द्वारा कॉलेज गेट के बाहर किया जा रहे हंगामे की सूचना 112 पर भी दी गई थी।

शिकायत में कहा गया है कि इसके बाद आरोपी प्रधान विकास चौहान व उसके साथियों ने जबरन कॉलेज की संपत्ति को नुकसान पहुंचाते हुए क्षेत्र में भय का माहौल उत्पन्न कर दिया है। कॉलेज में छात्राएं भी रहती हैं, जिनमें करीब 200 से अधिक बेटियां रहती हैं। आरोपियों द्वारा उत्पात मचाए जाने के बाद से कॉलेज का समस्त स्टाफ, फैकल्टी तथा कॉलेज में रह रही छात्राएं भयभीत व सहमी हुई हैं।

शिकायतकर्ता ने इस मामले में प्रधान सहित ज्ञात व अज्ञात सभी असामाजिक तत्वों पर गाली-गलौज, मारपीट, कॉलेज में तोड़-फोड़, कॉलेज संपत्ति को नुकसान पहुंचाने, क्षेत्र में भय व डर का माहौल उत्पन्न करने के मामले में उचित व ठोस कार्यवाही करते हुए कॉलेज में रह रही छात्राओं की सुरक्षा व्यवस्था को दुरुस्त करने की मांग की है।

पुलिस ने इस तहरीर के आधार पर भारतीय न्याय संहिता, 2023 की धारा 115(2), 191(2), 324(2) और 352 के तहत मुकदमा दर्ज किया है। धारा 115(2) स्वेच्छा से चोट पहुंचाने, धारा 191(2) दंगा करने, धारा 324(2) शरारत करके नुकसान पहुंचाने तथा धारा 352 शांति भंग करने के इरादे से जानबूझकर अपमान करने से संबंधित है। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर विवेचना शुरू कर दी गई है। कॉलेज प्रबंधन का कहना है कि कॉलेज में 200 से अधिक छात्राएं रहकर पढ़ाई करती हैं। ऐसे में रात के समय इस तरह की घटना से छात्राओं की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। छात्राएं इस घटना के बाद से डरी हुई हैं। उनके अभिभावकों में भी चिंता है। कॉलेज प्रबंधन ने पुलिस से छात्राओं की सुरक्षा के लिए विशेष व्यवस्था करने की मांग की है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि क्षेत्र में इस तरह की घटना से कानून व्यवस्था को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। एक तरफ जहां कॉलेज जैसे शिक्षण संस्थान में इस तरह की घटना होती है, वहीं दूसरी तरफ ग्राम प्रधान जैसे जिम्मेदार पद पर बैठे व्यक्ति द्वारा ऐसा करना गंभीर माना जा रहा है। लोगों का कहना है कि यदि प्रधान ही इस तरह नशे में घुत होकर घटना में शामिल होगा, तो आम जनता का भरोसा किस पर रहेगा। पुलिस सूत्रों के अनुसार, मामले में नामजद सभी आरोपियों के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है। सभी आरोपी किशनपुर-रोहलकी बहादराबाद, हरिद्वार के निवासी बताए गए हैं। पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

विरान हो रहे जापान के एक गांव में पुतलों ने जगाई रौनक

टोक्यो। जापान के वीरान हो रहे गांव में रौनक वापस लाने के लिए स्थानीय कलाकार सुकिमी अयानो ने एक असाधारण कदम उठाया है। कभी इस गांव की आबादी 300 से अधिक हुआ करती थी, लेकिन आज यहाँ 30 से भी कम लोग बचे हैं। उन्होंने गांव छोड़कर जा चुके या दुनिया से विदा ले चुके लोगों की याद में 350 से ज्यादा आदमकद पुतले बनाकर पूरे गांव में बैठा दिए हैं। जापान के शिकोकू पहाड़ों में बसा अनोखा गांव नागोरो, अब इंसानों से ज्यादा पुतलों के लिए जाना जाता है। ये पुतले सिर्फ सजावट के लिए नहीं हैं, बल्कि गांव के पुराने लोगों की जिंदा यादें हैं। अकेलेपन से लड़ने के लिए बनाए गए ये पुतले जापान के ग्रामीण इलाकों में बढ़ती जनसांख्यिकीय समस्या की एक मार्मिक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। साल 2000 की शुरुआत से, जब लोग रोजगार की तलाश में शहर जाने लगे या बुजुर्गों का निधन होने लगा, तो गांव तेजी से खाली होने लगा। इसी कमी को पूरा करने के लिए अयानो ने अपने हाथों से पुतले तैयार किए। इस अनोखी कहानी की शुरुआत साल 2002 के आसपास हुई, जब अयानो ओसाका में अपनी जिंदगी बिताने के बाद अपने बुजुर्ग पिता की देखभाल के लिए वापस गांव लौटी थीं। शुरुआत में उन्होंने ये पुतले किसी की याद में नहीं बनाए थे, बल्कि अपने बगीचे की सब्जियों को कौवों से बचाने के लिए एक बिजूका बनाया था और उसे अपने पिता के पुराने कपड़े पहना दिए थे। वह पुतला उनके पिता से इतना मिलता-जुलता था कि गुजरने वाले पड़ोसी उसे असली समझकर नमस्ते करने लगे, जिससे अयानो को और पुतले बनाने की प्रेरणा मिली। हर पुतला किसी ऐसे व्यक्ति की शक्ल पर बनाया गया है जो या तो मर चुका है या गांव छोड़कर जा चुका है, और उन्हें उन्हीं जगहों पर रखा गया है जहाँ वे पहले काम करते थे। आप उन्हें खेत में काम करते हुए, नदी किनारे मछली पकड़ते हुए या बस स्टॉप पर इंतजार करते हुए देख सकते हैं। मौसम की मार से पुराने पुतले खराब भी होते रहते हैं, इसलिए हाल की गिनती में गांव में करीब 150 पुतले मौजूद हैं, जो फिर भी वहाँ के असली इंसानों से कई गुना ज्यादा हैं। गांव में बच्चों की संख्या खत्म होने के कारण साल 2012 में नागोरो का पुराना प्राथमिक स्कूल हमेशा के लिए बंद हो गया था। अयानो ने इस सूने स्कूल की क्लास को भी पुतलों से भर दिया है, जहाँ डेस्क पर छोटे-छोटे पुतले बच्चे बैठे हैं और ब्लैकबोर्ड के सामने एक पुतला टीचर पढ़ाता नजर आता है। इतना ही नहीं, वह हर साल गांव में एक पारंपरिक खेल दिवस भी आयोजित करती हैं, जिसमें पुतलों के साथ-साथ असली ग्रामीण और बाहर से आए मेहमान भी हिस्सा लेते हैं। नागोरो की ये कहानी सिर्फ एक गांव की नहीं है, बल्कि ये पूरे जापान के ग्रामीण इलाकों की गंभीर समस्या को दिखाती है। जापान के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पॉपुलेशन एंड सोशल सिक्योरिटी रिसर्च के आंकड़ों के मुताबिक, कम जन्म दर के कारण देश की आबादी तेजी से घट रही है और 2054 तक इसके 10 करोड़ से नीचे जाने का अनुमान है।

बच्चे को खेल-खेल में मिला बेहद दुर्लभ 'कोनुलेरिड' जीवाश्म

वाशिंगटन। पार्क में खेल रहे बच्चे ने एक पत्थर के नीचे से 50 करोड़ साल पुराना बेहद दुर्लभ 'कोनुलेरिड' जीवाश्म खोज निकाला। यह घटना है अमेरिका के नेब्रास्का शर की, जहां एक 6 साल के छोटे से बच्चे ने कमाल कर दिया है। बच्चे के हाथ लगे इस अजीब और प्राचीन फॉसिल ने पिछले 55 सालों का सूखा पूरी तरह खत्म कर दिया है, क्योंकि नेब्रास्का में इतने लंबे समय से ऐसा कोई नया जीवाश्म दर्ज नहीं किया गया था। इस अनोखी खोज को देखकर बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी हैरान रह गए हैं, क्योंकि यह धरती के प्राचीन समुद्री इतिहास और पुराने रहस्यों से जुड़े कई नए राज सामने ला सकती है। यह हैरान कर देने वाली घटना नेब्रास्का की है, जहाँ एक छोटा सा लड़का पार्क में 'रैफ्टिंग एंड रॉक्स' नाम के एक कार्यक्रम में हिस्सा ले रहा था।

पार्क की चूना पत्थर वाली चट्टानों के बीच वो जीवाश्म तलाश रहा था। खेलते-खेलते उसकी नजर एक साधारण से दिखने वाले पत्थर पर पड़ी, जिस पर कुछ अजीब सी चमचमाती और उभरी हुई लाइनें बनी थीं। जैसे ही उसने उस पत्थर को उठाया, उसे उस पर एक बहुत ही अलग और अनोखा डिजाइन दिखाई दिया। बच्चे ने बिना देर किए उस अजीबोगरीब पत्थर को वहाँ मौजूद एक आउटडोर एजुकेशन स्पेशलिस्ट केली इक्यू को लाकर दिखाया। केली पार्क में आने वाले बच्चों को जीवाश्म ढूंढने में मदद करती हैं। जब उन्होंने उस पत्थर को गौर से देखा, तो वे हैरान रह गईं क्योंकि उस पर बनी धारियों का पैटर्न पार्क में आमतौर पर मिलने वाले छह तरह के जीवाश्मों से बिल्कुल अलग था।

आमतौर पर वहाँ क्रिनॉइड्स या ब्रायोजोन्स जैसे जीवाश्म मिलते हैं, लेकिन यह उन सबसे हटकर था। केली इक्यू ने तुरंत उस पत्थर की एक तस्वीर खींची और उसकी राय जानने के लिए विशेषज्ञों को भेजी। वह तस्वीर देखते ही देखते राज्यभर के कई बड़े वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों तक पहुँच गई।

विशेषज्ञों ने जब उस फोटो की बारीकी से जांच की, तो वे हैरान रह गए। उन्होंने पाया कि वो चूना पत्थर पर छपा हुआ लगभग 2.75 इंच का निशान कोई आम चीज नहीं, बल्कि एक बेहद दुर्लभ 'कोनुलेरिड' का जीवाश्म इंप्रेशन है। जानकारों ने बताया कि उस प्राचीन जीव के शरीर का केवल बाहरी पैटर्न ही चूना पत्थर पर दबकर हमेशा के लिए जीवाश्म के रूप में सुरक्षित रह गया था, जो कि अपने आप में एक बहुत बड़ी खोज है। 'कोनुलेरिड' असल में समुद्र में रहने वाले वे प्राचीन जीव थे, जो आज से करीब 20 करोड़ से 50 करोड़ साल पहले धरती के महासागरों में हुआ करते थे, लेकिन अब पूरी तरह विलुप्त हो चुके हैं। नेब्रास्का गेम एंड पार्क्स के अनुसार, ये जीव देखने में कुछ-कुछ जेलीफिश जैसे होते थे और इनका आकार किसी उल्टे पिरामिड की तरह चारों तरफ से एक जैसा होता था।

'देश को नीचा दिखाने में लगे हैं राहुल गांधी': हेमा मालिनी



नई दिल्ली। बीजेपी सांसद और एक्ट्रेस हेमा मालिनी ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी पर निशाना साधा है। शुक्रवार को उन्होंने कहा कि राहुल हमारे देश के हमेशा नीचा करने में लगे हुए हैं। नागपुर में पत्रकारों से बात करते हुए हेमा मालिनी ने कहा, 'राहुल गांधी हर वक्त यही बात करते हैं कि हमारा देश खराब स्थिति में है, जबकि हमारा देश इस वक्त एकदम बढ़िया स्थिति में है। यह बात हम सभी लोग जानते हैं लेकिन राहुल इसे बार-बारे नीचे दिखाने की कोशिश करते हैं। वह मोदी सरकार को हमेशा नीचा करने में लगे रहते हैं तो वैसे ही बात करेंगे। हम यह सब जानते हैं और क्या ही बताया जाए। दरअसल, अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच गुरुवार को बैठक हुई थी। राहुल गांधी ने इसकी तस्वीर शेयर करते हुए कहा कि समझौता कर चुके प्रधानमंत्री कभी इस मेज पर नहीं बैठ सकते। उन्होंने एक्स पर लिखा, 'अगर कांग्रेस सत्ता में होती तो भारत के प्रधानमंत्री इस मेज पर बैठे होते। समझौता कर चुके प्रधानमंत्री कभी इस मेज पर नहीं बैठ सकते।' बीजेपी नेता इस पोस्ट को लेकर राहुल पर लगातार हमलावर हैं। भजपा के राष्ट्रीय मीडिया संयोजक आशीष ऊषा अग्रवाल ने कहा कि अमेरिका, रूस और चीन की त्रिपक्षीय बैठक भारत की वैश्विक स्थिति तय नहीं करती। उन्होंने ब्रिक्स, क्वाड, एससीओ, जी20 और जी7 जैसे मंचों के माध्यम से प्रतिस्पर्धी शक्तियों के साथ भारत की सक्रिय भागीदारी का हवाला दिया। अग्रवाल ने कहा कि भारत 2016 में मिसाइल प्रौद्योगिकी नियंत्रण व्यवस्था (MTCR), 2017 में वासेनार व्यवस्था और 2018 में ऑस्ट्रेलिया समूह में शामिल हुआ और 2017 में शंघाई सहयोग संगठन (SCO) का पूर्ण सदस्य बना। उन्होंने सवाल उठाया कि जब डॉ. मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री थे तब कांग्रेस नेता सोनिया गांधी विदेशी राष्ट्राध्यक्षों से क्यों मिलती थीं और अधिकारिक तौर पर उनका क्या अधिकार था। आशीष ऊषा अग्रवाल ने कहा, 'भारत की वैश्विक स्थिति रणनीतिक स्वायत्तता, राष्ट्रीय हित और संस्थागत मजबूती पर आधारित है, न कि वंशवादी विशेषाधिकार या तस्वीर खिंचवाने के अवसरों पर। भारत को उपदेश देने से पहले कांग्रेस को अपने रिकॉर्ड पर जवाब देना चाहिए। बीजेपी के सोशल मीडिया राष्ट्रीय संयोजक दीपक म्हस्के ने कहा, 'हर अंतरराष्ट्रीय समूह भारत के इर्द-गिर्द नहीं घूमता, राहुल गांधी! कूटनीति की थोड़ी समझ से मदद मिलेगी।'

उन्होंने एक्स पर कहा कि एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (APEK) की स्थापना नवंबर 1989 में हुई थी, जब आपके पिता राजीव गांधी भारत के प्रधानमंत्री थे। यह प्रशांत महासागर के तटवर्ती देशों की अर्थव्यवस्थाओं का मंच है।

CM योगी की मां का निधन बेहद दुखद; अखिलेश यादव ने दी श्रद्धांजलि



लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की मां के निधन पर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने दुख व्यक्त करते हुए गहरी संवेदना जताई है। उन्होने एक्स पर लिखा कि उप्र के मुख्यमंत्री की पूज्य माता के निधन का समाचार अत्यंत दुखद है। विनम्र श्रद्धांजलि के साथ उनकी आत्मा की शांति के लिए हम प्रार्थना करते हैं। शोक संतप्त परिजनों के प्रति हमारी गहरी संवेदनाएं। आपको बता दें सीएम योगी आदित्यनाथ की मां सावित्री देवी का (शुक्रवार) 91 साल की उम्र में निधन हो गया। उन्होंने उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले के यमकेश्वर ब्लॉक स्थित अपने पैतृक गांव पंचूर में अंतिम सांस ली। बताया जा रहा है कि वह पिछले कुछ दिनों से बीमार थीं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के भाई ने उनके निधन की पुष्टि की है। सावित्री देवी के निधन की खबर से पंचूर गांव सहित पूरे क्षेत्र में शोक की लहर है। जानकारी के अनुसार, सावित्री देवी शुक्रवार सुबह करीब 11 बजे अपने आवास पर दुनिया को अलविदा कह गईं। वह अपने छोटे बेटे के साथ गांव में रहती थीं। उनका पार्थिव शरीर शनिवार को हरिद्वार लाया जाएगा, जहां अंतिम संस्कार किया जाएगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के भी अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए हरिद्वार पहुंचने की संभावना है। सावित्री देवी उम्र संबंधी स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रही थीं। इससे पहले 14 मई 2024 को तबीयत बिगड़ने पर उन्हें ऋषिकेश स्थित अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती कराया गया था। उन्हें जिरियाट्रिक वार्ड में रखा गया था। मां के अस्पताल में भर्ती होने की जानकारी मिलने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उनका हालचाल जानने एम्स पहुंचे थे।

योगी और केशव मौर्य समेत यूपी भाजपा के टॉप 4 नेता खुद संभालेंगे सीट बंटवारे की कमान, CM किससे करेंगे बात



लखनऊ। उत्तर प्रदेश में 2027 में होने वाले विधानसभा चुनाव के लिए एनडीए के सहयोगी दलों के साथ सीट बंटवारा किसी बड़ी चुनौती से कम नहीं है. 403 विधानसभा सीटों में से किस सहयोगी को कितनी सीटें दी जाएंगी ये उनसे बातचीत के बाद ही तय हो सकेगा. एनडीए में शामिल सभी दलों से सीट बंटवारे पर बातचीत करने की जिम्मेदारी बीजेपी के चार बड़े नेताओं को सौंपी गई है, ताकि इस पर सहमति बन सके. सीएम योगी, डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी को ये बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है.

ये चारों बड़े नेता एनडीए में शामिल अलग-अलग दलों से सीट बांटवारे पर बात करेंगे, ताकि तय की गईं सीटों के लिए उनको राजी किया जा सके और कोई मन-मुटाव भी न हो. ये नेता बिना नाराजगी सीट बंटवारे पर सहयोगी दलों को राजी करने की कोशिश करेंगे. बीजेपी ने सहयोगी दलों से सीट बंटवारे मध्यस्थता की जिम्मेदारी सीएम, दोनों डिप्टी सीएम और प्रदेश अध्यक्ष को सौंपी है. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राष्ट्रीय लोकदल (RLD) से बातचीत कर जयंत चौधरी को तय की गई सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार करेंगे. वहीं डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक, अपना दल (एस) से बातचीत करेंगे, ताकि अनुप्रिया पटेल बिना नाराजगी तय सीटों के लिए मान जाएं. वहीं यूपी प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी के पास निषाद पार्टी और संजय निषाद से बात करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है. डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य, सुभासपा और ओपी राजभर से बातचीत करेंगे.रिपोर्टों के मुताबिक, सहयोगी दलों की मांगों और पिछले चुनावों के प्रदर्शन के आधार पर ही इस चुनाव के लिए सीटों का फॉर्मूला तय किया जाएगा.

65 देशों में छापा, 688 अरेस्ट, 2394 चोरी की गाड़ियां जब्त... इंटरपोल का कार चोरों पर सबसे बड़ा एक्शन



नई दिल्ली: इंटरपोल ने दुनिया भर में चोरी की गाड़ियों की तस्करी करने वाले नेटवर्क के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है. इंटरपोल के नेतृत्व में चलाए गए इस अंतरराष्ट्रीय ऑपरेशन में 65 देशों की पुलिस और जांच एजेंसियां शामिल हुईं.

ऑपरेशन के दौरान कुल 688 लोगों को गिरफ्तार किया गया, जबकि चोरी की 2,394 गाड़ियां जब्त की गईं. इसके अलावा गाड़ियों के 1,891 पुर्जे भी बरामद किए गए. कार्रवाई के दौरान ड्रग्स, नकदी और हथियार भी जब्त किए गए हैं. इस ऑपरेशन में 30 संगठित आपराधिक गिरोहों का नेटवर्क तोड़ा गया है, जबकि कई अन्य गिरोहों की जांच अभी जारी है.

इंटरपोल ने इस ऑपरेशन को 'ऑपरेशन कारबैक-2' नाम दिया था. यह कार्रवाई 28 सितंबर से 9 अक्टूबर 2026 के बीच की गई. इसमें यूरोपीय सीमा सुरक्षा एजेंसी फ्रोंटेक्स ने भी सहयोग किया.

ऑपरेशन का मकसद चोरी की गाड़ियों की तस्करी रोकना, अंतरराष्ट्रीय आपराधिक नेटवर्क को खत्म करना और यह पता लगाना था कि चोरी की गाड़ियों का इस्तेमाल दूसरे गंभीर अपराधों में किस तरह किया जा रहा है.

ऑपरेशन के दौरान अलग-अलग देशों में गाड़ियों, यात्रियों और मालवाहक वाहनों की सघन जांच की गई.

इंटरपोल के डेटाबेस में 15 लाख से ज्यादा सर्च किए गए, जिनमें 1,180 मामलों में संदिग्ध रिकॉर्ड मिले. इनमें 4 लाख 80 हजार से ज्यादा गाड़ियों के रजिस्ट्रेशन की जांच इंटरपोल के चोरी हुए वाहनों के डेटाबेस से की गई.

जांच में सामने आया कि चोरी की गाड़ियां सिर्फ बेचने के लिए नहीं चुराई जातीं, बल्कि इनका इस्तेमाल ड्रग्स, हथियार और दूसरे गैरकानूनी सामान की तस्करी में भी किया जाता है. कई आपराधिक गिरोह चोरी की गाड़ियों को दूसरे गिरोहों के बीच भुगतान के तौर पर इस्तेमाल करते हैं.

इंटरपोल के मुताबिक, चोरी की गाड़ियों का यह कारोबार संगठित अपराध के लिए कमाई का बड़ा जरिया बन चुका है.

ग्रीस में कार्रवाई के दौरान पुलिस ने फ्रांस के रजिस्ट्रेशन नंबर वाली तीन गाड़ियों को संदिग्ध हालत में पकड़ा. जांच में उनके दस्तावेज फर्जी पाए गए.

गंगा नदी पर 10 च रूलंबा नीतीश सेतु तैयार, पटना-वैशाली ही नहीं, सीतामढ़ी-समस्तीपुर-दरभंगा तक बढ़ेगी कनेक्टिविटी



पटना। बिहार के वैशाली जिले में गंगा नदी पर बना 'नीतीश सेतु' 21 नवंबर से आम जनता के लिए खुलने वाला है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस 6-लेन पुल का उद्घाटन करेंगे. यह पुल पटना के कच्ची दरगाह को वैशाली के बिदुपुर से कनेक्ट कर देगा. खास बात यह है कि यह पुल केवल नहीं है बल्कि उत्तर बिहार को दक्षिण बिहार से जोड़ने वाली एक लाइफलाइन है, जो देश के सबसे लंबे नदी पुलों में से एक है. पटना, वैशाली, हाजीपुर, विदपुर, राजापाकर, राघोपुर, दियारा जैसे इलाकों को इस पुल का सीधा फायदा होने वाला है. इन शहरों के बीच कनेक्टिविटी भी मजबूत होने वाली है. नीतीश सेतु के खुलते ही पटना से वैशाली का सफर महज 20 से 25 मिनट में पूरा हो जाएगा. क्योंकि अभी महात्मा गांधी पुल से होकर जाने में दोनों शहरों के बीच करीब 1 घंटा 15 मिनट से 1.5 घंटा लगता है. लेकिन अब महज 20 से 25 मिनट में यह सफर हो जाएगा. जिससे लोगों के लिए अब करीब 50 मिनट से 1 घंटे की बचत हो जाएगी. वहीं पटना से बिदुपुर जाने में भी आसानी होगी, क्योंकि अभी गांधी सेतु पर जाम की स्थिति बनी रहती है. लेकिन अब बिदुपुर होकर सीधा रास्ता हो जाएगा.

इसके अलावा पटना के ट्रैफिक भी रिलीव मिलेगा. क्योंकि झारखंड के साथ-साथ गया, जहानाबाद, नालंदा जिलों की तरफ से आने वाले वाहनों को अब पटना शहर में घुसे बिना सीधे उत्तर बिहार जा सकेंगे. इससे पटना के अंदर ट्रैफिक भी कम होगा. जिससे यह सेतु पटना के लिए भी अहम है. इसकी सबसे बड़ी खासियत इसकी तकनीक है. यह एक्स्ट्राडोज्ड केबल-स्टेड तकनीक से बना है. देखने में यह ग्रेटर नोएडा वेस्ट के पर्थला ब्रिज जैसा लगता है. पुल को दक्षिण कोरिया की कंपनी देवू और L&T के ज्वाइंट वेंचर ने बनाया है और डिजाइन भी कोरियाई कंपनी ने ही तैयार किया है. गंगा में 67 विशाल पिलर खड़े किए गए, जिनकी नींव नदी के तल से 60 मीटर नीचे तक गई है. पिलरों के बीच 150 मीटर तक की दूरी रखी गई है, ताकि नीचे से जहाज और नाव आसानी से गुजर सकें.

चीन बना रहा हवा में झूलता सबसे लंबा पुल, 2.3 च रूका सबसे लंबा सस्पेंशन ब्रिज, एक साथ बनेंगे 6 वर्ल्ड रिकॉर्ड



नई दिल्ली। चीन दुनिया का सबसे लंबा सस्पेंशन ब्रिज बना रहा है. हम बात कर रहे हैं झांगजिंगगाओ यांग्त्जी नदी पर बन रहे पुल (Zhangjinggao Yangtze River Bridge) की. सस्पेंशन ब्रिज यानी ऐसा पुल जो नीचे से खंभों पर नहीं टिका होता, बल्कि ऊपर से मोटी केबलों पर लटका होता है. जब यह पुल बनकर तैयार हो जाएगा तो यह एक साथ 6 वर्ल्ड रिकॉर्ड्स को तोड़ देगा. चीनी मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार पूर्वी चीन के जिआंगसु प्रांत में बन रहे इस खास पुल के साउथ चैनल ब्रिज के साउथ एंकरेज का मुख्य ढांचा पूरा हो गया है. इससे इस बड़े प्रोजेक्ट में बड़ी प्रगति हुई है. यह पुल जिआंगसु प्रांत के तीन शहरों- सूझोऊ के झांगजियागांग, ताइझोऊ के जिंगजियांग और नानतोंग के रुगाओ- को आपस में जोड़ेगा. उम्मीद है कि 2028 तक यह पुल बनकर तैयार हो जाएगा और इस पर यातायात शुरू हो जाएगा. झांगजिंगगाओ यांग्त्जी नदी पर इस पुल की कुल लंबाई 7,900 मीटर होगी. इसमें उत्तर और दक्षिण दोनों तरफ अप्रोच ब्रिज और नेविगेशन सेक्शन होंगे. इसमें दोनों तरफ मिलाकर 8 लेन होंगी और गाड़ियां 100 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से चल सकेंगी. साउथ नेविगेशन ब्रिज का स्पैन 2,300 मीटर होगा. यह दुनिया का सबसे बड़े स्पैन वाला सस्पेंशन ब्रिज होगा. अगस्त में ही चीन ने 2,000 मीटर लंबे स्पैन की बाधा को पार कर लिया है, जो चीन के पुल निर्माण के इतिहास में बड़ी उपलब्धि है. कमाल की बात है कि इसके दोनों टावरों की ऊंचाई 350-350 मीटर है. इनमें करीब 34,000 मीट्रिक टन स्टील लगा है, जो चार से ज्यादा एफिल टावर बनाने जितना है.

लॉरेंस बिश्नोई के नाम से मांगे 60 लाख, 10 के नोट के टुकड़े से डराया, ड्राइवर का बेटा ही निकला मास्टरमाइंड



नई दिल्ली: दिल्ली के जनकपुरी इलाके में 60 लाख रुपये की रंगदारी मांगने के मामले में पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है. हैरानी की बात यह है कि आरोपी ने खुद को गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई का भाई अनमोल बिश्नोई बताकर धमकी दी थी.

आरोपी ने WhatsApp पर धमकी भरे मैसेज भेजकर 60 लाख रुपये की मांग की थी. इतना ही नहीं, परिवार को डराने के लिए उसने एक खास तरीके से धमकी भी पहुंचाई. आरोपी ने 10 रुपये के नोट को लैमिनेट करवाकर उसके दो टुकड़े किए और उसका आधा हिस्सा एक लिफाफे में रखकर घर भिजवा दिया.

दिल्ली पुलिस के मुताबिक, जनकपुरी के रहने वाले कारोबारी जतिन गाबा ने पुलिस में शिकायत दी थी कि उनके परिवार को WhatsApp पर लगातार धमकी भरे मैसेज मिल रहे हैं और 60 लाख रुपये की रंगदारी मांगी जा रही है. इसके अलावा उनके घर पर एक लिफाफा भी पहुंचा था, जिसमें लैमिनेट किए गए 10 रुपये के नोट का आधा हिस्सा रखा हुआ था. मामले की गंभीरता को देखते हुए जनकपुरी थाना पुलिस की टीम ने जांच शुरू की और घर के आसपास लगे CCTV कैमरों की फुटेज खंगाली.

CCTV फुटेज और तकनीकी जांच के जरिए पुलिस ने उस शख्स की पहचान की, जिसने शिकायतकर्ता के घर तक लिफाफा पहुंचाया था. यह शख्स पंकज गौतम था, जो रैपिडो राइडर का काम करता है. पूछताछ में पंकज ने बताया कि उसे मानेसर, गुरुग्राम से एक ऑनलाइन राइड बुक की गई थी और एक लिफाफा जनकपुरी स्थित शिकायतकर्ता के घर पहुंचाने के लिए कहा गया था.

इसके बाद पुलिस ने मोबाइल नंबर की जांच की और एक दूसरे नंबर का पता लगाया. तकनीकी जांच में यह नंबर रायबरेली के रहने वाले 27 साल के आशु मौर्य के नाम पर रजिस्टर्ड मिला. पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आशु मौर्य को गिरफ्तार कर लिया.

पूछताछ में आरोपी ने खुलासा किया कि उसे पैसों की जरूरत थी और इसी वजह से उसने 60 लाख रुपये की रंगदारी वसूलने की योजना बनाई थी.

राजभर, निषाद और जयंत क्यों लगातार बढ़ा रहे भाजपा पर दबाव



लखनऊः उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले गठबंधन को लेकर रस्साकशी का दौर जारी है. एक तरफ भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन में सीट बंटवारे को लेकर खींचतान मची है तो वहीं दूसरी तरफ सपा और कांग्रेस में मोलभाव तेज है. यदि सपा को कांग्रेस ने बड़ी संख्या में सीटें मांग कर पसोपेश में डाला है तो वहीं भाजपा तो 4 दलों के साथ डील कर रही है. एक तरफ ओमप्रकाश राजभर की सुभासपा ने 30 से 36 सीटें मांग ली हैं तो वहीं निषाद पार्टी की भी कुछ ऐसी ही मांग बताई जाती है. फिर अनुप्रिया पटेल का अपना दल और पश्चिम जयंत चौधरी का रालोद भी अडजस्ट करना है. भाजपा के लिए इन चारों दलों को साथ लेकर विपक्ष को चारों खाने चित्त करना है और ये मंसूबे तभी पूरे होंगे, जब गठबंधन का सामंजस्य बना रहे.

इस सामंजस्य में रोड़ा बन रही है सहयोगी दलों की मांग. अब सवाल है कि आखिर इन दलों ने इतनी मांग क्यों बढ़ा ली है और भाजपा के लिए साधना मुश्किल क्यों हो रहा है. इसकी मुख्य वजह यह भी मानी जा रही है कि फिलहाल भाजपा सामाजिक न्याय के मुद्दे पर पीछे नहीं दिखना चाहती. ऐसे में निषाद और राजभर समाज के लोगों के नाम पर दो सहयोगी दल तेवर दिखा रहे हैं. भाजपा के लिए गोरखपुर और आसपास के इलाकों में निषाद वोट तो वहीं पूर्वांचल के ही एक हिस्से में राजभर वोट जरूरी है. पर इन वोटों की कीमत पर सीटें कितनी दी जाएं, इसी बात की चिंता है. बात 2022 की करें तो सुभासपा ने सपा के साथ मिलकर 19 सीटों पर चुनाव लड़ा था. माना जा रहा है कि भाजपा भी उन्हें इतनी ही सीटों पर थामने का प्रयास करेगी. इसके अलावा निषाद पार्टी पहले भी 10 सीटों पर लड़ी थी और एक दर्जन से ज्यादा मुश्किल ही मिलेंगी. यदि उसके सिंबल पर ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ा गया तो कुछ पर कैंडिडेट भाजपा कोटे के ही उतारे जा सकते हैं. लेकिन सबसे बड़ा पेच रालोद पर फंसेगा. समाजवादी पार्टी ने 2022 में उसे लड़ने के लिए 33 सीटें दी थीं. ऐसे में देखना होगा कि जयंत चौधरी को भाजपा कितने पर साध पाती है. मेरठ, मुजफ्फरनगर, बागपत, गाजियाबाद, सहारनपुर, बिजनौर, हापुड़ समेत पश्चिम यूपी के कई जिले हैं, जहां जाट वोटर चुनावी हवा तय करते हैं. इसलिए रालोद को सम्मानजनक सीटें देना जरूरी हो जाता है. जाट वोटरों के इस प्रभाव की कीमत रालोद ज्यादा सीटों से वसूलना चाहेगी.

'सिराज को प्लेइंग XI से बाहर क्यों रखा, क्या नाम ही वजह है?' भड़के कांग्रेस सांसद, बीजेपी का पलटवार



नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम की प्लेइंग इलेवन में मोहम्मद सिराज को जगह नहीं मिलने पर अब सियासी घमासान छिड़ गया है। कांग्रेस ने तेज गेंदबाज सिराज को टीम से बाहर रखने पर सवाल उठाते हुए भेदभाव का आरोप लगाया है। वहीं, बीजेपी ने कांग्रेस पर क्रिकेट में भी वोट बैंक की राजनीति करने और टीम चयन को सांप्रदायिक रंग देने का आरोप लगाया है। कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने सिराज को टीम में शामिल नहीं किए जाने पर सवाल उठाते हुए उनकी धार्मिक पहचान की ओर इशारा किया। उन्होंने कहा कि सिराज अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, इसके बावजूद उन्हें टीम में जगह नहीं दी जा रही है। इमरान मसूद ने कहा, ''उसका नाम सिराज है, क्या यही वजह काफी नहीं है? अगर वह अच्छा प्रदर्शन कर रहा है और फिर भी उसका चयन नहीं हो रहा है, तो इसकी दूसरी वजह क्या हो सकती है? यही एक वजह हो सकती है, इसके अलावा कोई और कारण नहीं हो सकता। एक अन्य बातचीत में भी मसूद ने कहा कि सिराज के अच्छे प्रदर्शन के बावजूद उन्हें टीम में शामिल नहीं किए जाने की बात उठ रही है। उन्होंने समाचार एजेंसी एएनआई से कहा कि अच्छे प्रदर्शन के बाद भी चयन नहीं होना भेदभाव को साफ तौर पर दिखाता है। कांग्रेस सांसद के बयान पर बीजेपी ने पलटवार किया है। बीजेपी ने आरोप लगाया कि कांग्रेस क्रिकेट टीम के चयन को भी सांप्रदायिक मुद्दा बनाने की कोशिश कर रही है। बीजेपी प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा, ''कांग्रेस पर शर्म आती है!

अब कांग्रेस क्रिकेट टीम के चयन में भी वोट बैंक की राजनीति कर रही है। कांग्रेस कह रही है कि सिराज को मुस्लिम होने की वजह से बाहर रखा गया।''

भंडारी ने यह भी कहा कि ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा को भी टीम से बाहर रखा गया है। उन्होंने कहा, ''हर क्रिकेटर भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली जर्सी पहनता है। वोट बैंक और सांप्रदायिक राजनीति के लिए भारतीय क्रिकेट टीम को बांटना बंद कीजिए।''

पाकिस्तान, बांग्लादेश और अल्जीरिया बने सेकंड हैंड मोबाइल के बड़े बाजार

बीजिंग। चीन अब अपने इलेक्ट्रॉनिक कबाड़ को पाकिस्तान, बांग्लादेश और अल्जीरिया देशों में खपा रहा है। चाइना एसोसिएशन ऑफ सर्कुलर इकोनॉमी के मुताबिक चीन हर साल 40 करोड़ से ज्यादा पुराने फोन कबाड़ में निकालता है। इन टूटी स्क्रीन वाले मोबाइल के लिए करांची से अल्जीरिया तक एक बड़ा बाजार बन चुका है। शेन्जेन के हुआकियांगबेई मार्केट से इन देशों के व्यापारी दर्जनों खराब फोन एक साथ खरीदते हैं। यहां 150 से 300 डॉलर में टूटे आईफोन मिलते हैं, जिन्हें कारोबारी अपने देश ले जाकर रिपेयर करते हैं और मुनाफे पर बेचते हैं। चिप की कमी और महंगे नए फोन के बीच, 2026 की पहली छमाही में सेकंड हैंड मोबाइल मार्केट 13 फीसदी बढ़कर 15 करोड़ यूनिट तक पहुंच गया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एक पाकिस्तानी व्यापारी ने बताया कि पाकिस्तान में लोग फोन टूटने पर नया लेने के बजाय उसे रिपेयर कराना पसंद करते हैं और एक मोबाइल को 4 या 5 साल तक चलाते हैं।

स्वामी/ प्रकाशक / मुद्रक
प्रमोद कुमार ने जय माँ गंगा प्रिंटर्स, हरिद्वार से मुद्रित कराकर कार्तिकेय कॉलोनी, फेस-3, दर्पण स्कूल वाली गली, निकट हनुमान मंदिर, कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी जनपद-नैनीताल (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।
सम्पादक
प्रमोद कुमार
मो.7830201066
सह-सम्पादक
दया जोशी
मो.9412135616